राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

क्रांति समय

कार्यालय ऑफिस

क्रांति समय दैनिक समाचार में
प्रेसनोट,नोटिस,वेपार संबंधित संपर्क करें
पता:- एस.टी.पी.आई-सुरत-395023
संपर्क नं.-9879141480
ईमेल:-info.krantisamay@gmail.com

सुरत गुजरात से प्रकाशित, मुंबई,उत्तरप्रदेश,बिहार,राजस्थान,मध्यप्रदेश,उत्तरांचल,उत्तराखंड,दिल्ली,हरियाणा में प्रकाशित

सुरत–गुजरात,संस्करण सोमवार 15 जुलाई 2024 वर्ष–7,अंक–172 पृष्ठ–08 मूल्य–01रूपये

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

पहला कॉलम

प्रधानमंत्री मोदी ने खारची पूजा पर त्रिपुरावासियों को बधाई दी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मुख्य रूप से त्रिपुरा में होने वाली खारची पूजा के अवसर पर रविवार को राज्य के निवासियों को बधाई दी। उन्होंने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, ''खारची पूजा के अवसर पर सभी को, विशेष रूप से त्रिपुरा के लोगों को शुभकामनाएं! चतुर्दश देवता का दिव्य आशीर्वाद हमेशा हम सभी पर बना रहे, सभी को खुशी और अच्छा स्वास्थ्य मिले। यह सभी के जीवन में समृद्धि और सद्भाव लाए।' खारची पूजा त्रिपुरा में मनाए जाने वाले प्रसिद्ध त्योहारों में से एक है। यह त्योहार सात दिनों तक मुख्य रूप से अगरतला में एक मंदिर परिसर में मनाया जाता है, जिसमें चौदह देवताओं की मूर्तियां हैं। पहले स्थानीय आदिवासी समुदाय के लोग यह त्योहार मनाया करते थे लेकिन अब यह पूजा समस्त त्रिपुरावासी करने लगे हैं।

लोकसभा में कांग्रेस के डिप्टी लीडर होंगे गौरव गोगोई

- केरल से सांसद के सुरेश बनाए गए मुख्य सचेतक

नई दिल्ली । कांग्रेस लीडर गौरव गोगोई को लोकसभा में पार्टी का डिप्टी लीडर बनाने का फैसला किया गया है। इस फैसले के बारे में एक पत्र अध्यक्ष ओम बिरला को भेज दिया गया है। एआईसीसी के संगठन महासचिव के सी वेणुगोपाल ने सोशल मीडिया पोस्ट में कहा कि कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष सोनिया गांधी ने लोकसभा अध्यक्ष बिरला को पत्र लिखकर लोकसभा में कांग्रेस पार्टी के लिए डिप्टी लीडर, मुख्य सचेतक और दो सचेतकों की नियुक्ति के बारे में जानकारी दी है। उन्होंने बताया कि गौरव गोगोई निचले सदन में पार्टी के डिप्टी लीडर होंगे। वहीं, केरल से आठ बार के सांसद कोडिकुन्निल सुरेश पार्टी के मुख्य सचेतक होंगे। उन्होंने बताया कि विरुधुनगर के सांसद मणिकम टैगोर और किशनगंज के सांसद मोहम्मद जावेद लोकसभा में पार्टी के सचेतक होंगे। इससे पहले पार्टी ने राहुल गांधी को विपक्ष का नेता बनाया था, जिन्हें बाद में इस पद पर नियुक्त किया गया।केसी वेणुगोपाल ने कहा कि विपक्ष के नेता राहुल गांधी के मार्गदर्शन में कांग्रेस और इंडिया ब्लॉक की पार्टियां लोकसभा में जनता के मुद्दों को पूरी ऊर्जा के साथ उठाएंगी।

बीजेपी दिसंबर तक नए राष्ट्रीय अध्यक्ष की नियुक्ति करेगी

पद के लिए 1 अगस्त से शुरू होगी चुनाव प्रक्रिया

नई दिल्ली। बीजेपी इस साल दिसंबर तक अपने नए राष्ट्रीय अध्यक्ष की नियुक्ति करेगी। इस पद के लिए चुनाव प्रक्रिया 1 अगस्त से शुरू होगी। 1 नवंबर से 15 नवंबर तक मंडल (लोकल यूनिट) के अध्यक्षों के लिए चुनाव होगा। इसके बाद 16 नवंबर से 30 नवंबर तक जिला अध्यक्ष का चुनाव होगा। बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा का कार्यकाल इसी साल जनवरी में खत्म हो चुका है। लोकसभा चुनाव के लिए जून तक विस्तार दिया गया था। हालांकि, लोकसभा चुनाव के बाद मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल में उन्हें स्वास्थ्य मंत्री बनाया गया है। इसलिए, बीजेपी अब नए अध्यक्ष की तलाश में है।

उपचुनाव में मिली जीत से गदगद अखिलेश बोले बीजेपी को जनता नकारा रही

लखनऊ । देश के सात राज्यों की 13 विधानसभा सीट पर हुए उपचुनाव के नतीजों में 'इंडिया' गठबंधन के घटक दलों ने 10 सीट और बीजेपी ने दो सीट पर जीत दर्ज की, जबकि एक सीट पर निर्दलीय के खाते में गई। इस जीत पर समाजवादी पार्टी प्रमुख और पूर्व सीएम अखिलेश यादव ने प्रतिक्रिया देकर लिखा, उपचुनाव में 'इंडिया एलायंस' की शानदार जीत देश के नए नजरिये और नए जन जागरण की जीत है। युवाओं, महिलाओं, किसानों, मजदूरों, कारोबारियों और महंगाई व पेपर लीक से त्रस्त परिवारवालों ने भाजपा को बुरी तरह नकारा है। एक बार फिर से समझदार मतदाताओं को बधाई। इस उपचुनाव में कांग्रेस ने चार सीटें जीती। कांग्रेस ने दो सीट भाजपा शासित उत्तराखंड में और दो हिमाचल प्रदेश में हासिल की। पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस ने सभी चार सीट जीतीं, जबकि आम आदमी पार्टी (आप) ने पंजाब में जालंधर पश्चिम सीट जीती और द्रविड़ मुनेत्र कषगम (द्रमुक) ने की विक्रवांडी विधानसभा सीट पर जीत हासिल की। हिमाचल की हमीरपुर सीट पर भाजपा ने जीत हासिल की, जबकि रूपौली सीट पर निर्दलीय उम्मीदवार शंकर सिंह ने जीत दर्ज की। इन सीट के लिए 10 जुलाई को उपचुनाव हुआ था।

वायु सेना के एयर शो में सुखोई और राफेल की जोड़ी ने दिखाए आसमानी करतब

सहारनपुर के सरसावा वायु स्टेशन में मनाई गई कारगिल विजय दिवस रजत जयंती

चॉपर से रस्सी के सहारे हवा में उड़े वायु योद्धाओं को देख दर्शकों का जोश हुआ हाई

नई दिल्ली।

भारतीय वायु सेना ने कारगिल युद्ध में विजय के 25 वर्ष पूरे होने पर सहारनपुर के सरसावा स्टेशन में %कारगिल विजय दिवस रजत जयंती% समारोह शुरू किया है, जो 26 जुलाई तक चलेगा। सरसावा एयरफोर्स स्टेशन पर वायु सैनिक एक चॉपर से रस्सी के सहारे लटक कर हवा में उड़े, जिसे देखने के बाद दर्शकों का जोश हाई हो गया। एयर शो में फाइटर जेट सुखोई, राफेल, जगुआर, एमआई-17 वी5 हेलीकॉप्टर, एएन-32 और डोर्नियर विमानों ने हैरतअंगेज करतब दिखाए। एक तरफ वायु सेना के हेलीकॉप्टरों ने साथ उड़ान भरी तो दूसरी तरफ फाइटर जेट आसमान को चीरते हुए ऊपर निकल गए। भारतीय वायु सेना के पास अपने वीर वायु योद्धाओं के साहस और बलिदान की एक गौरवशाली विरासत है, जिन्होंने वर्ष 1999 के कारगिल युद्ध में अदम्य साहस से लड़ाई लड़ी थी। पाकिस्तान पर भारत की यह तीसरी जीत वास्तव में सैन्य विमानन के इतिहास में एक मील का पत्थर था। कारगिल युद्ध (ऑपरेशन सफेद सागर) में भारतीय वायु सेना ने 16 हजार फीट से अधिक की खड़ी ढलान और चक्करदार ऊंचाइयों की चुनौतियों का सामना करने में अपनी सैन्य क्षमता का प्रमाण दिया है। इस युद्ध के दौरान दुश्मन को निशाना बनाने में अद्वितीय परिचालन बाधाएं थीं। इसके बावजूद दुनिया के सबसे ऊंचे युद्धक्षेत्र में लड़े गए इस युद्ध को जीतने के लिए ऑन-द-जॉब-ट्रेनिंग में भारतीय वायु सेना का स्थान श्रेष्ठ रहा। भारतीय वायु सेना ने कुल मिलाकर लगभग 5000 स्ट्राइक मिशन, 350 टोही, ईएलआईएनटी मिशन और लगभग 800 एस्कॉर्ट उड़ानें भरीं। भारतीय वायु सेना ने घायलों को निकालने और हवाई परिवहन कार्यों के लिए 2000 से अधिक हेलीकॉप्टर उड़ानें भी भरीं। कारगिल विजय दिवस पर देश के लिए सर्वोच्च बलिदान देने वाले शहीदों को सम्मानित किया जाता है। वायु सेना स्टेशन सरसावा की 152 हेलीकॉप्टर यूनिट, 'द माइटी आर्मर' ने ऑपरेशन सफेद सागर के दौरान महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इस दौरान बलिदान देने वाले चार वायु योद्धाओं का नाम हमेशा के लिए भारतीय वायु सेना के इतिहास में सुनहरे अक्षरों में लिखा जायेगा। दरअसल, युद्ध के दौरान 28 मई, 99 को 152 एचयू के स्क्वाड्रन लीडर आर पुंडीर, फ्लाइट लेफ्टिनेंट एस मुहिलान, सार्जेंट पीवीएनआर प्रसाद और सार्जेंट आरके साहू को टोलोलिंग में दुश्मन के ठिकानों पर लाइव स्ट्राइक के लिए 'नुबरा' फॉर्मेशन के रूप में उड़ान भरने की जिम्मेदारी दी गई थी। इस हवाई हमले को सफलतापूर्वक अंजाम देने के बाद उनके हेलीकॉप्टर को दुश्मन की स्टिंगर मिसाइल ने मार गिराया, जिसमें चार वीर सैनिकों ने प्राणों का बलिदान दिया। इस असाधारण साहस कार्य के लिए उन्हें मरणोपरांत वायु सेना पदक (वीरता) से सम्मानित किया गया। वायु सेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल वीआर चौधरी ने 13 जुलाई को वरिष्ठ गणमान्य अधिकारियों, बहादुरों के परिवारों, दिग्गजों और सेवारत भारतीय वायु सेना अधिकारियों के साथ राष्ट्र की सेवा में अपने प्राणों का बलिदान देने वाले सभी वायु सैनिकों को सरसावा स्टेशन के युद्ध स्मारक पर पुष्पांजलि अर्पित की। इस कार्यक्रम के दौरान वायु सेना प्रमुख ने उनके परिजनों को सम्मानित किया और उनसे बातचीत की। इस मौके पर शानदार एयर शो भी हुआ, जिसमें आकाश गंगा टीम और जगुआर, सुखोई-30 एमकेआई और राफेल लड़ाकू विमानों ने हवाई प्रदर्शन किये।

46 साल बाद.....

खुला जगन्नाथ मंदिर का रत्न भंडार

मेडिकल और सांप पकड़ने वाली टीम मौजूद

भुवनेश्वर । ओडिशा की नई भाजपा सरकार के आदेश पर जगन्नाथ मंदिर के खजाने यानी रत्न भंडार को 46 साल बाद रविवार को फिर खोला गया। ओडिशा सीएमओ की ओर से कहा गया है कि पुरी में 12वीं सदी के जगन्नाथ मंदिर का प्रतिष्ठित खजाना रत्न भंडार 46 साल बाद खोल दिया गया है। खजाने में मौजूद जेवरात और अन्य कीमती सामानों की सूची तैयार होगी। कानून मंत्री पृथ्वीराज हरिचंदन ने कहा कि दुनियाभर में रह रहे भगवान जगन्नाथ के करोड़ों भक्तों को काफी समय से इस दिन का इंतजार था। कानून मंत्री ने बताया कि आभूषणों की क्वालिटी की जांच होगी और कीमती सामानों का वजन किया जाएगा। इस दौरान मेडिकल टीम और सांप पकड़ने वाले मौजूद रहने वाले है। इस खजाने के कीमती सामानों की सूची की निगरानी के लिए राज्य सरकार ने समिति बनाई है। इस समिति के अध्यक्ष न्यायमूर्ति बिश्वनाथ रथ ने कहा कि जगन्नाथ मंदिर का रत्न भंडार खोला गया। ओडिशा हाईकोर्ट के पूर्व न्यायाधीश ने कहा कि जिस स्थान पर कीमती सामान अस्थायी रूप से रखा जाएगा, वह भी तय है। मंदिर परिसर में मेटल डिटेक्टर के साथ पुलिस की गाड़ियां और सांप पकड़ने वाली टीम मौजूद रही। मंदिर के रत्न भंडार के खजाने के लिए बड़े ट्रंक बॉक्स लाए गए। इस मौके पर एसपी पिनाक मिश्रा पुलिस बल के साथ मौजूद रहे। पुजारी माधव पूजा पंडा सामंत भी रहे। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) के अधीक्षक डीबी गडनायक ने कहा कि इंजीनियर मरम्मत कार्य के लिए रत्न भंडार का निरीक्षण करने वाले है। ओडिशा आपदा त्वरित कार्रवाई बल (ओडीआरएएफ) के कर्मियों ने रत्न भंडार के अंदर लाइटें लगाईं। आशंका है कि खजाने के अंदर सांप हैं। स्नेक हेल्पलाइन के सदस्य शुभेंदु मलिक ने कहा कि हम राज्य सरकार के निर्देश पर आए हैं।

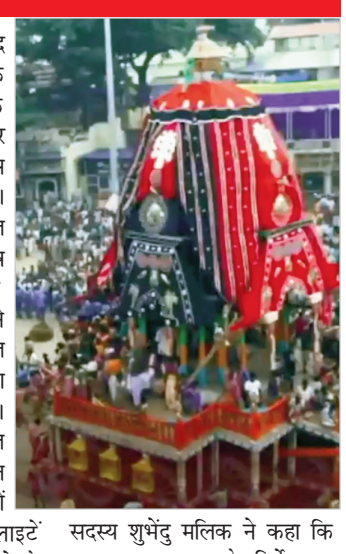

राजस्थान के नगरीय विकास मंत्री बोले: 2-3 से ज्यादा बच्चे तो नहीं मिलेंगी सरकारी सुविधाएं

पाली।

राजस्थान के नगरीय विकास और स्वायत्त शासन विभाग मंत्री झाबर सिंह खर्रा ने कहा है कि जिन लोगों के दो-तीन से ज्यादा बच्चे हैं, उन्हें सरकारी योजनाओं का फायदा नहीं दिया जाएगा। इसके लिए सरकार काम कर रही है और जल्दी ही इसे लेकर कानून लेकर आएगी। मंत्री ने यह बयान रविवार पाली दौरे के दौरान जिला परिषद सभागार में पत्रकारों को संबोधित करते हुए दिया। मंत्री ने कहा कि जल्द ही सरकार ऐसा कानून लाएगी कि अधिक बच्चे पैदा करने वाले लोगों को सरकारी योजनाओं का फायदा नहीं मिले। यह कटु सत्य है कि जनसंख्या बढ़ेगी तो संसाधन घटेंगे। ऐसे में समस्या होगी। इसलिए भारत सरकार के स्तर पर कानून लाने का प्रयास चल रहा है।

एनआरए की निष्क्रियता पर सरकार का मौन क्यों नहीं टूटता : खडगे

नई दिल्ली।

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडगे ने राष्ट्रीय भर्ती एजेंसी(एनआरए) को लेकर मोदी सरकार को कटघरे में खड़ा करते हुए आज कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी चार साल पहले जिस एजेंसी को देश के करोड़ों युवाओं के लिए वरदान बता रहे थे,वह आज किस वजह से निष्क्रिय हुई है इस बारे में सरकार को स्पष्टीकरण देना चाहिए। खडगे ने कहा नरेंद्र मोदी जी, कल आप मुंबई में नौकरियाँ देने पर झूठ का मायाजाल बुन रहे थे। मैं आपको पुनः याद दिलाना चाहता हूँ कि (एनआरए) राष्ट्रीय भर्ती एजेंसी की घोषणा करते हुए आपने क्या कहा था। अगस्त 2020 में आपने कहा था - एनआरए करोड़ों युवाओं के लिए वरदान साबित होगा। सामान्य पात्रता परीक्षा के माध्यम से,यह कई परीक्षाओं को समाप्त कर देगा और कीमती समय के साथ-साथ संसाधनों की भी बचत करेगा। इससे पारदर्शिता को भी बड़ा बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने इसको लेकर मोदी से सवाल करते हुए कहा ÷हमारे तीन सवाल हैं- एनआरए ने पिछले चार वर्षों से एक भी परीक्षा क्यों नहीं कराई। क्यों एनआरए को 1,517.57 करोड़ रुपए का फंड मुहैया कराने के बावजूद चार वर्षों में अब तक केवल 58 करोड़ रुपए ही ख़र्चा किया गया है। एनआरए सरकारी नौकरियों की भर्ती के लिए संस्था बनी थी। क्या जानबूझकर इसको निष्क्रिय रखा गया ताकि एससी, एसटी, ओबीसी, ईडब्ल्यूएस युवाओं से उनके आरक्षण का हक छीना जा सके। एनटीए से धाँधली, पेपर लीक तथा घोटाला कराया गया और एनआरए से परीक्षा ही नहीं करवाई गई। शिक्षा प्रणाली को तहस-नहस करने का और युवाओं के भविष्य को तंग-तबाह करने का बीड़ा भाजपा-आरएसएस ने उठाया है। उन्होंने कहा की उनकी तरफ से एनआरए का मुद्दा पहले भी उठाया गया था लेकिन मोदी सरकार इस मौनव्रत धारण कर के बैठी हुई है।

ईडी हुई और मजबूत, अपने विभिन्न कार्यालयों में 29 अधिकारियों को किया नियुक्त

नई दिल्ली।

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने देश भर में स्थित अपने कार्यालयों में विभिन्न पदों पर 24 से अधिक नवनियुक्त और हाल ही में पदोन्नत हुए अधिकारियों को तैनात किया है। प्रवर्तन निदेशालय ने पिछले सप्ताह सहायक निदेशक, उप-निदेशक और संयुक्त निदेशक के पदों पर कुल 29 अधिकारियों को नियुक्त किया था। इसमें ईडी कैडर के 9 अधिकारी शामिल हैं, जिन्हें हाल ही में केंद्रीय वित्त मंत्रालय द्वारा पदोन्नत किया गया था। जांच एजेंसी में ऐसा पहली बार हुआ है जब इतने सारे अधिकारियों को संयुक्त निदेशक (जेडी) पद पर पदोन्नत किया गया है। एक न्यूज एजेंसे को मिले आदेश की एक प्रति के मुताबिक, कैडर के अधिकारियों को भुवनेश्वर, रायपुर, भोपाल, चेन्नई, गुवाहाटी स्थित ईडी के क्षेत्रीय कार्यालयों और दिल्ली स्थित मुख्यालय में संयुक्त निदेशक के पद पर तैनात किया गया है। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) में संयुक्त निदेशक एक महत्वपूर्ण पद है, जो धनशोधन से जुड़े मामले और विदेशी मुद्रा उल्लंघन से संबंधित जांच की निगरानी करते हैं। इन पदों पर आमतौर पर भारतीय राजस्व सेवा (आईआरएस) और भारतीय पुलिस सेवा (आईपीएस) के अधिकारी नियुक्त किए जाते हैं, जो प्रतिनियुक्ति पर एजेंसी में शामिल होते हैं। आयकर और सीमा शुल्क विभाग से हाल ही में प्रतिनियुक्ति पर ईडी में शामिल हुए कुल 18 आईआरएस अधिकारियों को भी पिछले सप्ताह जारी अलग-अलग नियुक्ति आदेशों के तहत सहायक निदेशक और उप निदेशक के पद पर तैनात किया गया है। केंद्रीय वित्त मंत्रालय के अधीन काम करने वाली ईडी तीन कानूनों- धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए), विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम (फेमा) और भगोड़ा आर्थिक अपराधी अधिनियम (एफईओए) के तहत वित्तीय लेनदेन से संबंधित अपराधों की जांच करती है।

कारगिल युद्ध : ऑपरेशन सफेद सागर के तहत दुनिया के सबसे ऊंचे युद्धक्षेत्र में हासिल की थी विजय

नई दिल्ली।

भारतीय वायुसेना के पास अपने वीर वायु योद्धाओं के साहस और बलिदान की एक गौरवशाली विरासत है। एक ऐसी ही गौरवशाली विरासत वर्ष 1999 का कारगिल युद्ध है, जो अदम्य साहस से लड़ा गया था। कारगिल युद्ध के दौरान भारतीय वायुसेना का 'ऑपरेशन सफेद सागर' काफी महत्वपूर्ण रहा। ऑपरेशन सफेद सागर, 16,000 फीट से अधिक की खड़ी ढलान और चक्करदार ऊंचाइयों की चुनौतियों का सामना करने की भारतीय वायुसेना की सैन्य क्षमता का प्रमाण है। ये खड़ी ढलान और चक्करदार ऊंचाइयां युद्ध में दुश्मन को निशाना बनाने में अद्वितीय परिचालन बाधाएं हैं। दुनिया के सबसे ऊंचे युद्धक्षेत्र में लड़े गए इस युद्ध को जीतने के लिए वायु शक्ति के अपने उपयोग में तेजी से किए गए तकनीकी संशोधनों और ऑन-द-जॉब-ट्रेनिंग ने भारतीय वायुसेना का स्थान श्रेष्ठ रहा। रक्षा मंत्रालय के मुताबिक कारगिल युद्ध के दौरान कुल मिलाकर, भारतीय वायुसेना ने लगभग 5,000 स्ट्राइक मिशन, 350 टोही/ईएलआईएनटी मिशन और लगभग 800 एस्कॉर्ट उड़ानें भरीं। भारतीय वायुसेना ने घायलों को निकालने और हवाई परिवहन कार्यों के लिए 2,000 से अधिक हेलीकॉप्टर उड़ानें भी भरीं। 152 हेलीकॉप्टर यूनिट, 'द माइटी आर्मर' ने कारगिल युद्ध में ऑपरेशन सफेद सागर के दौरान महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। 28 मई 1999 को 152 एचयू के स्क्वाड्रन लीडर आर पुंडीर, फ्लाइट लेफ्टिनेंट एस मुहिलान, सार्जेंट पीवीएनआर प्रसाद और सार्जेंट आरके साहू को टोलोलिंग में दुश्मन के ठिकानों पर लाइव स्ट्राइक के लिए 'नुबरा' फॉर्मेशन के रूप में उड़ान भरने की जिम्मेदारी दी गई थी।

इस हवाई हमले को सफलतापूर्वक करने के बाद, उनके हेलीकॉप्टर को दुश्मन की स्टिंगर मिसाइल ने टक्कर मार दी, जिसमें चार वीर सैनिकों ने प्राणों का बलिदान दिया। असाधारण साहस के इस कार्य के लिए, उन्हें मरणोपरांत वायु सेना पदक (वीरता) से सम्मानित किया गया। उनके सर्वोच्च बलिदान ने सुनिश्चित किया कि उनका नाम हमेशा के लिए भारतीय वायुसेना के इतिहास में सुनहरे अक्षरों में लिखा जाएगा।

कारगिल युद्ध में विजय के 25 वर्ष पूरे होने के अवसर पर, भारतीय वायुसेना 12 जुलाई से 26 जुलाई 2024 तक वायुसेना स्टेशन सरसावा में 'कारगिल विजय दिवस रजत जयंती' का आयोजन कर रही है। इसमें देश के लिए सर्वोच्च बलिदान देने वाले शहीदों को सम्मानित किया जाता है। वायुसेना स्टेशन सरसावा की 152 हेलीकॉप्टर यूनिट, 'द माइटी आर्मर' की ऑपरेशन सफेद सागर में महत्वपूर्ण भूमिका थी।

13 जुलाई को वायु सेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल वीआर. चौधरी ने वरिष्ठ गणमान्य अधिकारियों, बहादुरों के परिवारों, दिग्गजों और सेवारत भारतीय वायुसेना अधिकारियों के साथ स्टेशन युद्ध स्मारक पर राष्ट्र की सेवा में अपने प्राणों की बलिदान देने वाले सभी वायु सैनिकों को पुष्पांजलि अर्पित की।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

पोषणयुक्त आहार एवं कुपोषण मुक्त भारत के संकल्प के उजाले

ललित गर्ग

भारत सरकार एवं वैज्ञानिकों के प्रयास नि :संदेह सराहनीय हैं कि आर्थिक संकट में भी सस्ती वैक्सीन उपलब्ध कराने के सभी प्रयास जारी हैं। केंद्र सरकार के साथ-साथ राज्य सरकार भी स्वास्थ्य बजट में बढ़ोतरी कर अपने नागरिकों को सस्ता एवं स्वच्छ उपचार उपलब्ध करा सके तो कुपोषण, भूखमरी एवं बीमारियों से निजात मिल सकेगा। कुपोषण एवं भूखमरी से मुक्ति के लिये भी सरकारों को जागरूक होना होगा।

संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) द्वारा भारत सहित पूरे विश्व में भूख, कुपोषण एवं बाल स्वास्थ्य पर समय-समय पर चिंता व्यक्त की गई है। यह चिन्ताजनक स्थिति विश्व का कड़वा सच है लेकिन एक शर्मनाक सच भी है और इस शर्म से उबरना जरूरी है। कुपोषण और भुखमरी से जुड़ी वैश्विक रिपोर्टें न केवल चौंकाने बल्कि सरकारों की नाकामी को उजागर करने वाली ही होती हैं। इस विवशता को कब तक ढोते रहेंगे और कब तक दुनिया भर में कुपोषितों का आंकड़ा बढ़ता रहेगा, यह गंभीर एवं चिन्ताजनक स्थिति है। लेकिन ज्यादा चिंताजनक यह है कि तमाम कोशिशों और दावों के बावजूद कुपोषितों और भुखमरी का सामना करने वालों का आंकड़ा पिछली बार के मुकाबले हर बार बढ़ा हुआ ही निकलता है। इन स्थितियों के बीच भारत में इस गंभीर स्थिति पर नियंत्रण पाने की दिशा में सरकार ने उल्लेखनीय कदम उठाये हैं। भारत सरकार पोषणयुक्त आहार एवं कुपोषणमुक्त भारत के संकल्प को आकार देने में जुटी है, आजादी के बाद मोदी सरकार ने इस दिशा में उल्लेखनीय सफलता पाई है, जो समस्या से मुक्ति की दिशा में सरकार के संकल्प का उजाला है।

कुपोषण की समस्या को दूर करने के लिये सरकार विभिन्न योजनाओं का कार्यान्वयन कर रही है। हालाँकि उनके वित्तपोषण और कार्यान्वयन में अभी भी अंतराल मौजूद हैं। इस मुद्दे को समग्र रूप से संबोधित करने के लिये एक व्यापक दृष्टिकोण आवश्यक है। कुपोषण की स्थिति तब विकसित होती है जब शरीर विटामिन, खनिज और अन्य पोषक तत्त्वों से वंचित हो जाता है, भारत सरकार ने वर्ष 2022 तक 'कुपोषण मुक्त भारत' सुनिश्चित करने के लिये राष्ट्रीय पोषण मिशन अभियान शुरू किया था, जिसमें बड़ी सफलता मिली है। एनीमिया मुक्त भारत अभियान वर्ष 2018 में शुरू किया गया, मिशन का उद्देश्य एनीमिया की वार्षिक दर को एक से तीन प्रतिशत अंक तक कम करना है। मध्याह्न भोजन योजना का उद्देश्य स्कूली बच्चों के बीच पोषण स्तर में सुधार करना है, जिसका स्कूलों में नामांकन, प्रतिधारण और उपस्थिति पर प्रत्यक्ष एवं सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम 2013 का उद्देश्य अपनी संबद्ध योजनाओं और कार्यक्रमों के माध्यम से सबसे कमजोर लोगों के लिये खाद्य एवं पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करना है, जिससे भोजन तक पहुँच कानूनी अधिकार बन जाए। प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना के अन्तर्गत गर्भवती महिलाओं को डिलीवरी के लिये बेहतर सुविधाएँ प्राप्त करने हेतु 6,000 रुपए सीधे उनके बैंक

खातों में स्थानांतरित किये जाते हैं। समेकित बाल विकास सेवा वर्ष 1975 में शुरू किया गया था और इस योजना का उद्देश्य 6 वर्ष से कम उम्र के बच्चों तथा उनकी माताओं को भोजन, पूर्व स्कूली शिक्षा, प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल, टीकाकरण, स्वास्थ्य जाँच और अन्य सेवाएँ प्रदान करना है। इन सब योजनाओं का असर कुपोषण को नियंत्रित करने पर पड़ रहा है।

अंतरिम बजट 2024-25 में, केंद्रीय वित्त मंत्री ने इस बात पर प्रकाश डाला है कि अमृत काल के दौरान समावेशी विकास के लिए, बेहतर पोषण वितरण, प्रारंभिक बचपन की देखभाल और समग्र विकास में तेजी लाने के लिए एक ठोस प्रयास करने की आवश्यकता है। विजन इंडिया 2047 के प्रयासों को पूरा करने के लिए, फीडिंग इंडिया भूख को कम करने और कुपोषण मुक्त राष्ट्र बनाने के उद्देश्य से कार्यक्रमों को डिजाइन करने और लागू करने की दिशा में काम कर रहा है। एक बहुआयामी रणनीति के माध्यम से, फीडिंग इंडिया बड़े पैमाने पर व्यवस्थित हस्तक्षेप, कम आय वाले सरकारी और गैर-सरकारी स्कूलों को सीधे भोजन सहायता और युवाओं के नेतृत्व वाले स्वयंसेवी आंदोलन के माध्यम से कुपोषण के बारे में सामाजिक जागरूकता बढ़ाकर अपने मिशन को आगे बढ़ाता है। फीडिंग इंडिया एक ऐसे भारत के लिए प्रतिबद्ध है जो आर्थिक रूप से संपन्न हो, नागरिकों, विशेष रूप से युवाओं को आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करे और जो कुपोषण मुक्त हो। अपनी स्थापना के बाद से, फीडिंग इंडिया ने 30 से अधिक शहरों में 150 कार्यान्वयन भागीदारों के माध्यम से 150 मिलियन से अधिक भोजन उपलब्ध कराया है और 2030 तक वंचित समुदायों को अतिरिक्त 300 मिलियन पौष्टिक भोजन प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।÷

असल में भारत जैसे विशाल और विविधता वाले देश में हर इलाके की खास जरूरतों के हिसाब से अलग व्यवस्था की दरकार है, न कि सब जगह एक ही पैमाने पर बने कार्यक्रम को लागू करना। पिछले कई बरस से यही तरीका अपनाया जाता रहा है। देश से कुपोषण की समस्या जड़ से खत्म करने के लिए नए सिरे से हो रहे प्रयास तीन अहम बातों पर आधारित हैं- बर्ताव में बदलाव, संक्रमण रोकने का प्रबंधन और पीढ़ी दर पीढ़ी चलने वाले कुपोषण के चक्र को तोड़ना। भुखमरी पर स्टैंडिंग टुगेदर फॉर न्यूट्रीशन कंसोर्टियम ने आर्थिक और पोषण डाटा इकट्ठा किया, इस शोध का नेतृत्व करने वाले सासकिया ओसनदार्प अनुमान लगाते हैं कि जो महिलाएं अभी गर्भवती हैं वो ऐसे बच्चों को जन्म देंगी जो जन्म के पहले से ही कुपोषित हैं और ये बच्चे शुरू से ही कुपोषण के शिकार रहेंगे। एक पूरी पीढ़ी दांव पर है।

कुपोषण के कई रूप हैं, जैसे बच्चों का नाटा रह जाना, कम वजन, एनीमिया प्रमुख हैं। इनमें से कुछ में समय के साथ सुधार हुआ है। ओडिशा, छत्तीसगढ़ जैसे गरीब राज्यों में भी सुधार देखा गया। यह किसी विडंबना से कम नहीं है कि कुपोषण के साथ भारत अधिक वजन, मधुमेह और उच्च रक्तचाप जैसी नई चुनौतियों का भी सामना कर रहा है, जिसे पोषण संबंधी गैर-संचारी रोग भी कहा जाता है। हर पांच में से एक महिला और हर सात में से एक भारतीय पुरुष आज बढ़ते वजन से पीड़ित हैं। शहरी क्षेत्र में दिनोंदिन यह प्रवृत्ति तेजी से बढ़ रही है। बच्चों का शारीरिक व मानसिक विकास उसकी डाइट पर भी निर्भर करता है। विटामिन, मिनरल, कैल्सियम, प्रोटीन, फाइबर आदि भरपूर डाइट से बच्चे का विकास सही ढंग से होगा ही, वह तंदुरुस्त भी रहेगा। हकीकत ये है कि ज्यादातर माताएं संतुलित आहार व डाइट क्या है? जानती तक नहीं। विशेषज्ञों के अनुसार गर्भावस्था से लेकर किशोरावस्था की उम्र तक बच्चों की डाइट में परिवर्तन होता रहता है।

ग्रामीण क्षेत्रों व मलिन बस्तियों के बच्चों को उचित डाइट नहीं मिल पाती, नतीजतन वे कम वजन व लंबाई और बार-बार बीमारी से जूझते हैं। कई बार कुपोषण की चपेट में भी आ जाते हैं। बढ़ते बच्चों का डाइट चार्ट के अनुसार खानपान जरूरी है। शुरुआत भ्रूणावस्था से हो जाती है। इसके लिए गर्भवती को आयरन, कैल्शियम व फॉलिक एसिड लेना चाहिए। खजूर, गुड़, चना, दूध व दूध से बनी चीजें, चिकन-अंडा, मुरमुरे, अनार, सेब, चीकू, अमरूद, पनीर व दाल का सेवन करें। खूब पानी पीएं। इस उम्र में शिशु को चावल की खीर, दूध में साबूदाना, पिसे हुए पनीर को दलिया मिलाकर खिलाएं। खजूर भी अच्छा है, इसमें मैग्नीशियन, आयरन, फास्फोरस व अन्य पोषक तत्व होते हैं। उम्र बढ़ने के साथ रोटी व हरी सब्जियां भी शुरू कर दें। यह बढ़ती उम्र है, बच्चे को कैल्शियम की ज्यादा जरूरत होती है, इसलिए दूध ज्यादा दें। अंडा-पनीर भी कैल्शियम के अच्छे स्रोत हैं। हरी सब्जियां, मौसम के फल व अन्य भोजन खिलाएं। 12 से 13 साल तक बच्चे के भोजन में हर चीज शामिल कर लें।

भारत सरकार एवं वैज्ञानिकों के प्रयास निःसंदेह सराहनीय हैं कि आर्थिक संकट में भी सस्ती वैक्सीन उपलब्ध कराने के सभी प्रयास जारी हैं। केंद्र सरकार के साथ-साथ राज्य सरकार भी स्वास्थ्य बजट में बढ़ोतरी कर अपने नागरिकों को सस्ता एवं स्वच्छ उपचार उपलब्ध करा सके तो कुपोषण, भूखमरी एवं बीमारियों से निजात मिल सकेगा। कुपोषण एवं भूखमरी से मुक्ति के लिये भी सरकारों को जागरूक होना होगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पोषणयुक्त आहार पर बल दे रहे हैं। कुपोषणमुक्त भारत बनाने की मुहिम में उनके प्रयासों एवं योजनाओं ने उम्मीदें के नये पंख लगाये हैं। आहार की गुणवत्ता को किसी भी व्यक्ति के जीवन में भोजन के सभी स्रोतों के संदर्भ में देखना जरूरी है। चाहे वह सार्वजनिक वितरण प्रणाली के तहत दिया गया भोजन हो, मिड-डे मील के तहत उपलब्ध कराया जा रहा भोजन हो, आइसीडीएस या देश के बाजारों में उपलब्ध खाद्य पदार्थ हो, वर्तमान चुनौती उच्च अनाज और कम प्रोटीन वाले खाद्य पदार्थों की है।

संपादकीय

सुनवाई जरूरी

न्यूनतम समर्थन मूल्य यानी एमएसपी की कानूनी गारंटी और कृषि ऋण माफी सहित अन्य मांगों को लेकर किसान आंदोलन फिर शुरू किया जाएगा। संयुक्त किसान मोर्चा में शामिल अलग-अलग किसान संगठनों का कहना है कि वे प्रधानमंत्री, विपक्ष के नेता लोक सभा और राज्य सभा के सदस्यों को ज्ञापन सौंपेंगे। इस बार दिल्ली कूच करने की बजाय देशव्यापी विरोध की तैयारी कर रहे हैं। महाराष्ट्र, झारखंड, जम्मू-कश्मीर और हरियाणा को वे प्रमुखता देंगे। इन राज्यों में जल्द ही विधानसभा चुनाव होने हैं। फसल बीमा, किसानों को पेंशन बिजली के निजीकरण को बंद करने के साथ सिंधु और टिकरी सीमा पर शहीद किसानों का स्मारक बनाने की मांग भी कर रहे हैं।

समर्थन मूल्य को लेकर यह आंदोलन 2020 में शुरू हुआ था। यूं तो इसे बड़े किसानों का आंदोलन कहा जा रहा है लेकिन किसानों का एक वर्ग मोदी सरकार की कृषि नीतियों से संतुष्ट नहीं है। सरकार की तरफ से मिले आश्वासन और आम चुनाव के दौरान आंदोलन कुछ वक्त के लिए ठहर सा गया था। देश में छोटे किसानों की तादाद बहुत है। दूसरे वे लोग हैं, जो कृषि कार्यों के जरिए जीवन यापन करते हैं। उन सबको इन आंदोलनों या मांगों से ज्यादा फर्क नहीं पड़ता। हालांकि अभिव्यक्ति की आजादी का अधिकार हर देशवासी को है। वह सरकार के समक्ष अपनी कोई भी मांग रखने को आजाद है। मगर पिछले आंदोलन के दरम्यान प्रदर्शनकारियों के कारण कई स्थानों पर जन-जीवन अस्त-व्यस्त हो गया था। आगजनी और पथराव हुआ था। सुरक्षाबलों पर हथियार भी प्रयोग हुए। इसी दरम्यान पंजाब-हरियाणा हाई कोर्ट ने हरियाणा के शंभू बार्डर पर धरनारत किसानों को हटाने के आदेश दिए हैं। राज्य सरकार को भी बैरिकेड़ हटाने और चड़ीगढ़-दिल्ली राष्ट्रीय राजमार्ग खोलने का आदेश दिया है। पांच महीनों से अवरुद्ध इस मार्ग के खोलने से कारोबारियों और नियमित यात्रियों को होने वाली असुविधा से निजात मिल सकेगी। हम कृषि प्रधान देश हैं इसलिए उनकी जरूरतों और मांगों की अनदेखी नहीं की जा सकती। मगर उन्हें भी उग्र विरोध से बचना चाहिए। अड़ियल रुख दिखाने की बजाय सरकार को भी छोटे किसानों के हितों की रक्षा में कोई कोताही नहीं बरतनी चाहिए।

चिंतन-मनन

व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया

बदलाव का क्रम निरंतर चलता है। जैन दर्शन इस क्रम को पर्याय-परिवर्तन के रूप में स्वीकार करता है। पर्याय का अर्थ है अवस्था। प्रत्येक वस्तु की अवस्था प्रतिक्षण बदलती है। यह जगत की स्वाभाविक प्रक्रिया है।कुछ अवस्थाओं को प्रयत्नपूर्वक भी बदला जाता है।स्वभाव से हो या प्रयोग से, बदलाव की प्रक्रिया को बदलना संभव नहीं है।वस्तु बदल सकती है तो व्यक्ति भी बदल सकता है।इस आस्थासूत्र का आलंबन लेकर ही व्यक्ति व्यक्तित्व-निर्माण का लक्ष्य निर्धारित करता है।लक्ष्य निर्णीत होने के बाद उस दिशा में प्रस्थान करता है। आज का आदमी जेट युग की रफ्तार से चलता है। वह आकाश में सीढ़िया लगाने की बात सोचता है और समुद्र में सुरंग बनाने की कल्पना करता है।पर व्यक्ति-निर्माण का काम शॉर्टकट मेथड से पलक झपकते ही हो जाए, यह संभव नहीं है। व्यक्तित्व निर्माण की बात होती है तो प्रश्न उठता है कि किस प्रकार का व्यक्तित्व? इस प्रश्न का समाधान है आध्यात्मिक वैज्ञानिक व्यक्तित्व।व्यक्तित्व निर्माण के इस अनुष्ठान में जिन वर्गों को सहभागी होना है, उनमें एक वर्ग है- स्नातक।

एक विद्यार्थी स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर का अध्ययन करने में अपने जीवन के सत्रह-अठारह वर्ष लगा देता है। उस समय उसके अभिभावकों के मन में यह भाव नहीं पैदा होता कि उसके ये वर्ष व्यर्थ तो नहीं बीत रहे हैं।क्योंकि डिग्री के साथ जीविका का संबंध जोड़ा जाता है।जीविका जीवन की अनिवार्यता है।लेकिन जीविका से अधिक मूल्यवान जीवन है।जीविका जीवन का साध्य नहीं साधन है।जीवन का साध्य है- विकास की यात्रा में अग्रसर होना। बुद्धि व्यक्तित्व का महज एक घटक है।उसका दूसरा घटक है प्रज्ञा।प्रज्ञा के जागरण से बौद्धिक विकास के साथ भावनात्मक विकास का संतुलन रहता है।जब ये दोनों विकास समानांतर होते हैं, तब आध्यात्मिक वैज्ञानिक व्यक्तित्व का निर्माण हो सकता है। इस बात को स्वयं विद्यार्थी अनुभव करे या नहीं, अभिभावकों को ध्यान देने की अपेक्षा है।

ट्रंप पर हमला अर्थात बैलेट पर बुलेट का प्रहार

डॉ हिदायत अहमद खान

अमेरिका के पेंसिल्वेनिया में शनिवार शाम करीब 6:15 बजे पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप पर उस वक्त जानलेवा हमला हुआ जबकि वो चुनावी रैली को संबोधित कर रहे थे। इस हमले की जितनी भी निंदा की जाए वह कम ही होगी, क्योंकि लोकतंत्र की सबसे बड़ी खूबसूरती यही है कि बिना हिंसा और खून-खराबे के सरकारें बदल जाती हैं। बड़ी से बड़ी समस्या का समाधान बात-चीत से निकाल लिया जाता है। बावजूद इसके लोकतांत्रिक देशों में हिंसा बढ़ रही है, जो वाकई चिंता का विषय है। जहां तक पूर्व राष्ट्रपति ट्रंप पर हुए हमले की बात है तो जब वो चुनावी रैली को संबोधित कर रहे थे तभी फायरिंग हुई और उनके दाहिने कान का ऊपरी हिस्सा जख्मी हो गया। अधिक मात्रा में बहते खून को रोकने ट्रंप ने कान में हाथ लगाया और एक सफल नेता की तरह लोगों को आश्वस्त किया कि कुछ नहीं हुआ है। इसके फौरन बाद ही उन्हें अस्पताल ले जाया गया। प्राथमिक उपचार के बाद ट्रंप ने सोशल मीडिया पर बयान जारी कर अपनी कुशल-क्षेम समर्थकों और शुभचिंतकों को दी और विरोधियों को बतला दिया कि वो ऐसे हमलों से डरने वाले नहीं हैं। वो चुनाव मैदान में डटे हुए हैं और आगे भी बने रहेंगे। उन पर हमला करने वाला आरोपी युवक उसी वक्त मार गिराया गया। उसकी पहचान भी कर ली गई है। बहरहाल इस दुःखद घटना ने अमेरिका ही नहीं बल्कि दुनिया के उन तमाम लोकतांत्रिक देशों के लिए एक सवाल तो छोड़ ही दिया है कि जहां बैलेट से सरकारें बदली जा सकती हैं वहां बुलेट का क्या काम है? आखिर क्या वजह रही होगी कि एक नौजवान को देश के पूर्व राष्ट्रपति और मौजूदा चुनाव में राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार की यूं जान लेने की सूझ पड़ी थी? अमेरिका में इस तरह की यह पहली घटना नहीं है, बल्कि इससे पहले भी राष्ट्रपतियों, पूर्व राष्ट्रपतियों और उम्मीदवारों को निशाना बनाया गया और उनकी हत्या कर दी गई। अमेरिका के इतिहास पर सरसरी निगाह डालें तो मालूम चलता है कि यहां की राजनीति में भी हिंसा के स्याह पन्ने जुड़े हुए हैं। मीडिया रिपोर्ट्स को यदि सही माना जाए तो राष्ट्रपति पद पर रहते हुए चार नेताओं की हत्या कर दी जाना कोई मामूली बात नहीं है। इस पर अमेरिका के 35वें राष्ट्रपति जॉन एफ केनेडी की हत्या की गुत्थी तो आज तक सुलझाई नहीं जा सकी है, जो कि अपने आप में अविश्वसनीय घटना लगती है। इनसे पहले अमेरिका के 16वें राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन की 14 अप्रैल, 1865 को गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। इसके बाद अमेरिका के 20वें राष्ट्रपति जेम्स गारफील्ड की 2 जुलाई, 1881 को गोली मारकर हत्या की गई। इसी तरह से 25वें राष्ट्रपति विलियम मैककिनले को 6 सितंबर, 1901 को गोली मारी गई और उनकी मौत इसी कारण 14 सिंतबर 1901 को हुई। अमेरिका के 35वें राष्ट्रपति जॉन एफ कैनेडी को नवंबर 1963 में गोली मारी गई थी। इतिहास के पन्नों में दर्ज इस हत्या के कारणों का खुलासा आज तक नहीं हो सका, जिसे लेकर समय-समय पर दावे-प्रतिदावे भी किए जाते हैं। इसी तरह से राष्ट्रपति के अनेक उम्मीदवारों को वक्त-वक्त पर बंदूक की गोली का निशाना बनाया गया और उन्हें हलाक कर दिया गया। वैसे तो लोकतांत्रिक व्यवस्था में इस तरह हिंसा और खून-खराबे की रत्तीभर भी इजाजत नहीं है, लेकिन अफसोस कि देखने में यही आता रहा है कि जब-जब चुनाव आते हैं, किसी न किसी तरह से बुलेट के हिमायती सिर उठाना शुरु कर देते हैं। इसे राजनीतिक हिंसा का नाम दिया जाता है, जबकि इसके पीछे के कारणों की अनदेखी कर दी जाती है। देश और दुनियां के बदलते हालात और नई-नई चुनौतियों को एक कारण माना जाता है, लेकिन इससे आगे भी कुछ है, जिस पर अब विचार करने की आवश्यकता आन पड़ी है। विचार करना होगा कि जिनके हाथों में देश की दशा और दिशा तय करने की ताकत होती है, जब वो चुनाव मैदान में उतरते हैं तो उनकी भाषा क्या

संयमित होती है? क्या वो हथियार उठाने और एक-दूसरे को चुनौती देने जैसे बयानों से बचते हैं? क्या वो वर्ग और जाति में बांटकर लोगों को आपस में लड़ाने और अपनी राजनीतिक रोटियां सेंकने से गुरेज करते हैं? क्या जनता से किए गए चुनावी वादे भी कभी सौ फीसद पूरे किए जाते हैं? और सबसे अहम सवाल यह कि जिस मकसद के लिए लोकतंत्र को अपनाया गया क्या उसे पूरा करने के लिए भी कभी जी-जान से मेहनत की गई है? यदि इन तमाम सवालों के जवाब हां में मिलने लगें तो फिर देखिए बुलेट पर कैसे बैलेट प्रभावी सिद्ध होता है। चुनाव के दौरान आगे इस तरह के जानलेवा हमले न हों, इस पर जरुर विचार करने और सार्थक हल खोजने की आवश्यकता है।

भारतीय संस्कृति और मर्यादा का अंतस

प्रत्यक्ष पर्यावरण प्रकृति की संरचना है। भारत के प्राचीनकाल में भी प्राकृतिक पर्यावरण की उपस्थिति मनमोहक थी। प्रकृति को देखते, उसके विषय में सोचते और सुनते मनुष्य ने भी सृजन कर्म में जाने अनजाने भागीदारी की। आज का भारत हमारे पूर्वजों, अग्रजों के सचेत कर्मों का परिणाम है। मनुष्य द्वारा किए गए सुंदर सत्कर्म संस्कृति हैं। प्रकृति स्वाभाविक है। लेकिन संस्कृति मनुष्य की रचना है। संक्षेप में विश्व के प्रत्येक जीव की लोकमंगल कामना और उसके लिए किए गए कर्म संस्कृति है। संस्कृति किसी एक व्यक्ति या समूह के कर्मफल का परिणाम नहीं होती।

भारतीय संस्कृति के विकास में विज्ञान और दर्शन की महत्ता है। कोई अंधविश्वास नहीं। रूप, रस, गंध, शब्द और स्पर्श प्रत्यक्ष इंद्रिय बोध के हिस्से हैं। पूर्वजों की 'मंगल भवन अमंगल हारी÷ कर्मठ चेतना से संस्कृति का विकास हुआ। सारांशतः भारत के बुद्धि विवेक और ज्ञान प्रज्ञान का सर्वोत्तम संस्कृति है। राष्ट्र के सभी अंगभूत घटक एक स्वर, एक लय, एक प्रीति, एक छंद और एक रस समरस स्पंदित होकर अपनी संस्कृति गढ़ते हैं। संस्कृति भारत के लोगों के दर्शन, भाषा, धर्म, कला, आशा, संवेदना, अनुभूति, प्रीति, धीरज, साहस संयम और मर्यादा का अंतस है। भारतीय संस्कृति हजारों वर्ष की तपसाधना का सृजन है। मार्शल ने लिखा है, ÷अनेक प्रमाणों में भारत में एक अत्यंत विकसित संस्कृति की उपस्थिति का पता चलता है। इसके पीछे अवश्य ही भारत की धरती का लंबा इतिहास होना चाहिए।÷

ऋग्वेद दुनिया का प्राचीन शब्द प्रमाण है। प्राचीन समाज का विज्ञान है और तत्कालीन समाज की संस्कृति का दर्पण है। वैदिक साहित्य में सामाजिक संगठन के स्वर्ण सूत्र हैं। यहां दर्शनशास्त्र है। विज्ञान है। योग और भौतिक विज्ञान है। प्राचीन इतिहास में इस भूखंड की आस्था जैसा प्रश्नाकुल दर्शन अन्यत्र नहीं मिलता। यहां आस्था और वैज्ञानिक विवेक साथ-साथ चलते हैं। हिन्दू धर्म में एक साथ तर्क और प्रतिप्रश्न दिखाई पड़ते हैं। यहां धर्म का विकास हुआ है। यह इतिहास बड़ा मजेदार है। पहले प्रकृति का अध्ययन, विवेचन और विश्लेषण। फिर प्रकृति की शक्तियों का आदर। इन्हें देवता कहा गया। प्रकृति में नियमबद्धता देखी गई। वैदिक ऋषियों ने इस नियमबद्धता

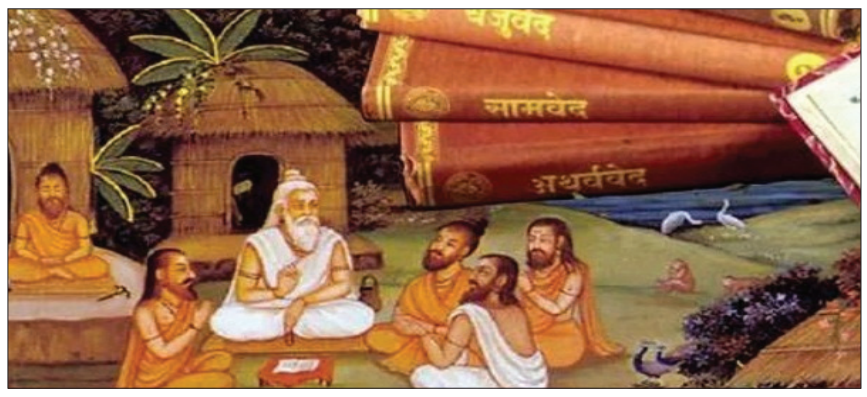

को मनुष्य के जीवन के लिए मार्गदर्शी व प्रेरक बताया। भारत में इसी सबसे विश्वप्रिय दृष्टिकोण का विकास हुआ। कौटिल्य ने दार्शनिक दृष्टिकोण अपनाकर दुनिया का पहला अर्थशास्त्र लिखा। इसी तरह अभिनय कला के सभी सरोकारों को समझते हुए भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र लिखा। चरक ने चरक संहिता और पाणिनि की अष्टाध्यायी और पतंजलि का योगसूत्र हिन्दुओं की ओर से सारी दुनिया के लिए पुरस्कार है।

ब्रिटिश सत्ता के दौरान यूरोपीय सभ्यता को श्रेष्ठ और भारतीय संस्कृति को छोटा और हेय बनाने का प्रयास किया गया है। पंडित नेहरू भी यूरोप की संस्कृति से प्रभावित थे। उन्होंने रामधारी सिंह 'दिनकर' की पुस्तक 'संस्कृति के चार अध्याय' की भूमिका में लिखा, ÷जब पश्चिम के लोग समुद्र पार से यहां आए, तब भारत के द्वार दरवाजे एक खास दिशा की ओर खुल गए। आधुनिक औद्योगिक सभ्यता बिना किसी शोरगुल के इस देश में प्रवेश कर गई। नए विचारों और नए भावों का हम पर हमला हुआ और भारतीय बुद्धिजीवी अंग्रेज बुद्धिजीवियों की तरह सोचने का अभ्यास करने लगे।÷ इस वक्तव्य के अनुसार भारतीय बुद्धिजीवियों द्वारा अंग्रेज बुद्धिजीवियों की तरह सोचना खास प्रतिष्ठा है।

अंग्रेज बुद्धिजीवियों के हित साम्राज्यवादी थे। उनके लक्ष्य ईसाईयत के प्रचार से जुड़े थे। सभ्यता इकहरी नहीं होती। प्रत्येक सभ्यता का एक दर्शन होता है। एक उद्देश्य होता है। स्वयं को प्रकट करने की अपनी शैली होती है। यह सारी बातें हिन्दू धर्म और परंपरा में पहले से मजबूत रही हैं। लेकिन नेहरू और उनसे प्रभावित बुद्धिजीवी यूरोप से वैचारिक आयात कर रहे थे। इसलिए इतिहास के अनेक प्रश्न महत्वपूर्ण हैं। हिन्दू इतिहास संकलन की शैली यूरोपीय इतिहास संकलन से भिन्न है। भारतीय बुद्धिजीवियों ने महाकाव्यों, पुराणों और वैदिक साहित्य के रूप में भारत की सभ्यता और संस्कृति की नीव मजबूत की थी। लेकिन प्राचीन भारत में यूरोपीय ढंग से इतिहास का संकलन नहीं हुआ।

अंग्रेजों ने अपनी सत्ता चलाने के लिए भारत के सम्यक अध्ययन को जरूरी पाया।

ब्रिटिश विद्वानों ने इतिहास की यूरोपीय शैली को अपनाते हुए भारतीय इतिहास का विवेचन किया। मार्क्सवादी विद्वान रामशरण शर्मा ने 'प्रारंभिक भारत का परिचय÷ (पृष्ठ 6) में लिखा है, ÷ब्रिटेन वालों ने जब यहां शासन कायम किया तब उन्हें औपनिवेशिक प्रशासन के हित में इसकी आवश्यकता प्रतीत हुई। जब 1765 में बंगाल और बिहार ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन में आए, तब शासकों को हिन्दुओं के उत्तराधिकार की न्याय व्यवस्था करने में कठिनाई का अनुभव हुआ। अतः 1776 में सबसे अधिक प्रामाणिक मानी जाने वाली मनुस्मृति का अंग्रेजी अनुवाद 'ए कोड ऑफ जेंटू लॉज' के नाम से कराया गया।÷ यह सब बातें मार्क्सवादी विद्वान की हैं। 1784 में कोलकाता में 'एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल' की स्थापना विलियम जोन्स ने की। उन्होंने 'अभिज्ञान शाकुंतलम' नाटक का अंग्रेजी में अनुवाद किया। इसी समय वर्ष 1785 में विलकंस ने भगवदगीता का अंग्रेजी में अनुवाद किया। ब्रिटिश सत्ताधीश भारत को ठीक से समझने में लगे थे। वस्तुतः भारत की सभी संस्थाओं को अंग्रेजीराज की मजबूती के लिए इस्तेमाल करने का काम उस समय के आधुनिक विद्वानों के द्वारा किया जा रहा था।

रामशरण शर्मा ने लिखा है, ÷उन्हें महसूस हो गया कि जिन विदेशी लोगों पर उन्हें शासन करना है, उनके रीति-रिवाज और सामाजिक व्यवस्था का गहन ज्ञान प्राप्त करना होगा। क्रिश्चियन मिशनों के धर्म प्रचारकों ने भी हिन्दू धर्म की दुर्बलताओं को जानना आवश्यक समझा ताकि वे धर्म परिवर्तन करा सके और इसके द्वारा ब्रिटिश साम्राज्यवादियों को मजबूत बना सकें। इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मैक्समूलर के संपादकतत्व में विशाल मात्रा में प्राचीन धर्म ग्रंथों का अनुवाद किया गया। ये अनुवाद 'सैकरेड बुक्स ऑफ द ईस्ट' सीरीज में 50 खंडों में प्रकाशित हुआ। भारतीय इतिहास और समाज के अध्ययन का इनका उद्देश्य ब्रिटिश सत्ता का समर्थन था। पाश्चात्य विद्वानों ने भारतीय इतिहास और समाज की संरचना के सम्बंध में कई भ्रामक नतीजे निकाले थे। उनके मत में प्राचीन भारत के लोगों को इतिहास का विशेषतया काल और क्रम का बोध नहीं था कि भारत के लोग स्वेच्छाकारी शासन के अभ्यस्त रहे। वे आध्यात्मिक और पारलौकिक समस्याओं में ही डूबे रहे।÷ विंसेंट स्मिथ (1843-1920) ने 'अर्ली हिस्ट्री ऑफ इंडिया' नाम का ग्रंथ लिखा। स्मिथ भी ईमानदार नहीं रहे।

ब्रिटिश विद्वानों के इतिहास ग्रंथ पक्षपातपूर्ण रहे हैं। उन्होंने इतिहास का विरुपण किया है। हम भारत के लोग जन्म से, अनुभव से, अध्ययन और परिश्रम से विश्व की प्रतिष्ठित संस्कृति के उपासक हैं। संप्रति विदेशी सभ्यता और संस्कृति को आधुनिकता बताकर तथ्य गलत तरीके से प्रस्तुत किया जा रहा है। हमारा वर्तमान हमारे भूत का विस्तार है और हमारे आज के श्रमतप भविष्य का भारत रच रहे हैं। आधुनिकता के नाम पर विदेशी संस्कृति का आह्वान और हिन्दू संस्कृति की उपेक्षा स्वीकार्य नहीं है। भारत की आधुनिकता भारत की परंपरा का ही विकास होनी चाहिए।

- हृदयनारायण दीक्षित

(लेखक, उत्तर प्रदेश विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष हैं।)

एफपीआई ने इस महीने अब तक शेयर बाजारों में 15,352 करोड़ डाले

एफपीआई ने मई में शेयरों से 25,586 करोड़ रुपये निकाले थे

नई दिल्ली । विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) ने 12 जुलाई तक घरेलू शेयर बाजारों में 15,352 करोड़ रुपये का निवेश किया है। सरकार की सुधारों को जारी रखने की प्रतिबद्धता और मजबूत घरेलू मांग की वजह से एफपीआई का भारतीय बाजार में प्रवाह बढ़ा है। बाजार के जानकारों ने कहा कि विदेशी निवेशकों के लिए आगामी आम बजट आर्थिक वृद्धि के लिए सरकार की योजनाओं को समझने का सबसे प्रमुख घटनाक्रम है। डिपॉजिटरी के आंकड़ों के मुताबिक विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों ने इस महीने 12 जुलाई तक शेयरों में 15,352 करोड़ रुपये डाले हैं। इससे पहले जून में उन्होंने शेयरों में 26,565 करोड़ रुपये का निवेश किया था। वहीं आम चुनाव को लेकर असमंजस के बीच एफपीआई ने मई में शेयरों से 25,586 करोड़ रुपये निकाले थे। मॉरीशस के साथ भारत की कर संधि में बदलाव और अमेरिकी बॉन्ड प्रतिफल में वृद्धि की चिंता के बीच अप्रैल में एफपीआई ने 8,700 करोड़ रुपये से अधिक की बिकवाली की थी। समीक्षाधीन अवधि में एफपीआई ने शेयरों के अलावा ऋण या बॉन्ड बाजार में 8,484 करोड़ रुपये का निवेश किया है। इससे इस साल अब तक बॉन्ड बाजार में उनका निवेश 77,109 करोड़ रुपये पर पहुंच गया है। घरेलू संस्थागत निवेशक (डीआईआई) 2024 में जहां हर महीने शेयर बाजार में लिवाल रहे हैं, वहीं एफपीआई के प्रवाह में उतार-चढ़ाव देखने को मिला है। एफपीआई ने जनवरी, अप्रैल और मई में कुल मिलाकर 60,000 करोड़ रुपये के शेयर बेचे हैं। वहीं फरवरी, मार्च और जून में उन्होंने 63,200 करोड़ रुपये की खरीदारी की है।

केंद्र ने झारखंड सरकार से 10 खनिज ब्लॉक नीलाम करने को कहा

नई दिल्ली । खान मंत्रालय ने झारखंड सरकार से एक सोने की खदान से हित 10 खनिज ब्लॉक की नीलामी करने को कहना है। साथ ही चेतावनी दी है कि यदि वह ऐसा नहीं कर सकता तो केंद्र इन खानों की नीलामी प्रक्रिया शुरू कर देगा। सूत्रों ने यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि ये ब्लॉक खोज के जी2 (सामान्य) और जी3 (प्रारंभिक) स्तर के हैं। 10 ब्लॉक में एक तांबे की खदान, एक चूना पत्थर की खदान और एक ग्रेफाइट खदान शामिल है। 2021 में खनन नियमों में संशोधन के अनुसार, यदि राज्य सरकार पारस्परिक रूप से सहमत अवधि के भीतर खदानों की नीलामी करने में विफल रहती है, तो केंद्र के पास खनिज ब्लॉक की नीलामी करने का अधिकार है। सूत्रों ने कहा कि जब खनिज ब्लॉकों की नीलामी की बात आती है, तो झारखंड सरकार अन्य राज्यों से पिछड़ रहा है। भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण द्वारा झारखंड सरकार को सौंपी गई 38 भूवैज्ञानिक रिपोर्टों में से अबतक केवल पांच का उपयोग नीलामी के लिए किया गया है। राज्य सरकार ने दिसंबर, 2021 तक 15 ब्लॉक को नीलामी के लिए अधिसूचित करने का आश्वासन दिया था। हालांकि, राज्य द्वारा इनमें से केवल चार ब्लॉक को नीलामी के लिए अधिसूचित किया गया है। शेष 11 खदानों में से एक पोटाश ब्लॉक महत्वपूर्ण है और केंद्र द्वारा इसकी नीलामी की जाएगी। शेष 10 ब्लॉक को अब भी राज्य द्वारा नीलामी के लिए अधिसूचित किया जाना बाकी है। चालू वित्त वर्ष में अब तक 12 खनिज ब्लॉक की सफलतापूर्वक नीलामी की जा चुकी है। नीलाम किये गये सभी ब्लॉक राजस्थान में हैं। ये ब्लॉक अंबुजा सीमेंट्स लिमिटेड और जेके सीमेंट लिमिटेड जैसी कंपनियों को मिले हैं।

आईएमएफ ने पाकिस्तान को 2 लाख करोड़ का लोन मंजूर किया

- आमलोगों और किसानों को चुकानी होगी बड़ी कीमत

इस्लामाबाद । कंगाली का सामना कर रहे पाकिस्तान के लिए राहत भरी खबर है। पाकिस्तान महीनों से अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के पास बेलआउट पैकेज के लिए लगातार हाथ फैला रहा था। कुछ सप्ताह पहले आईएमएफ की हाई-लेवल कमेटी ने पाकिस्तान का दौरा कर सरकार की ओर से उठाए गए कदमों की समीक्षा की थी। अब जाकर आईएमएफ ने पाकिस्तान के लिए 7 अरब अमेरिकी डॉलर (194570 पाकिस्तानी रुपया) के लोन पैकेज को अपनी मंजूरी दे दी। हालांकि, इसके लिए पाकिस्तान को बड़ी कीमत चुकानी होगी। आर्थिक और वित्तीय सुधारों के साथ ही टैक्स बेस को भी बढ़ाना होगा। सब्सिडी में भी रिफॉर्म करना होगा। आमलोगों के साथ ही खासकर किसानों को इसका खामियाजा भुगतना पड़ सकता है। दुनियाभर में आतंकवादियों के लिए पनाहगाह के तौर पर कुख्यात पाकिस्तान की आर्थिक हालत सालों से बेहद खराब है। एक रिपोर्ट के अनुसार पीएम शाहबाज शरीफ ने आईएमएफ से लोन सेक्योर करने के लिए वित्त मंत्री मुहम्मद औरंगजेब की तारीफ की है। साथ ही कहा कि हमें इसके लिए कुछ बलिदान करने होंगे। पीएम शाहबाज ने कहा, अब हमें अपनी बेल्ट टाइट करते हुए जनता के लिए काम करना होगा। हमें पहली और आखिरी बार राष्ट्र हित में काम करने की जरूरत है। यदि जरूरत पड़ी तो मैं पद भी छोड़ दूंगा, लेकिन किसी दबाव में नहीं आऊंगा। मैं इसे पूरी तरह से स्पष्ट कर देना चाहता हूं। आईएमएफ ने पाकिस्तान को तीन साल के लिए 7 अरब डॉलर की सहायता राशि लोन के तौर पर देने के लिए सहमत हुआ है। डील डन होने के बाद आईएमएफ के पाकिस्तान प्रमुख नाथन पोर्टर की ओर से भी बयान जारी किया गया है।

नई दिल्ली में 9 अगस्त को लांच होगी लेम्बोर्गिनी एसई

नई दिल्ली । लेम्बोर्गिनी यूआरयूएस एसई 9 अगस्त को नई दिल्ली में लांच की जाएगी। लेम्बोर्गिनी यूआरयूएस एसई में 4.0-लीटर, ट्विन-टर्बोचार्ज्ड वी8 इंजन दिया गया है, जिसे प्लग-इन हाइब्रिड सिस्टम के साथ जोड़ा गया है, जो 800एचपी अधिकतम पावर और 950एनएम मैक्स टॉर्क जेनरेट करता है। इसमें 25.9केडब्ल्यूएच लिथियम-आयन बैटरी पैक भी है। लेम्बोर्गिनी का कहना है कि इसे केवल इलेक्ट्रिक पावर का उपयोग करके 60 किमी तक चलाया जा सकता है। इसमें ऑल-व्हील-ड्राइव सिस्टम है। यह एसयूवी महज 3.4 सेकंड में 0 से 100 किमी प्रति घंटे की स्पीड पकड़ लेती है। इसकी टॉप स्पीड 312 किमी प्रति घंटा है।

डीमार्ट का मुनाफा 17.5 फीसदी बढ़ा, आय भी बढ़ी

नई दिल्ली । रिटेल चेन डीमार्ट संचालित करने वाली कंपनी एवेन्यू सुपरमार्ट्स की वित्त वर्ष 2024-25 की पहली तिमाही में मुनाफा बढ़कर 773.82 करोड़ रुपए रहा है। सालाना आधार पर इसमें 17.5 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। पिछले साल की समान तिमाही में कंपनी ने 658.75 करोड़ रुपए का मुनाफा दर्ज किया था। अप्रैल-जून 2024 तिमाही में कंपनी ने 14,069.14 करोड़ रुपए का कॉन्सोलिडेटेड रेवेन्यू दर्ज किया है। सालाना आधार पर इसमें 18.6 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। एक साल पहले कंपनी ने 11,865.40 करोड़ रुपए की कमाई की थी। कंपनी ने वित्त वर्ष 2025 के पहली तिमाही के नतीजे जारी किए हैं। एवेन्यू सुपरमार्ट्स के शेयर ने पिछले 5 दिन में 1.47 फीसदी, एक महीने में 6.30 फीसदी, 6 महीने में 28.30 फीसदी और एक साल में 29.53 फीसदी का रिटर्न दिया है। केवल इस साल यानी 1 जनवरी से अब तक की बात करें तो कंपनी ने 21.78 फीसदी का रिटर्न दिया है। कंपनी का मार्केट कैप 3.22 लाख करोड़ रुपए है। सुपरमार्केट चेन डीमार्ट के फाउंडर राधाकिशन दमानी हैं। उन्होंने डीमार्ट की शुरुआत 2002 में मुंबई के पवई इलाके से की थी। यहां उन्होंने डीमार्ट का पहला स्टोर खोला था। 1999 में दमानी ने नई मुंबई के नेरूल में अपना बाजार की एक फ्रेंचाइजी की शुरुआत की थी, पर उन्हें यह मॉडल जमा नहीं था। डीमार्ट सुपरमार्केट चेन को एवेन्यू सुपरमार्ट्स लिमिटेड संचालित करती है। 68 साल के राधाकिशन दमानी की कंपनी डिमार्ट ने 2017 में शेयर बाजार में डेब्यू किया था। डी-मार्ट 21 मार्च 2017 को शेयर बाजार में लिस्ट हुई थी, उस दिन कंपनी मार्केट कैप 39,988 करोड़ रुपए था। अब 3 लाख करोड़ रुपए के पार पहुंच गया है।

सेंसेक्स की शीर्ष 10 में से सात कंपनियों का मार्केट कैप 1.72 लाख करोड़ बढ़ा

मुंबई ।

पिछले सप्ताह सेंसेक्स की शीर्ष 10 कंपनियों में से सात के बाजार पूंजीकरण (मार्केट कैप) में सामूहिक रूप से 1,72,225.62 करोड़ रुपये की बढ़ोतरी हुई। सबसे अधिक लाभ में सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की कंपनी टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) रही। समीक्षाधीन सप्ताह में टीसीएस का बाजार पूंजीकरण 62,393.92 करोड़ रुपये बढ़कर 15,14,133.45 करोड़ रुपये पर पहुंच गया। देश की सबसे बड़ी आईटी सेवा कंपनी टीसीएस का जून तिमाही का शुद्ध लाभ 8.7 प्रतिशत बढ़कर 12,040 करोड़ रुपये रहा है। इसके बाद शुक्रवार को टीसीएस का शेयर लगभग सात प्रतिशत चढ़ गया। बीते सप्ताह आईटीसी का बाजार मूल्यांकन 31,858.83 करोड़ रुपये बढ़कर 5,73,258.78 करोड़ रुपये हो गया। इन्फोसिस की बाजार हैसियत 26,905.14 करोड़ रुपये बढ़कर 7,10,827.27 करोड़ रुपये पर पहुंच गई, जबकि भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी) का मूल्यांकन 22,422.12 करोड़ रुपये बढ़कर 6,64,947.01 करोड़ रुपये हो गया। हिंदुस्तान यूनिलीवर का बाजार मूल्यांकन 17,668.92 करोड़ रुपये बढ़कर 6,16,156.81 करोड़ रुपये पर और रिलायंस इंडस्ट्रीज का 9,066.19 करोड़ रुपये के उछाल के साथ 21,60,628.75 करोड़ पर पहुंच गया। भारती एयरटेल की बाजार हैसियत 1,910.5 करोड़ रुपये बढ़कर 8,15,705.36 करोड़ रुपये हो गई। इस रुख के विपरीत एचडीएफसी बैंक का मूल्यांकन 18,069.29 करोड़ रुपये घटकर 12,35,825.35 करोड़ रुपये रह गया। भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) का बाजार मूल्यांकन 356.99 करोड़ रुपये घटकर 7,67,204.26 करोड़ रुपये पर आ गया। आईसीआईसीआई बैंक का बाजार पूंजीकरण 210.5 करोड़ रुपये घटकर 8,67,668.16 करोड़ रुपये रह गया। सेंसेक्स की शीर्ष 10 कंपनियों में रिलायंस इंडस्ट्रीज पहले स्थान पर कायम रही। उसके बाद क्रमशः टीसीएस, एचडीएफसी बैंक, आईसीआईसीआई बैंक, भारती एयरटेल, भारतीय स्टेट बैंक, इन्फोसिस, एलआईसी, हिंदुस्तान यूनिलीवर और आईटीसी का स्थान रहा।

देश से वाहनों का निर्यात पहली तिमाही में 15.5 फीसदी बढ़ा

- समीक्षाधीन अवधि में 69,962 इकाइयों के निर्यात के साथ मारुति सुजुकी इंडिया सबसे आगे रही

नई दिल्ली ।

देश से वाहनों का निर्यात चालू वित्त वर्ष की जून में समाप्त पहली तिमाही में सालाना आधार पर 15.5 प्रतिशत बढ़ा है। तिपहिया को छोड़कर सभी अन्य वाहनों का निर्यात बढ़ा है। वाहन विनिर्माताओं के एक संगठन के आंकड़ों से यह जानकारी मिली है। आंकड़ों के अनुसार, चालू वित्त वर्ष की पहली अप्रैल-जून की तिमाही में कुल वाहन निर्यात 11,92,577 इकाई रहा, जो इससे पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही के 10,32,449 इकाई के आंकड़े से 15.5 प्रतिशत अधिक है।पहली तिमाही में यात्री वाहनों का निर्यात 19 प्रतिशत बढ़कर 1,80,483 इकाई रहा। पिछले साल समान तिमाही में यह आंकड़ा 1,52,156 इकाई था। समीक्षाधीन अवधि में 69,962 इकाइयों के निर्यात के साथ देश की प्रमुख वाहन कंपनी मारुति सुजुकी इंडिया सबसे आगे रही। इससे पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही में मारुति ने 62,857 वाहनों का निर्यात किया था।

अप्रैल-जून में हुंदै मोटर का निर्यात 42,600 इकाई रहा। पिछले साल की समान अवधि में कंपनी ने 35,100 इकाइयों का निर्यात किया था। तिमाही के दौरान देश से दोपहिया वाहनों का निर्यात 17 प्रतिशत बढ़कर 9,23,148 इकाई पर पहुंच गया, जो एक साल पहले की समान अवधि में 7,91,316 इकाई रहा था। इस दौरान वाणिज्यिक वाहनों का निर्यात सालाना आधार पर आठ प्रतिशत बढ़कर 15,741 इकाई हो गया। एक साल पहले समान अवधि में यह आंकड़ा 14,625 इकाई था। हालांकि, समीक्षाधीन तिमाही में तिपहिया वाहनों का निर्यात तीन प्रतिशत घटकर 71,281 इकाई रह गया। एक साल पहले समान तिमाही में 73,360 तिपहिया का निर्यात हुआ था।

संगठन के एक अधिकारी ने कहा कि यह उद्योग के लिए अच्छा संकेत है कि निर्यात का आंकड़ा बेहतर रहा है। उन्होंने कहा, मुझे लगता है कि यह एक बहुत अच्छा संकेत है कि निर्यात अपने निचले स्तर से उबर आया है, खासकर वाणिज्यिक वाहन खंड। इस साल पहली तिमाही से वृद्धि दिखनी शुरू हो गई है। पिछले साल तक ट्रक और बस के निर्यात में भारी गिरावट देखने को मिली थी। उन्होंने कहा कि पहली तिमाही दोपहिया और यात्री वाहनों के लिए भी अच्छी रही है। हम बहुत सकारात्मक हैं कि निर्यात में सुधार शुरू हो गया है।

विभिन्न विदेशी बाजारों में मौद्रिक संकट के कारण वित्त वर्ष 2023-24 में भारत से वाहन निर्यात में 5.5 प्रतिशत की गिरावट आई थी।

पिछले वित्त वर्ष में कुल वाहन निर्यात 45,00,492 इकाई रहा था, जबकि इससे पिछले वित्त वर्ष 2022-23 में यह आंकड़ा 47,61,299 इकाई रहा था।

पेटीएम से बाहर निकला सॉफ्टबैंक, बेची पूरी हिस्सेदारी

- 15 करोड़ डॉलर का झेलना पड़ा नुकसान

नई दिल्ली । डिजिटल पेमेंट और फाइनेंशियल सर्विसेज कंपनी पेटीएम को बड़ा झटका लगा है। अब इस कंपनी में पैसा लगाने वाले जापान की इनवेस्टमेंट बैंक सॉफ्टबैंक पीछे हट गया है। सॉफ्टबैंक ने पेटीएम की पैरेंट कंपनी वन97 कम्युनिकेशन में अपनी पूरी हिस्सेदारी बेच दी है। सूत्रों के मुताबिक सॉफ्टबैंक की इन्वेस्टमेंट आर्म सॉफ्टबैंक विजन फंड अप्रैल-जून तिमाही में करीब 15 करोड़ डॉलर का घाटा उठाकर पेटीएम से बाहर हो गई। सॉफ्टबैंक ने 2017 में पेटीएम ब्रांड की मूल कंपनी वन97 कम्युनिकेशंस में किस्तों में लगभग 1.5 अरब डॉलर का निवेश किया था। सूत्रों के मुताबिक सॉफ्टबैंक ने 10-12 फीसदी के नुकसान के साथ पेटीएम से अपना कारोबार समेट लिया है। कुल नुकसान करीब 15 करोड़ डॉलर है। साल 2021 में कंपनी के आईपीओ से पहले सॉफ्टबैंक के पास पेटीएम में लगभग 18.5 फीसदी हिस्सेदारी थी। इसमें एसवीएफ इंडिया होल्डिंग्स (केमैन) लिमिटेड के माध्यम से 17.3 फीसदी और एसवीएफ पैंथर (केमैन) लिमिटेड के माध्यम से 1.2 फीसदी हिस्सेदारी थी. एसवीएफ पैंथर ने आईपीओ के दौरान अपनी पूरी हिस्सेदारी 1,689 करोड़ रुपये यानी करीब 22.5 करोड़ डॉलर में बेच दी। सॉफ्टबैंक ने पेटीएम के शेयर औसतन 800 रुपये प्रति शेयर के भाव पर खरीदे थे।

कंपनियों के नतीजे और वैश्विक रुख से तय होगी बाजार की चाल: विश्लेषक

जून के थोक मूल्य सूचकांक आधारित मुद्रास्फीति के आंकड़े से भी बाजार की धारणा पर असर पड़ेगा

नई दिल्ली।

इस सप्ताह इन्फोसिस और रिलायंस इंडस्ट्रीज जैसी कई बड़ी कंपनियों के नतीजों के अलावा वैश्विक रुख और विदेशी निवेशकों के वैश्विक रुख से शेयर बाजार की चाल तय होगी। विश्लेषकों ने यह राय जताई है। उन्होंने कहा कि जून के थोक मूल्य सूचकांक आधारित मुद्रास्फीति के आंकड़े सोमवार को जारी किए जाएंगे। इन आंकड़ों से भी बाजार की धारणा पर असर पड़ेगा। मुहर्रम के अवसर पर बुधवार को शेयर बाजार बंद रहेंगे। बाजार के जानकारों ने कहा कि सप्ताह के दौरान एचडीएफसी लाइफ इंश्योरेंस कंपनी, बजाज ऑटो, बीपीसीएल, जेएसडब्ल्यू स्टील, एशियन पेंट्स, इन्फोसिस और रिलायंस इंडस्ट्रीज जैसी बड़ी कंपनियां अपने जून तिमाही के नतीजों की घोषणा करेंगी। इस सप्ताह सभी की निगाह कंपनियों के पहले तिमाही के नतीजों पर रहेगी। सप्ताह के दौरान इन्फोसिस और रिलायंस सहित कई कंपनियां अपने नतीजे घोषित करेंगी। इसके अलावा बजट-पूर्व चर्चाओं से बाजार में उतार-चढ़ाव रह सकता है। उन्होंने कहा कि वैश्विक मोर्चे पर चीन पर सभी का ध्यान रहेगा। चीन सप्ताह के दौरान अपने सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) तथा औद्योगिक उत्पादन के आंकड़ों की घोषणा करेगा। वैश्विक स्तर पर अमेरिकी फेडरल रिजर्व के चेयरमैन के संबोधन, अमेरिका के खुदरा बिक्री के आंकड़े और जापान के वृहद आर्थिक आंकड़े बाजार को दिशा देंगे। इस बीच, आईटी सेवा कंपनी एचसीएल टेक का जून तिमाही का एकीकृत शुद्ध लाभ 20.4 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 4,257 करोड़ रुपये रहा है। कंपनी के तिमाही नतीजों की घोषणा शुक्रवार को हुई। बाजार विशेषज्ञों ने कहा कि सोमवार को बाजार भारत के मुद्रास्फीति के आंकड़ों पर प्रतिक्रिया देगा। इस सप्ताह जियो फाइनेंशियल सर्विसेज, एचडीएफसी लाइफ, एशियन पेंट्स, एलटीआईमाइंडट्री, इन्फोसिस, विप्रो, जेएसडब्ल्यू स्टील, पेटीएम के तिमाही नतीजे आने हैं। साथ ही वैश्विक स्तर पर निवेशक चीन के जीडीपी आंकड़ों, अमेरिका के खुदरा बिक्री के आंकड़ों और यूरोपीय केंद्रीय बैंक (ईसीबी) के ब्याज दर पर निर्णय से दिशा लेंगे। उन्होंने कहा कि चालू तिमाही नतीजों के सत्र की वजह से सप्ताह के दौरान शेयर विशिष्ट गतिविधियां देखने को मिलेंगी। तिमाही नतीजों के सत्र की अच्छी शुरुआत की वजह से आईटी शेयर आकर्षण का केंद्र रहेंगे। इस सप्ताह चीन के जीडीपी, यूरो क्षेत्र के उपभोक्ता मूल्य सूचकांक आधारित मुद्रास्फीति के आंकड़े, ईसीबी के नीतिगत निर्णय तथा अमेरिकी केंद्रीय बैंक के प्रमुख के संबोधन पर सभी की निगाह रहेगी।

मर्सिडीज बेंज भारत में और इलेक्ट्रिक वाहनों को असेंबल करेगी

नई दिल्ली ।

जर्मनी की लक्जरी कार बनाने वाली कंपनी मर्सिडीज-बेंज भारत में अपने संयंत्र में अधिक संख्या में इलेक्ट्रिक वाहनों (ईवी) को असेंबल करने की तैयारी कर रही है। कंपनी के एक वरिष्ठ अधिकारी ने यह जानकारी दी। मर्सिडीज-बेंज इंडिया फिलहाल अपने चाकन संयंत्र में अपनी प्रमुख इलेक्ट्रिक लक्जरी सेडान ईक्यूएस को असेंबल करती है। कंपनी मांग के आधार पर अन्य मॉडल के स्थानीयकरण पर भी विचार कर रही है। मर्सिडीज-बेंज इंडिया के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि हमारा आखिरी लक्ष्य शून्य उत्सर्जन वाला परिवहन और कार्बन निरपेक्षता है। इसका मतलब न केवल ईंधन उत्सर्जन को कम करने से है, बल्कि कारों के पुनर्चक्रण से भी है। हम कारों के उत्पादन से होने वाले कॉर्बन उत्सर्जन को भी कम करना चाहते हैं। उन्होंने आगे कहा कि हमें इसे समग्र रूप से देखना होगा। इसलिए ईवी का उत्पादन तार्किक कदम है

और हम बाजार की मांग में बदलाव के साथ उस दिशा में आगे बढ़ते रहेंगे।

मर्सिडीज-बेंज इंडिया ने अक्टूबर, 2022 से चाकन संयंत्र में ईक्यूएस को असेंबल करना शुरू किया था। यह भारत में बिकने वाले चार ईवी मॉडल - एसयूवी ईक्यूए, ईक्यूबी और ईक्यूई तथा सेडान ईक्यूएस - में स्थानीय स्तर पर असेंबल किया जाने वाला एकमात्र मॉडल है। इनकी कीमत 66 लाख रुपये से 1.6 करोड़ रुपये के बीच है।

बालू फोर्ज इंडस्ट्रीज लि. बोर्ड प्रेफरेंशियल इशू से फण्ड जुटाने पर करेगा विचार -

मुम्बई/इन्दौर ।

प्रमुख प्रेसिजन इंजीनियरिंग कंपनी बालू फोर्ज इंडस्ट्रीज लि. (बीएसई: 531112, एनएसई: बालूफोर्ज) (बीएफआईएल), जो क्रैंकशाफ्ट और जाली घटकों के निर्माण में लगी हुई है, ने घोषणा की है कि कंपनी के बोर्ड की बैठक 16 जुलाई 2024 को कंपनी के शेयरधारकों की स्वीकृति के अधीन आवश्यक हो सकने वाली नियामक/व वैधानिक स्वीकृतियों के अधीन, प्रेफरेंशियल इशू /प्राइवेट प्लेसमेंट से धन जुटाने के प्रस्ताव पर विचार करने के लिए होगी।

इससे पहले, कंपनी ने हैमर्स एंड प्रेसेस के कॉम्बिनेशन में 72,000 टन प्रति वर्ष भारी जाली उत्पादों का उत्पादन करने में सक्षम तीन फोर्जिंग लाइनों के सफल अधिग्रहण की घोषणा की थी। इन नवीनतम अधिग्रहीत फोर्जिंग लाइनों को बेलगावी, कर्नाटक में हमारे आगामी विनिर्माण परिसर में हो रहे सटीक इंजीनियरिंग विस्तार के साथ मूल रूप से एकीकृत किया जाएगा, जिससे क्व्व्ढरु रेलवे, रक्षा, तेल और गैस, खनन, एयरोस्पेस, रक्षा, एल्यूमीनियम और अन्य महत्वपूर्ण सटीक उद्योगों जैसे महत्वपूर्ण उद्योगों के लिए एडवांस मशीनिंग सोल्यूशन के लिए एक इंटीग्रेटेड वन-स्टॉप सोल्यूशन प्रोवाइडर बन जाएगा।

इस कॉम्प्रेहेंसिव सेटअप में 16-टन का क्लोज्ड डाई फोर्जिंग हैमर, 10-टन का क्लोज्ड डाई फोर्जिंग हैमर और 8,000ज्ञ क्षमता का मैकेनिकल प्रेस शामिल है। यह सेटअप नवीनतम तकनीक के साथ पूरी तरह से स्वचालित होगा, लाइक एंटीवाइब्रेशन सिस्टम प्रेस लाइन विथ रोबोटिक हैंडलिंग कॉम्प्लाइन्स विथ इंडस्ट्री 4.0 मॉडल, जिसे कंपनी की बेलगाम, कर्नाटक में आगामी ग्रीनफील्ड प्रोजेक्ट में स्थापित किया जाएगा।

न्यू फोर्जिंग यूनिट को हाल ही में प्राप्त मर्सिडीज बेंज की प्रिसिशन मशीनिंग यूनिट के साथ निर्बाध रूप से एकीकृत किया जाएगा। इससे कंपनी की प्रोडक्ट इंजीनियरिंग और मजबूत होगी और महत्वपूर्ण इंजीनियरिंग और सुरक्षा घटक उद्योग में काम करने वाली वैश्विक प्रमुख कंपनियों को एक छत के नीचे संपूर्ण समाधान के साथ प्रिसिशन प्रोडक्ट की ऑफरिंग बढ़ेगी।

वित्त वर्ष 24 के लिए, कंपनी ने शानदार 71.40त्न की आय वृद्धि दर्ज की और वित्त वर्ष 24 में परिचालन से आय वित्त वर्ष 23 में रु. 3,266.39 मिलियन की तुलना में रु. 5,598.56 मिलियन रही।

देश से वाहनों का निर्यात पहली तिमाही में 15.5 फीसदी बढ़ा

- समीक्षाधीन अवधि में 69,962 इकाइयों के निर्यात के साथ मारुति सुजुकी इंडिया सबसे आगे रही

नई दिल्ली । देश से वाहनों का निर्यात चालू वित्त वर्ष की जून में समाप्त पहली तिमाही में सालाना आधार पर 15.5 प्रतिशत बढ़ा है। तिपहिया को छोड़कर सभी अन्य वाहनों का निर्यात बढ़ा है। वाहन विनिर्माताओं के एक संगठन के आंकड़ों से यह जानकारी मिली है। आंकड़ों के अनुसार, चालू वित्त वर्ष की पहली अप्रैल-जून की तिमाही में कुल वाहन निर्यात 11,92,577 इकाई रहा, जो इससे पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही के 10,32,449 इकाई के आंकड़े से 15.5 प्रतिशत अधिक है।पहली तिमाही में यात्री वाहनों का निर्यात 19 प्रतिशत बढ़कर 1,80,483 इकाई रहा। पिछले साल समान तिमाही में यह आंकड़ा 1,52,156 इकाई था। समीक्षाधीन अवधि में 69,962 इकाइयों के निर्यात के साथ देश की प्रमुख वाहन कंपनी मारुति सुजुकी इंडिया सबसे आगे रही। इससे पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही में मारुति ने 62,857 वाहनों का निर्यात किया था। अप्रैल-जून में हुंदै मोटर का निर्यात 42,600 इकाई रहा। पिछले साल की समान अवधि में कंपनी ने 35,100 इकाइयों का निर्यात किया था। तिमाही के दौरान देश से दोपहिया वाहनों का निर्यात 17 प्रतिशत बढ़कर 9,23,148 इकाई पर पहुंच गया, जो एक साल पहले की समान अवधि में 7,91,316 इकाई रहा था। इस दौरान वाणिज्यिक वाहनों का निर्यात सालाना आधार पर आठ प्रतिशत बढ़कर 15,741 इकाई हो गया। एक साल पहले समान अवधि में यह आंकड़ा 14,625 इकाई था। हालांकि, समीक्षाधीन तिमाही में तिपहिया वाहनों का निर्यात तीन प्रतिशत घटकर 71,281 इकाई रह गया। एक साल पहले समान तिमाही में 73,360 तिपहिया का निर्यात हुआ था। संगठन के एक अधिकारी ने कहा कि यह उद्योग के लिए अच्छा संकेत है कि निर्यात का आंकड़ा बेहतर रहा है। उन्होंने कहा, मुझे लगता है कि यह एक बहुत अच्छा संकेत है कि निर्यात अपने निचले स्तर से उबर आया है, खासकर वाणिज्यिक वाहन खंड। इस साल पहली तिमाही से वृद्धि दिखनी शुरू हो गई है। पिछले साल तक ट्रक और बस के निर्यात में भारी गिरावट देखने को मिली थी। उन्होंने कहा कि पहली तिमाही दोपहिया और यात्री वाहनों के लिए भी अच्छी रही है।

पोषणयुक्त आहार एवं कुपोषण मुक्त भारत के संकल्प के उजाले

ललित गर्ग

भारत सरकार एवं वैज्ञानिकों के प्रयास नि :संदेह सराहनीय हैं कि आर्थिक संकट में भी सस्ती वैक्सीन उपलब्ध कराने के सभी प्रयास जारी हैं। केंद्र सरकार के साथ-साथ राज्य सरकार भी स्वास्थ्य बजट में बढ़ोतरी कर अपने नागरिकों को सस्ता एवं स्वच्छ उपचार उपलब्ध करा सके तो कुपोषण, भूखमरी एवं बीमारियों से निजात मिल सकेगा। कुपोषण एवं भूखमरी से मुक्ति के लिये भी सरकारों को जागरूक होना होगा।

संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) द्वारा भारत सहित पूरे विश्व में भूख, कुपोषण एवं बाल स्वास्थ्य पर समय-समय पर चिंता व्यक्त की गई है। यह चिन्ताजनक स्थिति विश्व का कड़वा सच है लेकिन एक शर्मनाक सच भी है और इस शर्म से उबरना जरूरी है। कुपोषण और भुखमरी से जुड़ी वैश्विक रिपोर्टें न केवल चौंकाने बल्कि सरकारों की नाकामी को उजागर करने वाली ही होती हैं। इस विवशता को कब तक ढोते रहेंगे और कब तक दुनिया भर में कुपोषितों का आंकड़ा बढ़ता रहेगा, यह गंभीर एवं चिन्ताजनक स्थिति है। लेकिन ज्यादा चिंताजनक यह है कि तमाम कोशिशों और दावों के बावजूद कुपोषितों और भुखमरी का सामना करने वालों का आंकड़ा पिछली बार के मुकाबले हर बार बढ़ा हुआ ही निकलता है। इन स्थितियों के बीच भारत में इस गंभीर स्थिति पर नियंत्रण पाने की दिशा में सरकार ने उल्लेखनीय कदम उठाये हैं। भारत सरकार पोषणयुक्त आहार एवं कुपोषणमुक्त भारत के संकल्प को आकार देने में जुटी है, आजादी के बाद मोदी सरकार ने इस दिशा में उल्लेखनीय सफलता पाई है, जो समस्या से मुक्ति की दिशा में सरकार के संकल्प का उजाला है।

कुपोषण की समस्या को दूर करने के लिये सरकार विभिन्न योजनाओं का कार्यान्वयन कर रही है। हालाँकि उनके वित्तपोषण और कार्यान्वयन में अभी भी अंतराल मौजूद हैं। इस मुद्दे को समग्र रूप से संबोधित करने के लिये एक व्यापक दृष्टिकोण आवश्यक है। कुपोषण की स्थिति तब विकसित होती है जब शरीर विटामिन, खनिज और अन्य पोषक तत्त्वों से वंचित हो जाता है, भारत सरकार ने वर्ष 2022 तक 'कुपोषण मुक्त भारत' सुनिश्चित करने के लिये राष्ट्रीय पोषण मिशन अभियान शुरू किया था, जिसमें बड़ी सफलता मिली है। एनीमिया मुक्त भारत अभियान वर्ष 2018 में शुरू किया गया, मिशन का उद्देश्य एनीमिया की वार्षिक दर को एक से तीन प्रतिशत अंक तक कम करना है। मध्याह्न भोजन योजना का उद्देश्य स्कूली बच्चों के बीच पोषण स्तर में सुधार करना है, जिसका स्कूलों में नामांकन, प्रतिधारण और उपस्थिति पर प्रत्यक्ष एवं सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम 2013 का उद्देश्य अपनी संबद्ध योजनाओं और कार्यक्रमों के माध्यम से सबसे कमजोर लोगों के लिये खाद्य एवं पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करना है, जिससे भोजन तक पहुँच कानूनी अधिकार बन जाए। प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना के अन्तर्गत गर्भवती महिलाओं को डिलीवरी के लिये बेहतर सुविधाएँ प्राप्त करने हेतु 6,000 रुपए सीधे उनके बैंक

खातों में स्थानांतरित किये जाते हैं। समेकित बाल विकास सेवा वर्ष 1975 में शुरू किया गया था और इस योजना का उद्देश्य 6 वर्ष से कम उम्र के बच्चों तथा उनकी माताओं को भोजन, पूर्व स्कूली शिक्षा, प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल, टीकाकरण, स्वास्थ्य जाँच और अन्य सेवाएँ प्रदान करना है। इन सब योजनाओं का असर कुपोषण को नियंत्रित करने पर पड़ रहा है।

अंतरिम बजट 2024-25 में, केंद्रीय वित्त मंत्री ने इस बात पर प्रकाश डाला है कि अमृत काल के दौरान समावेशी विकास के लिए, बेहतर पोषण वितरण, प्रारंभिक बचपन की देखभाल और समग्र विकास में तेजी लाने के लिए एक ठोस प्रयास करने की आवश्यकता है। विजन इंडिया 2047 के प्रयासों को पूरा करने के लिए, फीडिंग इंडिया भूख को कम करने और कुपोषण मुक्त राष्ट्र बनाने के उद्देश्य से कार्यक्रमों को डिजाइन करने और लागू करने की दिशा में काम कर रहा है। एक बहुआयामी रणनीति के माध्यम से, फीडिंग इंडिया बड़े पैमाने पर व्यवस्थित हस्तक्षेप, कम आय वाले सरकारी और गैर-सरकारी स्कूलों को सीधे भोजन सहायता और युवाओं के नेतृत्व वाले स्वयंसेवी आंदोलन के माध्यम से कुपोषण के बारे में सामाजिक जागरूकता बढ़ाकर अपने मिशन को आगे बढ़ाता है। फीडिंग इंडिया एक ऐसे भारत के लिए प्रतिबद्ध है जो आर्थिक रूप से संपन्न हो, नागरिकों, विशेष रूप से युवाओं को आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करे और जो कुपोषण मुक्त हो। अपनी स्थापना के बाद से, फीडिंग इंडिया ने 30 से अधिक शहरों में 150 कार्यान्वयन भागीदारों के माध्यम से 150 मिलियन से अधिक भोजन उपलब्ध कराया है और 2030 तक वंचित समुदायों को अतिरिक्त 300 मिलियन पौष्टिक भोजन प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।÷

असल में भारत जैसे विशाल और विविधता वाले देश में हर इलाके की खास जरूरतों के हिसाब से अलग व्यवस्था की दरकार है, न कि सब जगह एक ही पैमाने पर बने कार्यक्रम को लागू करना। पिछले कई बरस से यही तरीका अपनाया जाता रहा है। देश से कुपोषण की समस्या जड़ से खत्म करने के लिए नए सिरे से हो रहे प्रयास तीन अहम बातों पर आधारित हैं- बर्ताव में बदलाव, संक्रमण रोकने का प्रबंधन और पीढ़ी दर पीढ़ी चलने वाले कुपोषण के चक्र को तोड़ना। भुखमरी पर स्टैंडिंग टुगेदर फॉर न्यूट्रीशन कंसोर्टियम ने आर्थिक और पोषण डाटा इकट्ठा किया, इस शोध का नेतृत्व करने वाले सासकिया ओसनदार्प अनुमान लगाते हैं कि जो महिलाएं अभी गर्भवती हैं वो ऐसे बच्चों को जन्म देंगी जो जन्म के पहले से ही कुपोषित हैं और ये बच्चे शुरू से ही कुपोषण के शिकार रहेंगे। एक पूरी पीढ़ी दांव पर है।

कुपोषण के कई रूप हैं, जैसे बच्चों का नाटा रह जाना, कम वजन, एनीमिया प्रमुख हैं। इनमें से कुछ में समय के साथ सुधार हुआ है। ओडिशा, छत्तीसगढ़ जैसे गरीब राज्यों में भी सुधार देखा गया। यह किसी विडंबना से कम नहीं है कि कुपोषण के साथ भारत अधिक वजन, मधुमेह और उच्च रक्तचाप जैसी नई चुनौतियों का भी सामना कर रहा है, जिसे पोषण संबंधी गैर-संचारी रोग भी कहा जाता है। हर पांच में से एक महिला और हर सात में से एक भारतीय पुरुष आज बढ़ते वजन से पीड़ित हैं। शहरी क्षेत्र में दिनोंदिन यह प्रवृत्ति तेजी से बढ़ रही है। बच्चों का शारीरिक व मानसिक विकास उसकी डाइट पर भी निर्भर करता है। विटामिन, मिनरल, कैल्सियम, प्रोटीन, फाइबर आदि भरपूर डाइट से बच्चे का विकास सही ढंग से होगा ही, वह तंदुरुस्त भी रहेगा। हकीकत ये है कि ज्यादातर माताएं संतुलित आहार व डाइट क्या है? जानती तक नहीं। विशेषज्ञों के अनुसार गर्भावस्था से लेकर किशोरावस्था की उम्र तक बच्चों की डाइट में परिवर्तन होता रहता है।

ग्रामीण क्षेत्रों व मलिन बस्तियों के बच्चों को उचित डाइट नहीं मिल पाती, नतीजतन वे कम वजन व लंबाई और बार-बार बीमारी से जूझते हैं। कई बार कुपोषण की चपेट में भी आ जाते हैं। बढ़ते बच्चों का डाइट चार्ट के अनुसार खानपान जरूरी है। शुरुआत भ्रूणावस्था से हो जाती है। इसके लिए गर्भवती को आयरन, कैल्शियम व फॉलिक एसिड लेना चाहिए। खजूर, गुड़, चना, दूध व दूध से बनी चीजें, चिकन-अंडा, मुरमुरे, अनार, सेब, चीकू, अमरूद, पनीर व दाल का सेवन करें। खूब पानी पीएं। इस उम्र में शिशु को चावल की खीर, दूध में साबूदाना, पिसे हुए पनीर को दलिया मिलाकर खिलाएं। खजूर भी अच्छा है, इसमें मैग्नीशियन, आयरन, फास्फोरस व अन्य पोषक तत्व होते हैं। उम्र बढ़ने के साथ रोटी व हरी सब्जियां भी शुरू कर दें। यह बढ़ती उम्र है, बच्चे को कैल्शियम की ज्यादा जरूरत होती है, इसलिए दूध ज्यादा दें। अंडा-पनीर भी कैल्शियम के अच्छे स्रोत हैं। हरी सब्जियां, मौसम के फल व अन्य भोजन खिलाएं। 12 से 13 साल तक बच्चे के भोजन में हर चीज शामिल कर लें।

भारत सरकार एवं वैज्ञानिकों के प्रयास निःसंदेह सराहनीय हैं कि आर्थिक संकट में भी सस्ती वैक्सीन उपलब्ध कराने के सभी प्रयास जारी हैं। केंद्र सरकार के साथ-साथ राज्य सरकार भी स्वास्थ्य बजट में बढ़ोतरी कर अपने नागरिकों को सस्ता एवं स्वच्छ उपचार उपलब्ध करा सके तो कुपोषण, भूखमरी एवं बीमारियों से निजात मिल सकेगा। कुपोषण एवं भूखमरी से मुक्ति के लिये भी सरकारों को जागरूक होना होगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पोषणयुक्त आहार पर बल दे रहे हैं। कुपोषणमुक्त भारत बनाने की मुहिम में उनके प्रयासों एवं योजनाओं ने उम्मीदें के नये पंख लगाये हैं। आहार की गुणवत्ता को किसी भी व्यक्ति के जीवन में भोजन के सभी स्रोतों के संदर्भ में देखना जरूरी है। चाहे वह सार्वजनिक वितरण प्रणाली के तहत दिया गया भोजन हो, मिड-डे मील के तहत उपलब्ध कराया जा रहा भोजन हो, आइसीडीएस या देश के बाजारों में उपलब्ध खाद्य पदार्थ हो, वर्तमान चुनौती उच्च अनाज और कम प्रोटीन वाले खाद्य पदार्थों की है।

संपादकीय

सुनवाई जरूरी

न्यूनतम समर्थन मूल्य यानी एमएसपी की कानूनी गारंटी और कृषि ऋण माफी सहित अन्य मांगों को लेकर किसान आंदोलन फिर शुरू किया जाएगा। संयुक्त किसान मोर्चा में शामिल अलग-अलग किसान संगठनों का कहना है कि वे प्रधानमंत्री, विपक्ष के नेता लोक सभा और राज्य सभा के सदस्यों को ज्ञापन सौंपेंगे। इस बार दिल्ली कूच करने की बजाय देशव्यापी विरोध की तैयारी कर रहे हैं। महाराष्ट्र, झारखंड़, जम्मू-कश्मीर और हरियाणा को वे प्रमुखता देंगे। इन राज्यों में जल्द ही विधानसभा चुनाव होने हैं। फसल बीमा, किसानों को पेंशन बिजली के निजीकरण को बंद करने के साथ सिंधु और टिकरी सीमा पर शहीद किसानों का स्मारक बनाने की मांग भी कर रहे हैं।

समर्थन मूल्य को लेकर यह आंदोलन 2020 में शुरू हुआ था। यूं तो इसे बड़े किसानों का आंदोलन कहा जा रहा है लेकिन किसानों का एक वर्ग मोदी सरकार की कृषि नीतियों से संतुष्ट नहीं है। सरकार की तरफ से मिले आश्वासन और आम चुनाव के दौरान आंदोलन कुछ वक्त के लिए ठहर सा गया था। देश में छोटे किसानों की तादाद बहुत है। दूसरे वे लोग हैं, जो कृषि कार्यों के जरिए जीवन यापन करते हैं। उन सबको इन आंदोलनों या मांगों से ज्यादा फर्क नहीं पड़ता। हालांकि अभिव्यक्ति की आजादी का अधिकार हर देशवासी को है। वह सरकार के समक्ष अपनी कोई भी मांग रखने को आजाद है। मगर पिछले आंदोलन के दरम्यान प्रदर्शनकारियों के कारण कई स्थानों पर जन-जीवन अस्त-व्यस्त हो गया था। आगजनी और पथराव हुआ था। सुरक्षाबलों पर हथियार भी प्रयोग हुए। इसी दरम्यान पंजाब-हरियाणा हाई कोर्ट ने हरियाणा के शंभू बार्डर पर धरनारत किसानों को हटाने के आदेश दिए हैं। राज्य सरकार को भी बैरिकेड़ हटाने और चड़ीगढ़-दिल्ली राष्ट्रीय राजमार्ग खोलने का आदेश दिया है। पांच महीनों से अवरुद्ध इस मार्ग के खोलने से कारोबारियों और नियमित यात्रियों को होने वाली असुविधा से निजात मिल सकेगी। हम कृषि प्रधान देश हैं इसलिए उनकी जरूरतों और मांगों की अनदेखी नहीं की जा सकती। मगर उन्हें भी उग्र विरोध से बचना चाहिए। अड़ियल रुख दिखाने की बजाय सरकार को भी छोटे किसानों के हितों की रक्षा में कोई कोताही नहीं बरतनी चाहिए।

चिंतन-मनन

व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया

बदलाव का क्रम निरंतर चलता है। जैन दर्शन इस क्रम को पर्याय-परिवर्तन के रूप में स्वीकार करता है। पर्याय का अर्थ है अवस्था। प्रत्येक वस्तु की अवस्था प्रतिक्षण बदलती है। यह जगत की स्वाभाविक प्रक्रिया है।कुछ अवस्थाओं को प्रयत्नपूर्वक भी बदला जाता है।स्वभाव से हो या प्रयोग से, बदलाव की प्रक्रिया को बदलना संभव नहीं है।वस्तु बदल सकती है तो व्यक्ति भी बदल सकता है।इस आस्थासूत्र का आलंबन लेकर ही व्यक्ति व्यक्तित्व-निर्माण का लक्ष्य निर्धारित करता है।लक्ष्य निर्णीत होने के बाद उस दिशा में प्रस्थान करता है। आज का आदमी जेट युग की रफ्तार से चलता है। वह आकाश में सीढ़िया लगाने की बात सोचता है और समुद्र में सुरंग बनाने की कल्पना करता है।पर व्यक्ति-निर्माण का काम शॉर्टकट मेथड से पलक झपकते ही हो जाए, यह संभव नहीं है। व्यक्तित्व निर्माण की बात होती है तो प्रश्न उठता है कि किस प्रकार का व्यक्तित्व? इस प्रश्न का समाधान है आध्यात्मिक वैज्ञानिक व्यक्तित्व।व्यक्तित्व निर्माण के इस अनुष्ठान में जिन वर्गों को सहभागी होना है, उनमें एक वर्ग है- स्नातक।

एक विद्यार्थी स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर का अध्ययन करने में अपने जीवन के सत्रह-अठारह वर्ष लगा देता है। उस समय उसके अभिभावकों के मन में यह भाव नहीं पैदा होता कि उसके ये वर्ष व्यर्थ तो नहीं बीत रहे हैं।क्योंकि डिग्री के साथ जीविका का संबंध जोड़ा जाता है।जीविका जीवन की अनिवार्यता है।लेकिन जीविका से अधिक मूल्यवान जीवन है।जीविका जीवन का साध्य नहीं साधन है।जीवन का साध्य है- विकास की यात्रा में अग्रसर होना। बुद्धि व्यक्तित्व का महज एक घटक है।उसका दूसरा घटक है प्रज्ञा।प्रज्ञा के जागरण से बौद्धिक विकास के साथ भावनात्मक विकास का संतुलन रहता है।जब ये दोनों विकास समानांतर होते हैं, तब आध्यात्मिक वैज्ञानिक व्यक्तित्व का निर्माण हो सकता है। इस बात को स्वयं विद्यार्थी अनुभव करे या नहीं, अभिभावकों को ध्यान देने की अपेक्षा है।

ट्रंप पर हमला अर्थात बैलेट पर बुलेट का प्रहार

डॉ हिदायत अहमद खान

अमेरिका के पेंसिल्वेनिया में शनिवार शाम करीब 6:15 बजे पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप पर उस वक्त जानलेवा हमला हुआ जबकि वो चुनावी रैली को संबोधित कर रहे थे। इस हमले की जितनी भी निंदा की जाए वह कम ही होगी, क्योंकि लोकतंत्र की सबसे बड़ी खूबसूरती यही है कि बिना हिंसा और खून-खराबे के सरकारें बदल जाती हैं। बड़ी से बड़ी समस्या का समाधान बात-चीत से निकाल लिया जाता है। बावजूद इसके लोकतांत्रिक देशों में हिंसा बढ़ रही है, जो वाकई चिंता का विषय है। जहां तक पूर्व राष्ट्रपति ट्रंप पर हुए हमले की बात है तो जब वो चुनावी रैली को संबोधित कर रहे थे तभी फायरिंग हुई और उनके दाहिने कान का ऊपरी हिस्सा जख्मी हो गया। अधिक मात्रा में बहते खून को रोकने ट्रंप ने कान में हाथ लगाया और एक सफल नेता की तरह लोगों को आश्वस्त किया कि कुछ नहीं हुआ है। इसके फौरन बाद ही उन्हें अस्पताल ले जाया गया। प्राथमिक उपचार के बाद ट्रंप ने सोशल मीडिया पर बयान जारी कर अपनी कुशल-क्षेम समर्थकों और शुभचिंतकों को दी और विरोधियों को बतला दिया कि वो ऐसे हमलों से डरने वाले नहीं हैं। वो चुनाव मैदान में डटे हुए हैं और आगे भी बने रहेंगे। उन पर हमला करने वाला आरोपी युवक उसी वक्त मार गिराया गया। उसकी पहचान भी कर ली गई है। बहरहाल इस दुःखद घटना ने अमेरिका ही नहीं बल्कि दुनिया के उन तमाम लोकतांत्रिक देशों के लिए एक सवाल तो छोड़ ही दिया है कि जहां बैलेट से सरकारें बदली जा सकती हैं वहां बुलेट का क्या काम है? आखिर क्या वजह रही होगी कि एक नौजवान को देश के पूर्व राष्ट्रपति और मौजूदा चुनाव में राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार की यूं जान लेने की सूझ पड़ी थी? अमेरिका में इस तरह की यह पहली घटना नहीं है, बल्कि इससे पहले भी राष्ट्रपतियों, पूर्व राष्ट्रपतियों और उम्मीदवारों को निशाना बनाया गया और उनकी हत्या कर दी गई। अमेरिका के इतिहास पर सरसरी निगाह डालें तो मालूम चलता है कि यहां की राजनीति में भी हिंसा के स्याह पन्ने जुड़े हुए हैं। मीडिया रिपोर्ट्स को यदि सही माना जाए तो राष्ट्रपति पद पर रहते हुए चार नेताओं की हत्या कर दी जाना कोई मामूली बात नहीं है। इस पर अमेरिका के 35वें राष्ट्रपति जॉन एफ केनेडी की हत्या की गुत्थी तो आज तक सुलझाई नहीं जा सकी है, जो कि अपने आप में अविश्वसनीय घटना लगती है। इनसे पहले अमेरिका के 16वें राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन की 14 अप्रैल, 1865 को गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। इसके बाद अमेरिका के 20वें राष्ट्रपति जेम्स गारफील्ड की 2 जुलाई, 1881 को गोली मारकर हत्या की गई। इसी तरह से 25वें राष्ट्रपति विलियम मैककिनले को 6 सितंबर, 1901 को गोली मारी गई और उनकी मौत इसी कारण 14 सिंतबर 1901 को हुई। अमेरिका के 35वें राष्ट्रपति जॉन एफ कैनेडी को नवंबर 1963 में गोली मारी गई थी। इतिहास के पन्नों में दर्ज इस हत्या के कारणों का खुलासा आज तक नहीं हो सका, जिसे लेकर समय-समय पर दावे-प्रतिदावे भी किए जाते हैं। इसी तरह से राष्ट्रपति के अनेक उम्मीदवारों को वक्त-वक्त पर बंदूक की गोली का निशाना बनाया गया और उन्हें हलाक कर दिया गया। वैसे तो लोकतांत्रिक व्यवस्था में इस तरह हिंसा और खून-खराबे की रत्तीभर भी इजाजत नहीं है, लेकिन अफसोस कि देखने में यही आता रहा है कि जब-जब चुनाव आते हैं, किसी न किसी तरह से बुलेट के हिमायती सिर उठाना शुरु कर देते हैं। इसे राजनीतिक हिंसा का नाम दिया जाता है, जबकि इसके पीछे के कारणों की अनदेखी कर दी जाती है। देश और दुनियां के बदलते हालात और नई-नई चुनौतियों को एक कारण माना जाता है, लेकिन इससे आगे भी कुछ है, जिस पर अब विचार करने की आवश्यकता आन पड़ी है। विचार करना होगा कि जिनके हाथों में देश की दशा और दिशा तय करने की ताकत होती है, जब वो चुनाव मैदान में उतरते हैं तो उनकी भाषा क्या

संयमित होती है? क्या वो हथियार उठाने और एक-दूसरे को चुनौती देने जैसे बयानों से बचते हैं? क्या वो वर्ग और जाति में बांटकर लोगों को आपस में लड़ाने और अपनी राजनीतिक रोटियां सेंकने से गुरेज करते हैं? क्या जनता से किए गए चुनावी वादे भी कभी सौ फीसद पूरे किए जाते हैं? और सबसे अहम सवाल यह कि जिस मकसद के लिए लोकतंत्र को अपनाया गया क्या उसे पूरा करने के लिए भी कभी जी-जान से मेहनत की गई है? यदि इन तमाम सवालों के जवाब हां में मिलने लगें तो फिर देखिए बुलेट पर कैसे बैलेट प्रभावी सिद्ध होता है। चुनाव के दौरान आगे इस तरह के जानलेवा हमले न हों, इस पर जरुर विचार करने और सार्थक हल खोजने की आवश्यकता है।

भारतीय संस्कृति और मर्यादा का अंतस

प्रत्यक्ष पर्यावरण प्रकृति की संरचना है। भारत के प्राचीनकाल में भी प्राकृतिक पर्यावरण की उपस्थिति मनमोहक थी। प्रकृति को देखते, उसके विषय में सोचते और सुनते मनुष्य ने भी सृजन कर्म में जाने अनजाने भागीदारी की। आज का भारत हमारे पूर्वजों, अग्रजों के सचेत कर्मों का परिणाम है। मनुष्य द्वारा किए गए सुंदर सत्कर्म संस्कृति हैं। प्रकृति स्वाभाविक है। लेकिन संस्कृति मनुष्य की रचना है। संक्षेप में विश्व के प्रत्येक जीव की लोकमंगल कामना और उसके लिए किए गए कर्म संस्कृति है। संस्कृति किसी एक व्यक्ति या समूह के कर्मफल का परिणाम नहीं होती।

भारतीय संस्कृति के विकास में विज्ञान और दर्शन की महत्ता है। कोई अंधविश्वास नहीं। रूप, रस, गंध, शब्द और स्पर्श प्रत्यक्ष इंद्रिय बोध के हिस्से हैं। पूर्वजों की 'मंगल भवन अमंगल हारी÷ कर्मठ चेतना से संस्कृति का विकास हुआ। सारांशतः भारत के बुद्धि विवेक और ज्ञान प्रज्ञान का सर्वोत्तम संस्कृति है। राष्ट्र के सभी अंगभूत घटक एक स्वर, एक लय, एक प्रीति, एक छंद और एक रस समरस स्पंदित होकर अपनी संस्कृति गढ़ते हैं। संस्कृति भारत के लोगों के दर्शन, भाषा, धर्म, कला, आशा, संवेदना, अनुभूति, प्रीति, धीरज, साहस संयम और मर्यादा का अंतस है। भारतीय संस्कृति हजारों वर्ष की तपसाधना का सृजन है। मार्शल ने लिखा है, ÷अनेक प्रमाणों में भारत में एक अत्यंत विकसित संस्कृति की उपस्थिति का पता चलता है। इसके पीछे अवश्य ही भारत की धरती का लंबा इतिहास होना चाहिए।÷

ऋग्वेद दुनिया का प्राचीन शब्द प्रमाण है। प्राचीन समाज का विज्ञान है और तत्कालीन समाज की संस्कृति का दर्पण है। वैदिक साहित्य में सामाजिक संगठन के स्वर्ण सूत्र हैं। यहां दर्शनशास्त्र है। विज्ञान है। योग और भौतिक विज्ञान है। प्राचीन इतिहास में इस भूखंड की आस्था जैसा प्रश्नाकुल दर्शन अन्यत्र नहीं मिलता। यहां आस्था और वैज्ञानिक विवेक साथ-साथ चलते हैं। हिन्दू धर्म में एक साथ तर्क और प्रतिप्रश्न दिखाई पड़ते हैं। यहां धर्म का विकास हुआ है। यह इतिहास बड़ा मजेदार है। पहले प्रकृति का अध्ययन, विवेचन और विश्लेषण। फिर प्रकृति की शक्तियों का आदर। इन्हें देवता कहा गया। प्रकृति में नियमबद्धता देखी गई। वैदिक ऋषियों ने इस नियमबद्धता

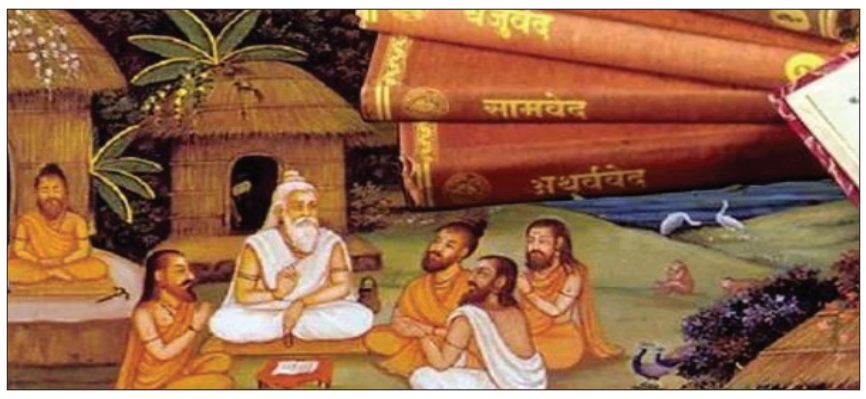

को मनुष्य के जीवन के लिए मार्गदर्शी व प्रेरक बताया। भारत में इसी सबसे विश्वप्रिय दृष्टिकोण का विकास हुआ। कौटिल्य ने दार्शनिक दृष्टिकोण अपनाकर दुनिया का पहला अर्थशास्त्र लिखा। इसी तरह अभिनय कला के सभी सरोकारों को समझते हुए भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र लिखा। चरक ने चरक संहिता और पाणिनि की अष्टाध्यायी और पतंजलि का योगसूत्र हिन्दुओं की ओर से सारी दुनिया के लिए पुरस्कार है।

ब्रिटिश सत्ता के दौरान यूरोपीय सभ्यता को श्रेष्ठ और भारतीय संस्कृति को छोटा और हेय बनाने का प्रयास किया गया है। पंडित नेहरू भी यूरोप की संस्कृति से प्रभावित थे। उन्होंने रामधारी सिंह 'दिनकर' की पुस्तक 'संस्कृति के चार अध्याय' की भूमिका में लिखा, ÷जब पश्चिम के लोग समुद्र पार से यहां आए, तब भारत के द्वार दरवाजे एक खास दिशा की ओर खुल गए। आधुनिक औद्योगिक सभ्यता बिना किसी शोरगुल के इस देश में प्रवेश कर गई। नए विचारों और नए भावों का हम पर हमला हुआ और भारतीय बुद्धिजीवी अंग्रेज बुद्धिजीवियों की तरह सोचने का अभ्यास करने लगे।÷ इस वक्तव्य के अनुसार भारतीय बुद्धिजीवियों द्वारा अंग्रेज बुद्धिजीवियों की तरह सोचना खास प्रतिष्ठा है।

अंग्रेज बुद्धिजीवियों के हित साम्राज्यवादी थे। उनके लक्ष्य ईसाईयत के प्रचार से जुड़े थे। सभ्यता इकहरी नहीं होती। प्रत्येक सभ्यता का एक दर्शन होता है। एक उद्देश्य होता है। स्वयं को प्रकट करने की अपनी शैली होती है। यह सारी बातें हिन्दू धर्म और परंपरा में पहले से मजबूत रही हैं। लेकिन नेहरू और उनसे प्रभावित बुद्धिजीवी यूरोप से वैचारिक आयात कर रहे थे। इसलिए इतिहास के अनेक प्रश्न महत्वपूर्ण हैं। हिन्दू इतिहास संकलन की शैली यूरोपीय इतिहास संकलन से भिन्न है। भारतीय बुद्धिजीवियों ने महाकाव्यों, पुराणों और वैदिक साहित्य के रूप में भारत की सभ्यता और संस्कृति की नीव मजबूत की थी। लेकिन प्राचीन भारत में यूरोपीय ढंग से इतिहास का संकलन नहीं हुआ।

अंग्रेजों ने अपनी सत्ता चलाने के लिए भारत के सम्यक अध्ययन को जरूरी पाया।

ब्रिटिश विद्वानों ने इतिहास की यूरोपीय शैली को अपनाते हुए भारतीय इतिहास का विवेचन किया। मार्क्सवादी विद्वान रामशरण शर्मा ने 'प्रारंभिक भारत का परिचय÷ (पृष्ठ 6) में लिखा है, ÷ब्रिटेन वालों ने जब यहां शासन कायम किया तब उन्हें औपनिवेशिक प्रशासन के हित में इसकी आवश्यकता प्रतीत हुई। जब 1765 में बंगाल और बिहार ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन में आए, तब शासकों को हिन्दुओं के उत्तराधिकार की न्याय व्यवस्था करने में कठिनाई का अनुभव हुआ। अतः 1776 में सबसे अधिक प्रामाणिक मानी जाने वाली मनुस्मृति का अंग्रेजी अनुवाद 'ए कोड ऑफ जेंटू लॉज' के नाम से कराया गया।÷ यह सब बातें मार्क्सवादी विद्वान की हैं। 1784 में कोलकाता में 'एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल' की स्थापना विलियम जोन्स ने की। उन्होंने 'अभिज्ञान शाकुंतलम' नाटक का अंग्रेजी में अनुवाद किया। इसी समय वर्ष 1785 में विलकंस ने भगवदगीता का अंग्रेजी में अनुवाद किया। ब्रिटिश सत्ताधीश भारत को ठीक से समझने में लगे थे। वस्तुतः भारत की सभी संस्थाओं को अंग्रेजीराज की मजबूती के लिए इस्तेमाल करने का काम उस समय के आधुनिक विद्वानों के द्वारा किया जा रहा था।

रामशरण शर्मा ने लिखा है, ÷उन्हें महसूस हो गया कि जिन विदेशी लोगों पर उन्हें शासन करना है, उनके रीति-रिवाज और सामाजिक व्यवस्था का गहन ज्ञान प्राप्त करना होगा। क्रिश्चियन मिशनों के धर्म प्रचारकों ने भी हिन्दू धर्म की दुर्बलताओं को जानना आवश्यक समझा ताकि वे धर्म परिवर्तन करा सके और इसके द्वारा ब्रिटिश साम्राज्यवादियों को मजबूत बना सकें। इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मैक्समूलर के संपादकतत्व में विशाल मात्रा में प्राचीन धर्म ग्रंथों का अनुवाद किया गया। ये अनुवाद 'सैकरेड बुक्स ऑफ द ईस्ट' सीरीज में 50 खंडों में प्रकाशित हुआ। भारतीय इतिहास और समाज के अध्ययन का इनका उद्देश्य ब्रिटिश सत्ता का समर्थन था। पाश्चात्य विद्वानों ने भारतीय इतिहास और समाज की संरचना के सम्बंध में कई भ्रामक नतीजे निकाले थे। उनके मत में प्राचीन भारत के लोगों को इतिहास का विशेषतया काल और क्रम का बोध नहीं था कि भारत के लोग स्वेच्छाकारी शासन के अभ्यस्त रहे। वे आध्यात्मिक और पारलौकिक समस्याओं में ही डूबे रहे।÷ विंसेंट स्मिथ (1843-1920) ने 'अर्ली हिस्ट्री ऑफ इंडिया' नाम का ग्रंथ लिखा। स्मिथ भी ईमानदार नहीं रहे।

ब्रिटिश विद्वानों के इतिहास ग्रंथ पक्षपातपूर्ण रहे हैं। उन्होंने इतिहास का विरुपण किया है। हम भारत के लोग जन्म से, अनुभव से, अध्ययन और परिश्रम से विश्व की प्रतिष्ठित संस्कृति के उपासक हैं। संप्रति विदेशी सभ्यता और संस्कृति को आधुनिकता बताकर तथ्य गलत तरीके से प्रस्तुत किया जा रहा है। हमारा वर्तमान हमारे भूत का विस्तार है और हमारे आज के श्रमतप भविष्य का भारत रच रहे हैं। आधुनिकता के नाम पर विदेशी संस्कृति का आह्वान और हिन्दू संस्कृति की उपेक्षा स्वीकार्य नहीं है। भारत की आधुनिकता भारत की परंपरा का ही विकास होनी चाहिए।

- हृदयनारायण दीक्षित

(लेखक, उत्तर प्रदेश विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष हैं।)

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

क्या हिंदू धर्म में हैं 33 करोड देवी-देवता

हिंदू धर्म के बारे में कई ऐसी जानकारियां हैं जो बहुत ज्यादा लोगों को पता नहीं है। ऐसे में कुछ खास और गूढ जानकारियों को हम आपके साथ बांट रहे हैं

देवभाषा संस्कृत में कोटि के दो अर्थ होते है, कोटि का मतलब प्रकार होता है और एक अर्थ करोड़ भी होता। हिन्दू धर्म का दुष्प्रचार करने के लिए ये बात उडाई गयी है कि हिन्दुओ के 33 करोड़ देवी देवता हैं। विद्वानों के अनुसार कुल 33 प्रकार के देवी देवता हैं हिंदू धर्म में – 12 प्रकार हैं आदित्य- धाता, मित, आर्यमा, शक्रा, वरुण, अँश, भाग, विवास्वान, पूष, सविता, तवास्था, और विष्णु...! 8 प्रकार में हैं वासु-, धर, ध्रुव, सोम, अह, अनिल, अनल, प्रत्युष और प्रभाष। 11 प्रकार हैँ- रुद्र, हर, बहुरुप,त्रयँबक,अपराजिता, बृषाकापि, शँभू, कपार्दी, रेवात, मृगव्याध, शर्वा, और कपाली एवं दो प्रकार हैं अश्विनी और कुमार। कुल- 12+8+11+2=33

भारतीय संस्कृति के बारे में कुछ और भी जानना उचित रहेगा-

दो पक्ष- कृष्ण पक्ष, शुक्ल पक्ष।

तीन ऋण -देव ऋण, पितृ ऋण, ऋषि ऋण।

चार युग - सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग, कलियुग

चार धाम - द्वारिका, बद्रीनाथ, जगन्नाथ पुरी, रामेश्वरम धाम

चारपीठ - शारदा पीठ (द्वारिका), ज्योतिष पीठ (जोशीमठ बद्रिधाम), गोवर्धन पीठ (जगन्नाथपुरी), श्रन्गेरिपीठ!

चार वेद- ऋवेद, अथर्वेद, यजुर्वेद, सामवेद! चार आश्रम - ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास!

चार अंत:करण - मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार!

पंच गव्य - गाय का घी, दूध, दही,गोमूत्र, गोबर!

पञ्च देव - गणेश, विष्णु, शिव, देवी,सूर्य!

पंच तत्त्व - पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश!

छह दर्शन - वैशेषिक, न्याय, सांख्य,योग, पूर्व मिसांसा, दक्षिण मिसांसा!

सप्त ऋषि - विश्वामित्र, जमदाग्नि, भरद्वाज, गौतम, अत्री, वशिष्ठ और कश्यप!

सप्त पूरी -अयोध्यापूरी,मथुरा पूरी, माया पूरी (हरिद्वार), काशी, कांची (शिन कांची - विष्णु कांची), अवंतिका और द्वारिका पूरी!

आठ योग - यम, नियम, आसन,प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान एवं समाधी !

आठ लक्ष्मी - आग्घ, विद्या, सौभाग्य, अमृत, काम, सत्य, भोग एवं योग लक्ष्मी!

नव दुर्गा -शैल पुत्री, ब्रह्मचारिणी,चंद्रघंटा, कुष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायिनी, कालरात्रि, महागौरी एवं सिद्धिदात्री!

दस दिशाएं - पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, इशान, नेऋत्य, वायव्य, अग्नि, आकाश एवं पाताल!

मुख्य 11 अवतार - मत्स्य, कच्छप, वराह,नरसिंह, वामन, परशुराम,श्री राम, कृष्ण, बलराम, बुद्ध, एवं कल्कि!

बारह मास - चेत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, अषाढ, श्रावण, भाद्रपद, अश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फागुन!

बारह राशी - मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ, कन्या।

बारह ज्योतिर्लिंग - सोमनाथ, मल्लिकार्जुन, महाकाल, ओमकारेश्वर, बैजनाथ, रामेश्वरम, विश्वनाथ, त्र्यंबकेश्वर, केदारनाथ, घुष्नेश्वर,भीमाशंकर, नागेश्वर।

पंद्रह तिथियां- प्रतिपदा,द्वितीय, तृतीय, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी,दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, पूर्णिमा, अमावष्या!

19 स्मृतियां - मनु, विष्णु, अत्री, हारीत, याज्ञवल्क्य, उशना, अंगीरा, यम, आपस्तम्ब, सर्वत, कात्यायन, ब्रहस्पति, पराशर, व्यास, शांख्य, लिखित, दक्ष, शातातप, वशिष्ठ!

मंगलवार व शनिवार को करें इन मंत्रों का जाप हनुमानजी करेंगे हर समस्या का समाधान

मंगलवार और शनिवार को रामभक्त हनुमान जी की पूजा की जाती है। इन दोनों दिन हनुमान जी का व्रत व पाठ करने से शुभ फल की प्राप्ति होती है। सुंदरकांड का पाठ करके हनुमान जी को प्रसन्न किया जा सकता है। यदि मंगलवार के दिन व्रत किया जाए तो मंगल दोष से भी मुक्ति मिलती है। यहां कुछ मंत्रों के बारे में बताया गया है जिनके जाप मात्र से व्यक्ति की विवाह, विद्या व रोग संबंधी सभी समस्याओं का हल हो जाता है।

इस मंत्र का जाप करने से विद्यार्थियों की बल बुद्धि में बढ़ौत्तरी होती है।

बुद्धिहीन तनु जान के सुमिरो पवन कुमार
बल बुद्धि विद्या देहु मोहि हरहु कलेश विकार।

व्यक्ति को किसी प्रकार की पीड़ा या रोग है तो मंगलवार या शनिवार के दिन इस मंत्र के जाप मात्र से निवारण हो जाएगा।

हनुमान अंगद रन गाजे हांक, सुनत रजनीचर भाजे।

लड़की या लड़के के विवाह में विलंब हो रहा है तो किसी भी मंगलवार या शनिवार के दिन इस मंत्र का जाप करें। इससे विवाह शीघ्र होने के योग बनते हैं।

मास दिवस महुं नाथु न भावा, तो पुनि मोहि जिअत नहि पावा।

घर में सुख शांति के लिए आजमाए ये सरल उपाय

हर इंसान चाहता है कि मेरे घर में सुख-शांति हमेशा बनी रही। लोग बहुत परेशान होते हुए भी कुछ नहीं समझ पाते की हमें अब क्या करना चाहिए। खबर यह है कि गृहस्थ व्यक्ति हमेशा कामना करता है कि उसके घर मे शांति हो, लेकिन उसके प्रयासों के बाद भी कोई न कोई बात ऐसी हो जाती है, जो उसके मन को अशांत कर देती है ऐसे में उसके कारणों की खोज परोक्ष रूप में करनी चाहिए। लहसुन की गांठ घर में रखने से सर्प कभी घर में प्रवेश नहीं करता। जो व्यक्ति यह समझता है कि घर के लोग उसकी बात को गंभीरता से नहीं लेते, जबकि वह हमेशा उसकी बात को गंभीरता से नहीं लेते, जबकि वह हमेशा सही होता है। ऐसे व्यक्ति को नियमित रूप से जल में थोड़ा-सा गुड़ मिलाकर निम्मलिखित मंत्र के साथ सूर्य को अर्घ्य देना चाहिए।

यदि आपके घर में प्रतिदिन कभी भी किसी भी चीज की संपन्नता स्थिर नहीं रह पाती है तो अपने घर में महालक्ष्मी शंख को रखें, शाम में यंत्र को एकटक निहारते हुए श्रीं श्रीयेयै नम- का नियमित जप करें। जितनी अधिक संख्या में कर सकते हैं, उतना ही अच्छा है। यदि आपके घर में प्रतिदिन कोई न कोई मुसीबत आती है और आपको लगात है कि कोई आप पर तंत्र-मंत्र करवाता है तो आप किसी भी शुक्लपक्ष के सोमवार को नवदुर्गा यंत्र को घर के मुख्य द्वार पर लगाकर रोज 21 बार ऊँ ह्रीं दुर्गायै नम- का नियमित जप करें। गीता के 11वें अध्याय के 36वें श्लोक को गत्ते पर लाल स्याही से लिखकर टांग देने से घर की समस्त बाधाएं दूर हो जाती हैं। जिस घर में नियमित रूप से अथवा प्रत्येक शुक्रवार को श्रीसूक्त या श्रीलक्ष्मी सूक्त पाठ होता है। उस घर में सदा लक्ष्मी का वास होता है।

गाय कैसे और क्यों करती है वास्तु दोषों का निवारण

वास्तु के अनुसार अगर भवन, घर का निर्माण करना हो यदि वहां पर बछड़े वाली गाय को लाकर बांधा जाए तो वहां संभावित वास्तु दोषों का स्वत- निवारण हो जाता है। वह कार्य निर्विघ्न पूरा होता है और समापन तक आर्थिक बाधाएं नहीं आतीं। गाय के रूप में पृथ्वी की करुण पुकार और विष्णु से अवतार के लिए निवेदन के प्रसंग बहुत प्रसिद्ध हैं। 'समरांगण सूत्रधार' जैसा प्रसिद्ध वृहद् वास्तु ग्रंथ गो रूप में पृथ्वी-ब्रह्दि के समागम-संवाद से ही आरंभ होता है। वास्तुग्रंथ 'मयमतम' में कहा गया है कि भवन निर्माण का शुभारंभ करने से पूर्व उस भूमि पर ऐसी गाय को लाकर बांधना चाहिए जो सवत्सा या बछड़े वाली हो। शास्त्रों में लिखा हैं की जब नवजात बछड़े को जब गाय दुलारकर चाटती है तो उसका फेन भूमि पर गिरकर उसे पवित्र बनाता है और वहां होने वाले समस्त दोषों का निवारण हो जाता है। यही मान्यता वास्तुप्रदीप, अपराजितपृच्छा आदि में भी आई है। महाभारत के अनुशासन पर्व में कहा गया है कि गाय जहां बैठकर निर्भयतापूर्वक सांस लेती है, उस स्थान के सारे पापों को खींच लेती है-

निविष्टं गोकुलं यत्र श्वांस मुंचति निर्भयम।
विराजयति तं देशं पापं चास्याप कर्षति॥

यह भी कहा गया है कि जिस घर में गाय की सेवा हो, वहां पुत्र-पौत्र, धन, विद्या, सुखादि जो भी चाहिए, मिल सकता है। यही मान्यता अत्रिसंहिता में भी आई है। अत्रि ने तो यह भी कहा है कि जिस घर में सवत्सा धेनु नहीं हो, उसका मंगल-मांगल्य कैसे होगा?

गाय का घर में पालन करना बहुत लाभकारी है। ऐसे घरों में सर्वबाधाओं और विघ्नों का निवारण हो जाता है। जिस घर में गाय रहती है उसमें रहने वाले बच्चों में भय नहीं रहता। विष्णु पुराण में कहा गया है कि जब श्रीकृष्ण पूतना के दुग्धपान से डर गए तो नंद दंपती ने गाय की पूंछ घुमाकर उनकी नजर उतारी और भय का निवारण किया। सवत्सा गाय के शकुन लेकर जाने से कार्य सिद्ध होता है। पद्मपुराण, और कूर्मपुराण में कहा गया है कि कभी गाय को लांघकर नहीं जाना चाहिए। किसी भी साक्षात्कार, उच्च अधिकारी से भेंट आदि के लिए जाते समय गाय के रंभाने की ध्वनि कान में पड़ना शुभ है। संतान लाभ के लिए घर में गाय की सेवा अच्छा उपाय कहा गया है। शिवपुराण व स्कंदपुराण में कहा गया है कि गो सेवा और गोदान से यम का भय नहीं रहता। गाय के पांव की धूली का भी अपना महत्व है। यह पाप विनाशक है, ऐसा गरुड़पुराण और पद्मपुराण का मत है।

क्लेशों से मुक्ति दिलाता विश्रांति घाट

श्री कृष्ण ने स्नान कर किया था विश्राम

ततो विश्रांति तीर्थाख्यं तीर्थमहो विनाशनम। संसारमरू संचार क्लेश विश्रांतिदं नृणाम।

संसार रूपी मरूभूमि में भटकते हुए, त्रितापों से पीड़ित हर तरह से निराश्रित, विविध क्लेशों से क्लांत होकर जीव श्री कृष्ण के इस महातीर्थ में स्नान कर विश्राम अनुभव करता है इसलिए इस तीर्थ का नाम विश्रांति या विश्राम घाट है। विश्राम घाट की संरचना दो-मंजिली है। इसे बनाने के लिए लखोरी ईंट व चूने, लाल एवं बलुआ पत्थर का इस्तेमाल किया गया है। घाट को बुर्ज व खंभों पर बने अर्द्ध-गोलाकार, कांटेदार मेहराबों से सुसज्जित किया गया है। घाट का मध्य क्षेत्र खिले हुए आकर्षक रंगों से सजा हुआ है। यह तीन तरफ से मठों से घिरा हुआ है व चौथी तरफ सीढियां नदी में उतर रही हैं। मध्य क्षेत्र में संगमरमर से निर्मित श्री कृष्ण व बलराम की मूर्तियां नदी की ओर मुख करके स्थापित हैं। मूर्तियों के सामने पांच विभिन्न आकार के मेहराब हैं। बीच का मेहराब पत्थर के कुर्सी आधार व पत्थर के छोटे स्तंभ से निर्मित आयताकार है, जबकि नदी की तरफ वाले मेहराब ऊपरी मंजिल का सहारा लेकर छतरी की आकृति बनाते हैं। यहां अनेक संतों ने तपस्या की एवं अपना विश्राम स्थल बनाया। उक्त घाट पर भारत के धर्मभीरू राजाओं ने तुलादान (एक पलड़े में स्वयं व दूसरे में अपने वजन के सोना-चांदी जवाहरात) किए थे। तुला को लटकाने के मेहराब आज भी लगे हैं। विश्राम घाट के उत्तर में 12 और दक्षिण में 12 घाट हैं। दक्षिण दिशा के घाटों पर समाधियां जिनमें शंकरजी के मंदिर हैं। ये समाधियां सिंधिया परिवार से संबंधित हैं। देखभाल के अभाव में उक्त समाधियां जीर्ण-शीर्ण अवस्था में पहुंच गई हैं। उत्तर दिशा के घाटों में गणेशतीर्थ घाट है, चक्रतीर्थ, कृष्णगंगा, स्वामीघाट, असिकुंड तीर्थ आदि हैं। जब शिवाजी महाराज आगरा किले से औरंगजेब की कैद से निकले तब मां जगदंबा (महाविद्या) की पूजा-अर्चना करके स्वर्ण छत्र चढ़ाया। तत्पश्चात गणेशजी का पूजन कर सीधे महाराष्ट्र के प्रतापगढ़ के लिए प्रस्थान किया। गणेशजी व मां जगदंबा के मंदिर आज भी उक्त स्थलों पर हैं। भगवान श्री कृष्ण ने कंस का वध कर इस स्थान पर विश्राम किया था इसलिए यहां की महिमा अपरंपार है। कहा जाता है कि भगवान श्रीकृष्ण ने महाबलशाली कंस को मारकर ध्रुव घाट पर उसका अंत्येष्टि संस्कार करवाकर बंधु-बांधवों के साथ यमुना के इस पवित्र घाट पर स्नान कर विश्राम किया था। किंतु भगवान से भूले-भटके जन्म-मृत्यु के अनंत, अथाह सागर में डूबते-उबरते हुए क्लांत जीवों के लिए यह अवश्य ही विश्राम का स्थान है।

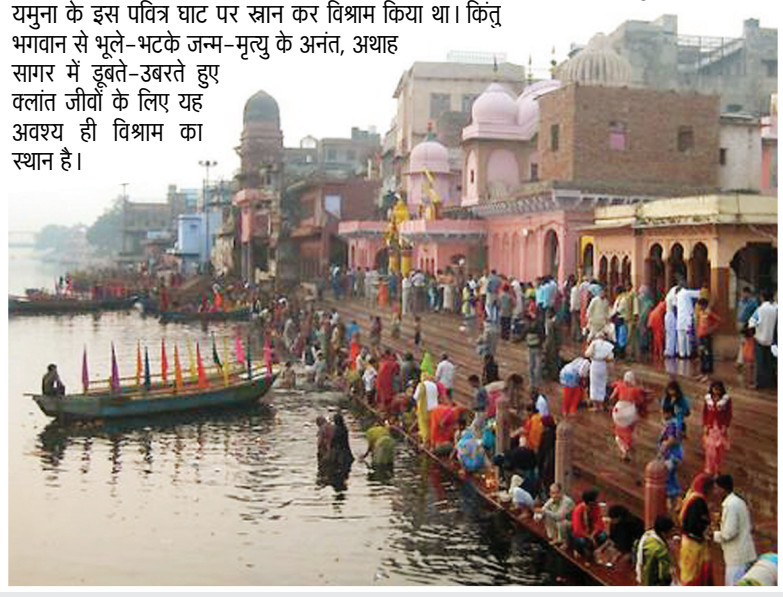

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

भ्रष्टाचार प्रतियोगिता में

&

भ्रष्टाचार की जानकारी देने

National Rights Group Youtube Channel

krantisamay@gmail.com

9879141480

fight against corruption india

भारत में भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई

नाइजीरिया में गिरी स्कूल की बिल्डिंग, 22 छात्रों की मौत, कई घायल

-रेस्क्यू टीम ने तुरंत मौके पर पहुंचकर 132 लोगों को मलबे से निकाला

नाइजीरिया। नाइजीरिया में अचानक एक स्कूल की बिल्डिंग गिरने से 22 छात्रों की मौत हो गई। बिल्डिंग के मलबे में कुल 154 लोग फंसे हुए थे। हालांकि मौके पर रेस्क्यू टीम ने ज्यादातर लोगों को बचा लिया है। राहत और बचाव कर्मियों ने अपनी सूझबूझ का परिचय देते हुए फंसे 154 लोगों में से 132 लोगों को रेस्क्यू ऑपरेशन कर बाहर निकाल लिया है और उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक नाइजीरिया नेशनल इमरजेंसी मैनेजमेंट एजेंसी ने एक फेसबुक पोस्ट में बताया कि इस घटना में घायल 30 लोग अभी भी अस्पताल में भर्ती हैं, जिनका इलाज चल रहा है। घटना स्थल पर राहत और बचाव कार्य को पूरा कर लिया गया है और वहां अब कोई भी मलबे में फंसा हुआ नहीं है। रिपोर्ट में बताया गया है कि नाइजीरिया के सैंट एकेडमी स्कूल की दो मंजिला बिल्डिंग भरभरा कर ढह गई। तब स्कूल के छात्र पढ़ाई कर रहे थे। अफ्रीका के देशों में इमारत गिरने की घटना कोई नई नहीं है। इसके पीछे वजह है एक तो अफ्रीका के देशों में जो बिल्डिंग बनाने के मानक हैं, वो लचीले हैं, साथ ही सुरक्षा को लेकर भी वहां सजगता नहीं है। इसके अलावा वहां के देशों में भवन बनाने में जिस मटेरियल का इस्तेमाल किया जाता है, उसकी गुणवत्ता भी निम्न स्तर की होती है। इस वजह से बिल्डिंग बेजान रहती है और हादसे का कारण बनती हैं।

सोमालिया में सुरक्षाबलों और कैदियों के बीच गोलीबारी...पांच की मौत

मोगादिशु । सोमालिया की राजधानी मोगादिशु में सुरक्षाबलों और भागने का प्रयास कर रहे कैदियों के बीच भारी गोलीबारी हुई। घटना में पांच कैदियों और तीन सैनिकों की मौत हो गई, जबकि 18 अन्य कैदी घायल हुए हैं। रिपोर्ट के अनुसार, कस्टोडियल कोर कमांड के प्रवक्ता अब्दिकानी मोहम्मद खलफ ने बताया कि ऑपरेशन के दौरान तीन सैनिक भी घायल हुए हैं। सेंट्रल जेल से भागने का प्रयास कर रहे हथियारों से लैस कैदी अल-शबाब आतंकवादी समूह के सदस्य थे। जेल से भागने के प्रयास के दौरान जेल अधिकारियों और कैदियों के बीच गोलीबारी हुई। जेल अधिकारियों ने कहा कि वे इस बात की जांच कर रहे हैं कि कैदियों ने भागने के लिए हथियार और हथगोले कैसे हासिल किए। रिपोर्ट के अनुसार, अधिकारियों ने बताया कि सुरक्षा बलों ने अल-शबाब सदस्यों के खिलाफ अभियान पूरा कर लिया है। फिलहाल स्थिति शांत है और सुरक्षा बलों ने सभी पांच कैदियों को मार गिराया है।

वियतनाम के उत्तरी पहाड़ी इलाके में भूस्खलन से 11 लोगों की मौत

हनोई, । वियतनाम के उत्तरी प्रांत हा गियांग में भूस्खलन से दबकर एक मिनीबस में सवार कम से कम 11 लोगों की मौत हो गई, जबकि चार अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। यह जानकारी वियतनाम समाचार एजेंसी ने दी। एजेंसी ने कहा कि शनिवार सुबह बाक मी जिले में एक सड़क पर भूस्खलन के कारण वाहन फंस गया तो उसमें सवार सभी लोग मदद के लिए बाहर निकल आए। बताया जा रहा है कि मिनीबस में लगभग 16 लोग सवार थे। ऊपर से हजारों घन मीटर मिट्टी सड़क पर आ गई, जिससे सभी लोग दब गए। नेशनल सेंटर फॉर हाइड्रोमेटोरोलॉजिकल फोरकास्टिंग के अनुसार, जिस क्षेत्र में दुर्घटना हुई, वहां शुक्रवार शाम 7 बजे से शनिवार सुबह 7 बजे तक 280-290 मिमी बारिश दर्ज की गई। सामान्य सांख्यिकी कार्यालय ने कहा कि वियतनाम में प्राकृतिक आपदाओं में इस वर्ष के पहले छह महीनों में 68 लोग मारे गए या लापता हो गए और 56 अन्य घायल हुए, इसने कहा कि कुल संपत्ति का नुकसान 1.7 ट्रिलियन वियतनामी डोंग (6.69 करोड़ अमेरिकी डॉलर) से ज्यादा हुआ, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 2.5 गुना अधिक है।

काठमांडू के होटल से 20 करोड़ की कोकीन के साथ मलेशियाई महिला गिरफ्तार

काठमांडू। नेपाल पुलिस की नारकोटिक्स विभाग ने काठमांडू के एक होटल में छापा मार कर 5 किलोग्राम 820 ग्राम कोकीन के साथ एक मलेशियाई महिला को गिरफ्तार किया है। बरामद कोकीन की अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमत 20 करोड़ 36 लाख रुपये आंकी गई है। नारकोटिक्स विभाग के एसएसपी दिनेश आचार्य ने रविवार को बताया कि गुप्त सूचना के आधार पर सिटी होटल में छापा मारकर 47 वर्षीय मलेशियाई महिला बाथुमालाई भाडुभाली को 5 किलोग्राम 820 ग्राम कोकीन के साथ गिरफ्तार किया गया है। यह ड्रग्स तंजानिया से मलेशिया होते हुए नेपाल लाया गया जहां इसकी डिलवरी भारत के किसी शख्स को करनी थी। नेपाल की पुलिस गिरफ्तार मलेशियाई महिला से पूछताछ में जुटी है।

चीन में हेपेटाइटिस बी और संबंधित कैंसर के मामलों में गिरावट

बीजिंग। चीन में हेपेटाइटिस बी और संबंधित हेपैटोसेलुलर कार्सिनोमा के आयु-मानकीकृत मामले साल दर साल घट रहे हैं। आंकड़ों के अनुसार चीन के हेपेटाइटिस बी की रोकथाम और नियंत्रण कार्य में हाल के वर्षों में सकारात्मक प्रगति हासिल हुई है। यह जानकारी हेपेटाइटिस बी के उन्मूलन में तेजी लाने पर शैक्षणिक सम्मेलन-2024 से मिली। चीनी राष्ट्रीय स्वास्थ्य आयोग के उप निदेशक और चीनी निवारक चिकित्सा संघ के अध्यक्ष ली पिन ने कहा कि हेपेटाइटिस बी सबसे अधिक वैश्विक बीमारी बोझ वाले संक्रामक रोगों में से एक है और चीन के सामने एक महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्वास्थ्य मुद्दा भी है। 2016 में विश्व स्वास्थ्य सभा ने 2030 तक सार्वजनिक स्वास्थ्य खतरे के रूप में वायरल हेपेटाइटिस को खत्म करने का लक्ष्य प्रस्तावित किया था। चीन ने हेपेटाइटिस बी वैक्सीन टीकाकरण कवरेज, नए हेपेटाइटिस बी वायरस संक्रमण के नियंत्रण और हेपेटाइटिस बी से संबंधित हेपेटोसेलुलर कार्सिनोमा की रोकथाम और नियंत्रण में उल्लेखनीय प्रगति हासिल की है। चीन इंजीनियरिंग अकादमी के सदस्य ज्वांग ह्वी ने कहा कि अगला कदम हेपेटाइटिस बी के निदान और उपचार दरों में सुधार जारी रखना है।

इजरायल ने सीरिया की राजधानी में स्थलों को निशाना बनाया

दमिश्क। इजरायल ने रविवार की आधी रात को सीरिया की राजधानी दमिश्क में सिलसिलेवार हमला करते हुए कई ठिकानों को निशाना बनाया, जिससे पूरे शहर विस्फोट से गूंज उठा। सीरियाई राज्य टीवी ने कहा कि सीरियाई हवाई सुरक्षा दमिश्क के ग्रामीण इलाकों में इजरायली हमले को रोक रही है। सीरियाई वायु रक्षा मिसाइलों की लगातार आवाज के बीच इस बार का हमला सामान्य हमलों से बड़ा था। राजधानी के कुछ हिस्सों में एम्बुलेंस के सायरन सुने गए। सीरियन ऑब्जर्वेटरी फॉर ह्यूमन राइट्स ने कहा कि यह हमला बहुत हिंसक था।

पति को हुआ पत्नी पर शक तो ड्रोन से करवाई जासूसी, खुला राज

बीजिंग। पति-पत्नी का रिश्ता गाड़ी के दो पहियों की तरह होता है एक खराब होता है गाड़ी नहीं चलती है। इनका रिश्ता भी पाक और साफ होता है लेकिन कुछ लोग होते हैं जो अपने जीवन साथी पर शक करते हैं और अपने साथ-साथ उसका का जीवन नरक बना देते हैं। अपने जीवन साथी पर शक होने पर जासूसी करवाने का चलन सदियों पुराना है। ऐसा आज भी होता है। चीन के एक शख्स ने तो हद ही कर दी जब उसने अपनी पत्नी पर शक होने पर निगरानी के लिए आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल किया। इतना ही नहीं पड़ताल में जो उसे दिखा वह उसके लिए चौंकाने और निराश करने वाला था लेकिन यह पूरा मामला सोशल मीडिया पर ट्रेंड हो गया। चीन के हुबेई प्रांत के शियान में रहने वाले 33 साल के जिंग ने देखा कि पिछले एक साल से उसकी पत्नी का उसके लिए बर्ताव रूखा हो गया था। एक रिपोर्ट के मुताबिक जिंग ने कहा कि कभी-कभी वह जानबूझकर उसे अनदेखा कर देती थी। वही कई बार बाहर जाने लगी थी और कहने लगी थी कि वह अपने माता-पिता से मिलने जा रही है। ऐसी घटनाओं ने उसने उसकी चिंता बढा दी। उसकी पत्नी के जीवन में कई असामान्य घटनाएं जैसे कि काम में बदलाव और झूठ बोलकर बाहर जाना जिंग की चिंताओं को बढ़ा दिया। जिंग ने अपनी पत्नी की गतिविधियों पर नज़र रखने ड्रोन का इस्तेमाल किया। फुटेज से पता चला कि पत्नी वू एक कार में बैठ कर दूर पहाड़ों पर चली गई। वहां वह एक दूसरे शख्स के साथ हाथ पकड़कर चलने लगी और एक पुराने घर में चली गई।

यरुशलम में इज़राइल और हमास के बीच चल रहे संघर्ष के बीच, तत्काल युद्ध विराम और गाजा में बंधक बनाए गए इज़राइली बंधकों की रिहाई की मांग करते हुए विरोध प्रदर्शन करते लोग।

जख्मी ट्रंप ने भरी हुंकार! बोले- हार नहीं मानूंगा, चुनाव प्रचार जारी रहेगा

वाशिंगटन। गोली लगने से लहुलुहान हुए अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपने समर्थकों को हौंसला बढ़ाते हुए कहा है कि मैं खुद को सरेंडर नहीं करुंगा और चुनाव प्रचार लगातार चलता रहेगा। ट्रंप ने अपने समर्थकों को भेजे एक संक्षिप्त ईमेल मैसेज में वादा किया कि चाहे कुछ भी हो जाए, वे अपना प्रेसिडेंट कैंपेन जारी रखेंगे। डोनाल्ड ट्रंप ने कहा, मैं कभी भी सरेंडर नहीं करूंगा!डोनाल्ड ट्रंप पर गोलीबारी की इस घटना का वीडियो इंटरनेट पर वायरल है, जिसमें देखा जा सकता है कि वो भाषण दे रहे हैं, तभी गोलियां चलने लगती हैं। डोनाल्ड ट्रंप अपने दाहिने हाथ से कान को ढकते हैं और डायस के पीछे झुक जाते हैं। सीक्रेट सर्विस के एजेंट्स तुरंत उनके पास पहुंचते हैं। ट्रंप डायस के पीछे से उठते हैं और रैली में आए लोगों की ओर मुट्ठी भींचकर साहस का संदेश देते हैं। उनके दाहिने कान और चेहरे पर खून नजर आ रहा है। इस हमले के बाद ट्रंप ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म ट्रूथ सोशल पर पहली प्रतिक्रिया दी है। यूएस सीक्रेट सर्विस के प्रवक्ता एंथनी गुग्लिल्मी के अनुसार, घटना स्थानीय समय के मुताबिक, शाम करीब 6:15 बजे हुई जब संदिग्ध शूटर ने रैली स्थल के बाहर एक ऊंचे स्थान से मंच की ओर कई गोलियां चलाईं। उन्होंने कहा, यूएस सीक्रेट सर्विस के एजेंट्स ने हमलावर को मार गिराया। पूर्व राष्ट्रपति ट्रंप सुरक्षित हैं। इस हमले में एक व्यक्ति की मौत हो गई और दो गंभीर रूप से घायल हैं। घटना की जांच चल रही है और सीक्रेट सर्विस ने एफबीआई को इस बारे में सूचित कर दिया है। यह चौंकाने वाली घटना मिल्वौकी में रिपब्लिकन नेशनल कन्वेंशन की शुरुआत से दो दिन पहले हुई, जहां डोनाल्ड ट्रंप औपचारिक रूप से पार्टी के उम्मीदवार बनेंगे। बीवर काउंटी रिपब्लिकन पार्टी के उपाध्यक्ष रिको एल्मोर ट्रंप के सामने विशेष अतिथियों के लिए बने सेक्शन में बैठे थे, तभी उन्हें पटाखों जैसी आवाज सुनाई दी। एल्मोर ने बताया, हर कोई हैरान था और ऐसा लगा कि नहीं कि ये असली गोलियां चली हैं।

गोलीबारी में ट्रंप घायल, हमलावर मारा गया

-खूना खून हुए पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति- 50 फिट दूर छत पर बैठे युवक ने गोली मारी

-ट्रंप ने कहा- मेरे दाहिने कान के ऊपरी हिस्से में लगी गोली

वाशिंगटन, (एजेंसी)। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डॉनाल्ड ट्रंप को 50 फिट दूर छत पर बैठे एक युवक ने गोली मार दी। उनके कान को चीरती हुई निकली गोली से वे खूना खून हो गए। ट्रंप पर हमला उस वक्त हुआ जब वे पेंसिलवेनिया में एक रैली को संबोधित कर रहे थे। हमले के बाद सुरक्षाकर्मीयों ने कुछ ही मिनटों के अंदर बिल्डिंग की छत पर बैठे हमलावर को मार गिराया, और जगह कि छानबीन शुरू कर दी है। वहां मौजूद प्रत्यक्षदर्शीयों के मुताबिक करीब 3 से 4 राउंड गोली ट्रंप की तरफ चलाई गई। जिसमें हमलावर के अलावा एक व्यक्ति की भी मौत हुई है जबकि एक अन्य घायल है। फिलहाल मृत हमलावर या उससे जुड़े अन्य के बारे में कोई विशेष जानकारी सामने नहीं आई है। जैसे ही ट्रंप पर हमला हुआ, सीक्रेट सर्विसेज के सुरक्षाबलों ने उन्हें चारों तरफ से घेर लिया और उन्हें सुरक्षित जगह पर ले गए। ट्रंप पर तब हमला हुआ, जब वे बटलर में अपने समर्थकों को संबोधित कर रहे थे, ये कार्यक्रम कई न्यूज चैनल्स पर लाइव भी जा रहा था। ट्रंप के भाषण के दौरान सातवें मिनट में उनके ऊपर ये हमला हुआ।

पुलिस को पता था कि हमलावर छत पर है

एक गवाह ने दावा किया कि उसने डोनाल्ड ट्रंप पर गोली चलाने वाले शख्स को देखा था, जब वह अपनी कैंपेन रैली कर रहे थे। शख्स ने ईवेंट ग्राउंड के नजदीक स्थित एक बिल्डिंग की छत से डोनाल्ड पर हमला किया था। ग्रेग ने बताया कि शूटर के पास राइफल था और वो बिल्डिंग की छत तक पहुंच गया था। उन्होंने कहा, वह व्यक्ति हमसे 50 फीट दूर इमारत में रेंगकर आया। उसके पास एक राइफल थी। उन्होंने कहा कि पुलिस और सीक्रेट सर्विस को इसकी जानकारी दी है कि एक संदिग्ध आदमी छत पर राइफल के साथ मौजूद है। उन्होंने बताया, मैं खुद में यह सोच रहा था कि ट्रंप अभी तक क्यों बोल रहे हैं और अभी तक उन्हें स्टेज से हटाया क्यों नहीं गया है... .और तभी एक दम से पांच बार गोली चलने की आवाज आती है।

फायरिंग का वीडियो सामने आया, बाइडन दिया देश के नाम संदेश

डोनाल्ड ट्रंप की रैली पर हुई फायरिंग का वीडियो आ चुका है। इसमें दिख रहा है ट्रंप रैली को संबोधित कर रहे हैं। उसी वक्त गोलियों की तड़तड़ाहट गूंजने लगती है। कुछ सेकंड्स के अंतराल पर ट्रंप अपने कान को छूते हैं और पोडियम के पीछे बैठ जाते हैं। इसके बाद रैली में चीख-पुकार और हंगामा मच जाता है। वहीं, सुरक्षा में तैनात जवान भागकर ट्रंप के पास पहुंचते नजर आते हैं। इसके बाद ट्रंप को सुरक्षित उनके वाहन तक ले जाया जाता है। हालांकि ट्रंप के कान पास से खून बहता नजर आ रहा है। अपने वाहन की तरफ जाते हुए ट्रंप रुकते हैं और भीड़ की तरफ मुट्ठी बांधकर हवा में पंच करते हैं। इस दौरान वह कुछ कहते भी नजर आते हैं, जो स्पष्ट नहीं होता है। वहीं दूसरी तरफ घटना के बाद अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने भी देश के नाम अपने संबोधन में कहा कि उन्होंने ट्रंप के चिकित्सकों से बात की है और वो ठीक ठाक हैं। उन्होंने ये भी कहा कि अमेरिका में इस तरह की हिंसा बर्दाश्त नहीं की जाएगी। बता दें, रिपब्लिकन पार्टी का उम्मीदवार घोषित किए जाने से ठीक एक दिन पहले पूर्व राष्ट्रपति पर गोलियां चलाई गईं।

तेज आवाज सुनते ही मुझे गड़बड़ी का हुआ अंदेशा - ट्रंप

डोनाल्ड ट्रंप ने ट्रुथ सोशल पर पोस्ट करते हुए लिखा था, मुझे एक गोली मारी गई जो मेरे दाहिने कान के ऊपरी हिस्से में लगी। ट्रम्प ने कहा, मुझे तुरंत पता चल गया कि कुछ गड़बड़ है, क्योंकि मैंने एक तेज आवाज, गोली की आवाज सुनी और तुरंत महसूस किया कि गोली त्वचा को चीरती हुई निकल गई है। अमेरिकी सीक्रेट सर्विस ने कहा कि डोनाल्ड ट्रंप पर स्पष्ट रूप से हत्या का प्रयास किया गया है, जिसमें रैली स्थल के बाहर एक ऊंचे स्थान से मंच की ओर कई गोलियां चलाई गईं और इसमें शूटर की मौत हो गई है। हमले के बारे में ट्रंप ने बताया, मुझ पर गोली चलाई गई, जो मेरे कान के ऊपरी हिस्से को चीरती हुई निकल गई।

ट्रंप पर जानलेवा हमला... मस्क ने सीक्रेट सर्विस प्रमुख चीटल का इस्तीफा मांगा

वाशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के ऊपर पेंसिल्वेनिया में जानलेवा हमला हुआ। ट्रंप यहां रैली को संबोधित कर रहे थे, तभी एक शूटर ने दूर एक बिल्डिंग की छत से गोलियां चलाई। एक गोली ट्रंप को छूते हुए निकली। ट्रंप तुरंत झुककर नीचे बैठ और इसके साथ ही उनकी सुरक्षा में लगे सीक्रेट सर्विस के एजेंट ने उन्हें घेर लिया। कुछ ही पल बाद जब ट्रंप को सीक्रेट सर्विस के एजेंट ने उठाया तब उन्होंने मुट्ठी हवा लहराई। उनके चेहरे पर खून लगा दिखाई दे रहा था। ट्रंप पर हमले की खबर पूरी दुनिया में तेजी से फैली लेकिन अमेरिका में इसके बाद एक बहस छिड़ गई है। ट्रंप की सुरक्षा को लेकर सवाल खड़े हो रहे हैं कि आखिर पूर्व सीक्रेट सर्विस के रहते राष्ट्रपति पर जानलेवा हमला कैसे हुआ, जिसमें उन्हें गोली छू गई। पूर्व राष्ट्रपति ट्रंप पर हमले को लेकर अमेरिकी सीक्रेट सर्विस की प्रमुख भी निशाने पर हैं।

अमेरिका में राष्ट्रपति और पूर्व राष्ट्रपतियों की सुरक्षा की जिम्मेदारी सीक्रेट सर्विस के ऊपर होती है। सीक्रेट सर्विस को अमेरिका में बेहद ही चुस्त सुरक्षा एजेंसी माना जाता है, लेकिन ट्रंप पर हमले के बाद इस लेकर सवाल उठ रहे हैं। हमले के बाद अमेरिकी कांग्रेस के हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव के पैनल ने सीक्रेट सर्विस प्रमुख किंबर्ली ए चीटल को बयान देने के लिए पेश होने को कहा है। किंबर्ली को 22 जुलाई को अपनी गवाही देनी होगी।

हाउस स्पीकर माइक जॉनसन ने कहा कि सांसद ट्रंप की रैली में हुई गोलीबारी की पूरी जांच करने वाले हैं। सोशल मीडिया पर पोस्ट में जॉनसन ने कहा कि सदन के सांसद जल्द से जल्द समिति की सुनवाई में सीक्रेट सर्विस डायरेक्टर चीटल के साथ-साथ होमलैंड सिक्योरिटी विभाग और संघीय जांच ब्यूरो के अधिकारियों की गवाही लेने वाले हैं। उन्होंने कहा, अमेरिकी लोगों को सच्चाई जानने का हक है। हाउस ओवरसाइट कमेटी के अध्यक्ष जेम्स कॉमर ने चीटल को लिखा पत्र पोस्ट किया, जिसमें उन्हें 22 जुलाई को सुनवाई में उपस्थित होने के लिए कहा गया था। पूर्व राष्ट्रपति ट्रंप पर हमले के प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि उन्होंने सीक्रेट सर्विस को हमलावर के बारे में जानकारी दी थी।एक प्रत्यक्षदर्शी ने कहा कि उसने एक राइफलधारी स्नाइपर को बिल्डिंग की छत पर जाते देखा था। शख्स ने बताया कि आप उसे राइफल के साथ साफ देख सकते थे। हमने उसकी तरफ इशारा भी किया लेकिन पुलिस ने ध्यान नहीं दिया। प्रत्यक्षदर्शी का इंटरव्यू शेयर कर दिग्गज टेक मुगल और टेस्ला सीईओ एलन मस्क ने चीटल के इस्तीफे की मांग की। उन्होंने लिखा, सीक्रेट सर्विस की प्रमुख और इस सुरक्षा दल के लीडर को इस्तीफा दे देना चाहिए।

उत्तर कोरिया को दक्षिण कोरिया की चेतावनी, परमाणु हथियार का इस्तेमाल किया तो प्योंगयांग शासन को कर देंगे तबाह

सोल (एजेंसी)। दक्षिण कोरिया ने रविवार को चेतावनी दी कि यदि उत्तर कोरिया ने परमाणु हथियारों का इस्तेमाल किया तो वह पड़ोसी देश के शासन को तबाह कर देगा।

समाचार एजेंसी योनहाप की खबर के अनुसार, दक्षिण कोरिया के रक्षा मंत्रालय ने एक बयान में कहा, 'हम कड़ी चेतावनी देते हैं कि परमाणु हथियारों के इस्तेमाल के बाद उत्तर कोरिया के शासन के बचने की कोई सूरत ही नहीं होगी।÷ सोल की तरफ से यह बयान उत्तर कोरिया के शनिवार को जारी एक बयान की प्रतिक्रिया में दिया गया है।

प्योंगयांग ने दक्षिण कोरिया और अमेरिका के 'कोरियाई प्रायद्वीप में परमाणु ऑपरेशन और परमाणु निषेध के बारे में दिशा-निर्देश' जारी करने की आलोचना करते हुए इसे 'उकसावे की कार्रवाई÷ बताया था। उत्तर कोरिया ने कहा था कि सोल और वाशिंगटन को इसकी भारी कीमत चुकानी होगी। दिशा-निर्देशों पर हस्ताक्षर की तारीफ करते हुए दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति यून सुक-योल और अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने चेतावनी दी थी कि उत्तर कोरिया की तरफ से दक्षिण कोरिया के खिलाफ किसी भी परमाणु हमले के खिलाफ त्वरित, कठोर और निर्णायक कार्रवाई की जाएगी।

दक्षिण कोरियाई रक्षा मंत्रालय ने आज जारी एक बयान में कहा, 'अव्वल तो, उत्तर कोरिया की तरफ से परमाणु खतरा नहीं होता तो इस संयुक्त दिशा-निर्देश की जरूरत ही नहीं होती। उत्तर कोरिया की बढ़ती परमाणु क्षमता और परमाणु धमकियों के मद्देनजर दक्षिण कोरिया-अमेरिका संगठन द्वारा उठाया गया यह कदम उचित है।÷ मंत्रालय ने कोरियाई प्रायद्वीप में बढ़ते तनाव के लिए उत्तर कोरियाई शासन को जिम्मेदार ठहराया है।

उसने कहा, 'अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के विरोध और उत्तर कोरिया के लोगों की पीड़ाओं के बावजूद प्योंगयांग प्रशासन अवैध रूप से परमाणु मिसाइल बनाना जारी रखे हुए है। उत्तर कोरिया के इस साल अप्रैल में परमाणु प्रतिघात से मिलते-जुलते रॉकेट ड्रिल के बाद भी दक्षिण कोरियाई रक्षा मंत्रालय ने इसी तरह की चेतावनी दी थी।

बाइडन ने रिजॉल्व तिब्बत एक्ट पर हस्ताक्षर किए, चीन का नाराज होना तय

- चीन पहले ही रिजॉल्व तिब्बत एक्ट को अस्थिरता पैदा करने वाला कानून बता चुका है

वॉशिंगटन(एजेंसी)। अमेरिका ने तिब्बत पर बड़ा कदम उठाया है जिससे चीन का नाराज होना तय माना जा रहा है। राष्ट्रपति जो बाइडन ने रिजॉल्व तिब्बत एक्ट पर हस्ताक्षर कर दिया है, जिसके बाद यह विधेयक अब कानून बन गया है। इस तरह अमेरिका ने तिब्बती लोगों के प्रति अपना समर्थन बढ़ाया है। अमेरिका ने चीन और तिब्बती धर्मगुरु दलाई लामा के बीच संवाद बढ़ाने पर जोर दिया है, ताकि अनसुलझे विवाद को सुलझाया जा सके। बता दें कि चीन ने पहले ही रिजॉल्व तिब्बत एक्ट का विरोध करते हुए इसे अस्थिरता पैदा करने वाला कानून बता चुका है। चीन तिब्बत को अपना हिस्सा मानता है। दूसरी तरफ, तिब्बती लोग चीनी कब्जे का लगातार विरोध करते रहे हैं। दरअसल, राष्ट्रपति जो बाइडन ने तिब्बत के लिए अमेरिकी समर्थन बढ़ाने और इसके दर्जे एवं शासन से संबंधित विवाद को शांतिपूर्ण तरीके से सुलझाने के लिए बातचीत को बढ़ावा देने की वकालत की है। अमेरिका के इस स्टैंड का चीन शुरू से ही विरोध करता रहा है। अमेरिका चीन और तिब्बती धर्मगुरु एवं नेता दलाई लामा के बीच संवाद को बढ़ावा देने संबंधी एक विधेयक पर हस्ताक्षर किए हैं, जिसके बाद यह एक कानून बन गया है। इसे रिजॉल्व तिब्बत एक्ट का नाम दिया गया है। चीन रिजॉल्व तिब्बत एक्ट का विरोध करते हुए इसे अस्थिरता पैदा करने वाला कानून बताया था। पिछले साल फरवरी में हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव ने जबकि इस साल मई में सीनेट ने इस विधेयक को पास कर दिया था। राष्ट्रपति बाइडन ने हाल ही में जारी किए गए एक बयान में कहा कि आज, मैंने एस 138, 'तिब्बत-चीन विवाद समाधान को बढ़ावा देने वाला अधिनियम' पर हस्ताक्षर किए हैं। मैं तिब्बतियों के मानवाधिकारों को बढ़ावा देने और उनकी भाषाई, सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत को सुरक्षित करने के प्रयासों का समर्थन करने के लिए संसद के दोनों सदनों की प्रतिबद्धता को शेयर करता हूं। मेरी सरकार चीन से दलाई लामा या उनके प्रतिनिधियों के साथ बिना किसी पूर्व शर्त के सीधी बातचीत फिर से शुरू करने का आह्वान करता रहेगा, ताकि मतभेदों को दूर किया जा सके और तिब्बत पर बातचीत के जरिए समझौता किया जा सके।

ट्रंप पर हमला लोकतंत्र के समक्ष राजनीतिक हिंसा से उत्पन्न खतरे की 'गंभीर चेतावनी' है: अमेरिकी मीडिया

वाशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिकी मीडिया ने पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप पर हुए हमले को रविवार को ''भयावह क्षण'' करार दिया और कहा कि यह देश में लोकतंत्र के समक्ष राजनीतिक हिंसा से उत्पन्न होने वाले खतरे की ''गंभीर चेतावनी'' है।

ट्रंप (78) पर शनिवार को पेनसिल्वेनिया में एक चुनावी रैली के दौरान एक युवा हमलावर ने गोली चलाई, जो उनके दाहिने कान के ऊपरी हिस्से में लगी। 'द न्यूयॉर्क टाइम्स' ने कहा कि शनिवार को अमेरिकियों को हमारे लोकतंत्र के समक्ष मौजूद राजनीतिक हिंसा के खतरे की चेतावनी मिली।

समाचार पत्र ने कहा, ''अब दोनों दलों के नेताओं और व्यक्तिगत व सामूहिक रूप से अमेरिकियों की यह जिम्मेदारी है कि वे हिंसा और इसे बढ़ावा देने वाले भड़काऊ बयानों का विरोध करें। अमेरिकियों को भी इस चुनौती के बारे में स्पष्ट रूप से सोचना चाहिए जिसका सामना यह देश कर रहा है। शनिवार की घटना को अपवाद नहीं माना जा सकता। हिंसा अमेरिकी राजनीति को संक्रमित व प्रभावित कर रही है।'' 'द वॉल स्ट्रीट जनरल' ने कहा कि हत्या का प्रयास अमेरिका के लिए एक भयावह क्षण है जो इससे भी बदतर हो सकता था, लेकिन हम यह नहीं कह सकते कि यह पूरी तरह से आश्चर्यजनक है। समाचार पत्र ने कहा कि राजनीतिक शत्रुता और घृणास्पद बयानबाजी एक ऐसे स्तर पर पहुंच गई है, जिसकी वजह से अमेरिका में हिंसा व हत्या के प्रयास हुए हैं और हममें से कुछ लोगों को अब भी 1968 की घटना अच्छी तरह याद है। हमलावर अपने किए के लिए खुद ही जिम्मेदार है, लेकिन दोनों पक्षों के नेताओं को चुनाव के दौरान भड़काऊ बातें कहनी बंद कर देनी चाहिए, अगर कोई एक उम्मीदवार चुनाव जीत जाता है तो लोकतंत्र खत्म नहीं होगा। समाचार पत्र ने कहा, ''अगर ट्रंप जीतते हैं तो देश में तानाशाही नहीं आ जाएगी।'' सीएनएन ने एक लेख में कहा कि एक पूर्व राष्ट्रपति और नवंबर में होने वाले चुनाव में रिपब्लिकन पार्टी की ओर से नामांकन स्वीकार करने से कुछ ही दिन पहले एक चुनावी रैली में ट्रंप को निशाना बनाया जाना निश्चित रूप से लोकतंत्र और अपना नेता चुनने के प्रत्येक अमेरिकी के अधिकार पर हमला है।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

3 लाख श्रद्धालुओं ने किए बाबा बर्फानी के दर्शन

जम्मू । अमरनाथ यात्रा में पिछले 15 दिनों में करीब तीन लाख श्रद्धालुओं ने बाबा बर्फानी के दर्शन किए हैं । रविवार सुबह 4,889 तीर्थयात्रियों का एक और जत्था कश्मीर घाटी के लिए रवाना हुआ । श्री अमरनाथजी श्राइन बोर्ड (एसएएसबी) के अधिकारियों ने कहा कि पिछले 15 दिनों के दौरान लगभग तीन लाख श्रद्धालुओं ने पवित्र गुफा के दर्शन किए हैं । 4,889 यात्री रविवार सुबह दो सुरक्षा काफिलों में भगवती नगर यात्री निवास से घाटी के लिए रवाना हुए । पहला सुरक्षा काफिला 78 वाहनों में 1,896 तीर्थयात्रियों को लेकर सुबह 3-05 बजे उत्तरी कश्मीर के बालटाल बेस कैंप के लिए रवाना हुआ । दूसरा सुरक्षा काफिला 105 वाहनों में 2,993 तीर्थयात्रियों को लेकर सुबह 3-55 बजे दक्षिण कश्मीर के नुनवान (पहलगाम) बेस कैंप के लिए रवाना हुआ । यह पवित्र गुफा कश्मीर हिमालय में समुद्र तल से 3,888 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है । इस वर्ष की यात्रा 52 दिनों के बाद 29 अगस्त को श्रावण पूर्णिमा और रक्षाबंधन त्यौहार के साथ संपन्न होगी ।

हिमाचल प्रदेश के कुछ हिस्सों में भारी बारिश, 12 सड़कें बंद

धर्मशाला । हिमाचल प्रदेश के कुछ हिस्सों में शनिवार को भारी बारिश होने के बाद 12 सड़कों को बंद कर दिया गया । अधिकारियों ने यह जानकारी दी । मौसम विभाग के अनुसार बैजनाथ में शुक्रवार शाम से 32 मिलीमीटर बारिश हुई । उसके बाद धर्मशाला (22.6 मिमी), जुब्बरहट्टी (21.5 मिमी), मनाली (20 मिमी), कांगड़ा (19.2 मिमी), जोगिंदरनगर (19 मिमी), सलोनी (18.3 मिमी), पंडोह (15.5 मिमी), पालमपुर (14.4 मिमी), पच्छाद (12 मिमी), सुजानपुर टीरा (11.5 मिमी), भरारी (11.2 मिमी) और घमतूर (10.4 मिमी) का स्थान रहा । मानसून की शुरुआत के बाद से राज्य में रुक-रुक कर बारिश हो रही है । शनिवार की शाम तक 12 सड़कें बंद हैं जिनमें मंडी में पांच, शिमला में चार और कांगड़ा जिले में तीन सड़कें हैं । मौसम कार्यालय ने 16 और 17 जुलाई को अलग-अलग स्थानों पर भारी बारिश, तूफान और बिजली गिरने के लिए येलो अलर्ट जारी किया है और 19 जुलाई तक राज्य में बारिश की भविष्यवाणी की है । लाहौल और स्पीति के केलांग में न्यूनतम तापमान 12.7 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया । हमीरपुर सबसे गर्म स्थान रहा जहां अधिकतम तापमान 35.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया ।

दिल्ली-एनसीआर समेत देश के कई राज्यों में बारिश का अलर्ट जारी

नई दिल्ली । दिल्ली समेत देश के कई राज्यों में बारिश से माहौल खुशगंवार हो गया है । इस बारिश के बाद उमस ने लोगों को परेशान कर दिया है । वहीं, देश के कई हिस्सों में भारी बारिश से आई बाढ़ से लाखों लोग बेघर हो गए हैं और लोगों का जीवन अस्त-व्यस्त हो गया है । हिमाचल प्रदेश के कुछ हिस्सों में लगातार बारिश के कारण 15 सड़कें पूरी तरह बंद हैं । मौसम विभाग ने महाराष्ट्र में कई जिलों में भी भारी बारिश का रेड अलर्ट जारी किया है । मौसम विभाग के मुताबिक आज दिल्ली में बारिश होने की संभावना है । बारिश के कारण दिल्ली के तापमान में गिरावट आ सकती है । आज दिल्ली का न्यूनतम तापमान 25-26 डिग्री रह सकता है । वहीं, अधिकतम तापमान 35 डिग्री रहने की उम्मीद है । दिल्ली-एनसीआर में अगले कुछ दिनों तक हल्की बारिश होने की संभावना है । आईएमडी ने अपने पूर्वानुमान में कहा कि 17 जुलाई तक दिल्ली और नोएडा में हल्की बारिश जारी रहेगी । आईएमडी ने पश्चिमी महाराष्ट्र के तटीय जिलों रायगढ़ और रत्नागिरी तथा कोल्हापुर और सतारा में रेड अलर्ट जारी कर 14 जुलाई को भारी बारिश की चेतावनी दी है । वहीं, ठाणे जिले के लिए ऑरेंज अलर्ट और मुंबई के लिए येलो अलर्ट जारी किया है । केरल के कई इलाकों में हो रही भारी बारिश के बीच विभाग ने कोझिकोड, कन्नूर और कासरगोड में ऑरेंज अलर्ट जारी किया है । पथनमथिट्टा, अलाप्पुझा, कोट्टयम, इडुक्की और एर्नाकुलम जिलों के कुछ स्थानों में भी तेज हवाओं के साथ हल्की बारिश होने की संभावना है ।

ज्यादा मुआवजे के लिए हाईवे पर रातों रात बन गए घर

सिंगरौली । हाईवे का निर्माण कार्य चल रहा था और यह जिले के 33 गांवों से होकर गुजरेगा । कुछ समय पहले यहां पर हरे भरे खेत दिखाई दे रहे थे लेकिन अब अचानक पूरा दृश्य बादल गया है । प्रस्तावित हाईवे पर लगभग 2,500 नए घर अचानक बन गए हैं । कृषि भूमि पर घर बनाने से ज़मीन के भुगतान की तुलना में मुआवज़ा काफी बढ़ जाता है । हालांकि खेतों में बनने वाली नए घर की दीवारें केवल 4 फुट ऊंचे हैं, जो बच्चों के लिए भी बहुत छोटी होती हैं । घर के ऊपर टिन की छत है । इसे अब स्थानीय स्तर पर 'मुआवजा उद्योग' कहा जा रहा है । इन घरों का निर्माण कथित तौर पर स्थानीय अधिकारियों और दलालों की मिलीभगत से किया जा रहा है, जिन्हें नए निर्माण या भूमि सौदों पर प्रतिबंध के बावजूद कटौती का बड़ा हिस्सा मिलेगा । मार्च में एक सर्वेक्षण के बाद मुआवजे के लिए क्षेत्र निर्धारित किए गए । प्रशासन ने अब कहा है कि नए मकानों के लिए कोई मुआवजा नहीं दिया जाएगा । चितरंगी और दुधमानिया क्षेत्रों के गांवों के ड्रोन फुटेज से हाईवे के रास्ते में बने घरों का पता चलता है, जिसका 70 किमी हिस्सा जिले से होकर गुजरेगा । निवासियों का कहना है कि दलालों ने स्थानीय प्रशासन के अधिकारियों की भागीदारी के साथ निर्माण को अंजाम दिया है । भूमि अधिग्रहण मार्च में शुरू हुआ और प्रशासन ने नए निर्माण और भूमि लेनदेन पर प्रतिबंध लगा दिया, लेकिन उसके बाद निर्माण की गति तेज हो गई । स्थानीय निवासी संकठा सिंह चौहान ने कहा, जैसे ही लोगों को मुआवज़े की जानकारी मिली, एक-दो महीने के भीतर मकानों का निर्माण शुरू हो गया । लगभग एक महीने में यहां 2,500 से अधिक मकान बन गए । इनमें से अधिकतर मकान सरकारी कर्मचारियों की मिलीभगत से बनाए गए हैं, जैसे कि राजस्व विभाग के लोग ।

दक्षिण अफ्रीका नौकरी करने गए राजकोट के युवक को बनाया बंधक, परिवार से मांगे 22.50 लाख

राजकोट । राजकोट के वावडी क्षेत्र का एक युवक नौकरी करने के उद्देश्य से दक्षिण अफ्रीका गया था । युवक जिस कंपनी में युवक बतौर एकाउंटेंट नौकरी कर रहा था, वहीं उसे बंधक बना लिया गया है । कंपनी ने युवक पर चोरी का आरोप लगाते हुए उसके परिवार से रु. 22.50 लाख की मांग की है । जानकारी के मुताबिक राजकोट के वावडी क्षेत्र में रहनेवाला जय दिनेशभाई कारिया नामक युवक दक्षिण अफ्रीका नौकरी करने गया था । दक्षिण अफ्रीका के किनकासा क्षेत्र स्थित एक कंपनी में जय कारिया बतौर एकाउंटेंट नौकरी पर लगा था । जय ने सोचा भी नहीं होगा कि वह जहां नौकरी करने जा रहा है, वहीं उसे कैद कर लिया जाएगा । कंपनी ने चोरी का आरोप लगाकर जय कारिया को बंधक बना लिया है और उसके परिवार से रु. 22.50 लाख की मांग की है । दक्षिण अफ्रीका में बंधक बनाए गए जय कारिया ने वीडियो कॉल के जरिए अपने परिवार से बात की और अपनी आपबीती बयां की । जय कारिया ने परिवार से कहा कि वह अब उसे भूल जाए और उसके लिए एक रुपया भी बर्बाद ना करें । बेटे की हालत को देख परिवार काफी चिंता है और उसे मुक्त कराने के लिए भारतीय एम्बेसी से बातचीत की है । लेकिन अब तक जय कारिया की रिहाई नहीं हुई ।

कनाडा के आतंकवादी लांडा के पांच सहयोगियों को पंजाब पुलिस ने पकड़ा

चंडीगढ़ । कनाडा के आतंकवादी लखबीर सिंह उर्फ लांडा के पांच सहयोगियों को गिरफ्तार किया गया है । पंजाब पुलिस प्रमुख ने रविवार को यह जानकारी दी । पुलस महानिदेशक (डीजीपी) गौरव यादव ने बताया कि उनके पास से तीन पिस्तौलें बरामद की गईं । उन्होंने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर पोस्ट में कहा, ''संगठित अपराध के खिलाफ एक बड़ी सफलता के तहत जालंधर कमिश्नरेट पुलिस ने कनाडा स्थित आतंकवादी लखबीर उर्फ लांडा के पांच और सहयोगियों को गिरफ्तार किया है ।'' डीजीपी ने कहा कि लांडा गिरोह के गिरफ्तार सदस्यों की संख्या बढ़कर अब 13 हो गई है । यादव ने बताया, ''यह गिरोह पंजाब के कई जिलों में हत्या, जबरन वसूली जैसे कई जघन्य अपराधों और कई अन्य आपराधिक गतिविधियों में शामिल है ।'' इसके पहले 10 जून को पुलिस ने बताया था कि उसने लांडा के तीन सहयोगियों को गिरफ्तार किया । आतंकवादी के पांच और सहयोगियों को 30 जून को गिरफ्तार किया गया था ।

प्रधानमंत्री का एक पेड़ मां के नाम अभियान

जलवायु परिवर्तन को उचित जवाब है: अमित शाह

इंदौर। (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने मध्य प्रदेश के इंदौर में रविवार को उस अभियान में हिस्सा लिया, जिसका मकसद एक ही दिन में 11 लाख पौधे लगाने का विश्व रिकॉर्ड बनाना है। गृह मंत्री शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शुरू किया गया एक पेड़ मां के नाम अभियान जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों का उपयुक्त जवाब है। विश्व पर्यावरण दिवस पर पांच जून को मोदी ने एक पेड़ मां के नाम अभियान की शुरुआत की थी। इसके तहत देशभर में लगभग 140 करोड़ पौधे लगाए जाएंगे, जिनमें मध्य प्रदेश में 5.5 करोड़ पौधे लगाए जाएंगे।

शाह ने कहा, ÷विकास हो रहा है और हम सुविधाएं बढ़ा रहे हैं। मोदी जी ने हमें पीछे देखने और आने वाली पीढ़ी के लिए भी काम करने को कहा है। पर्यावरण की चिंता सिर्फ देश के लिए ही नहीं, बल्कि हर जगह अहम हो गई है। कार्बन डाइऑक्साइड और मोनोऑक्साइड ने ओजोन के स्तर को कम कर दिया है और इसकी परत में छेद कर दिया है।÷ उन्होंने कहा, इससे तापमान में वृद्धि हुई है। जलवायु परिवर्तन को महसूस किया जा रहा है। मोदी जी द्वारा शुरू किया गया अभियान इसका उपयुक्त जवाब है। गृह मंत्री ने कहा कि देश के सबसे स्वच्छ शहर इंदौर में 51 लाख पौधे लगाए जाएंगे।

शाह ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर सुबह में कहा, ÷आज एक विशेष दिन है, जब इंदौरवासी 11 लाख पौधे लगाकर विश्व रिकॉर्ड बनाने जा रहे हैं।÷ उन्होंने कहा कि मोदी जी द्वारा शुरू किए गये 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के अंतर्गत वह भी आज इंदौर (मध्य प्रदेश) के रेवती रेंज के बीएसएफ परिसर में पौधे लगाएंगे।

शाह ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण मोदी सरकार की सबसे बड़ी प्राथमिकताओं में से एक रहा है और वृक्षारोपण को सरकार ने जन-जन की चेतना का विषय बनाया है। एक अधिकारी ने बताया कि शनिवार शाम से ही सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) अकादमी के रेवती रेंज में गड्ढे खोदे गए और आज सुबह प्रदेश सरकार के मंत्री कैलाश विजयवर्गीय द्वारा भूमि पूजन किए जाने के बाद पौधे लगाने का काम शुरू हो गया। इंदौर के महापौर पुष्यमित्र भार्गव ने बताया कि दोपहर तक 11 लाख में से सात लाख पौधे लगाए जा चुके हैं। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने छह जुलाई को राज्य में एक पेड़ मां के नाम अभियान की शुरुआत की थी।

भाजपा के लिए बहुत अच्छा संदेश नहीं दे रहे विधानसभा के उपचुनाव

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव में झटका खा चुकी भाजपा संभलती इससे पहले ही 7 राज्यों की 13 विधानसभा सीटों पर हुए उपचुनाव के नतीजों ने एक और बड़ा झटका दिया है। विपक्षी एकता की नींव ने बीजेपी के सभी समीकरणों को बिगाड़ कर रख दिया। इसी वजह से चुनाव में एक तरफ अगर बीजेपी सिर्फ दो सीटों पर जीत दर्ज कर पाई तो वहीं दूसरी तरफ दो राज्यों की 5 सीटों में से चार पर कांग्रे,स बंगाल की चारों सीटों पर टीएमसी और पंजाब की एक सीट पर आम आदमी पार्टी ने बड़ी जीत दर्ज की।

बड़ी बात यह है कि जो पांच दलबदलू नेता इस बार उपचुनाव में हारे हैं, उसमें से चार तो बीजेपी की तरफ से थे। इस कड़ी में सबसे पहले नाम आता है होशियार सिंह का जिन्होंने 2022 के विधानसभा चुनाव में देहरा सीट पर बतौर निर्दलीय जीत दर्ज की थी। लेकिन 2024 के मार्च में सबसे बड़ा सियासी खेल हुआ और होशियार सिंह ने बीजेपी का दामन थाम लिया। इस बार बीजेपी को बड़ी उम्मीद थी कि उपचुनाव में होशियार सिंह जीत दर्ज कर लेंगे, लेकिन उन्हें बड़ी हार का सामना करना पड़ा। माना जा रहा है बीजेपी में बड़े पद की वजह से उन्होंने पार्टी ज्वाइन की थी, लेकिन अब तो उनकी विधायकी भी हाथ से छिन चुकी है। बीजेपी की बात करें तो उसे सिर्फ दो ही सीटों पर जीत मिली है।

एक तरफ हिमाचल प्रदेश की हमीरपुर सीट से जीत का स्वाद मिला है तो वही कमलनाथ के गढ़ अमरवाड़ा में भी पार्टी ने अच्छा प्रदर्शन किया। अगर मोटा मोटा समझा जाए तो सात राज्यों की 13 सीटों में इंडिया गठबंधन एनडीए पर पूरी तरह भारी पड़ा है और उसने 10 सीटें हासिल की हैं। बिहार की रुपौली इकलौती ऐसी सीट रही जहां पर दोनों इंडिया और बीजेपी को झटका लगा और निर्दलीय उम्मीदवार ने वहां से जीत हासिल की।

चार वर्षों में एक भी परीक्षा नहीं करा पाई एनआरए, मल्लिकार्जुन खरगे ने भाजपा-आरएसएस पर लगाया युवाओं के भविष्य को तबाह करने का आरोप

नयी दिल्ली। (एजेंसी)। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने रविवार को आरोप लगाया कि भाजपा-आरएसएस ने ''शिक्षा प्रणाली को नष्ट करने'' का बीड़ा उठाया है। उन्होंने पूछा कि राष्ट्रीय भर्ती एजेंसी (एनआरए) ने पिछले चार वर्षों में एक भी परीक्षा क्यों आयोजित नहीं की है। खरगे की प्रतिक्रिया प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की शनिवार को मुंबई में की गई उस टिप्पणी पर आई है, जिसमें उन्होंने जोर दिया था कि पिछले तीन से चार वर्षों में आठ करोड़ नई नौकरियों के सृजन ने बेरोजगारी के बारे में फर्जी बातें फैलाने वालों को ''चुप'' कर दिया है।

खरगे ने 'एक्स' पर कहा, ''नरेन्द्र मोदी जी, कल आप मुंबई में नौकरियां देने पर झूठ का मायाजाल बुन रहे थे। मैं आपको पुनः याद दिलाना चाहता हूं कि आपने एनआरए की घोषणा करते हुए क्या कहा था।'' उन्होंने कहा, ''अगस्त 2020 में आपने कहा था कि एनआरए करोड़ों युवाओं के लिए वरदान साबित होगी और सामान्य पात्रता परीक्षा के माध्यम से, यह कई परीक्षाओं को समाप्त कर देगा तथा कीमती समय के साथ-साथ संसाधनों की भी बचत करेगा। इससे पारदर्शिता को भी बड़ा बढ़ावा मिलेगा।''

कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा, ''हमारे 3 सवाल हैं - एनआरए ने पिछले चार वर्षों से एक भी परीक्षा क्यों नहीं कराई? क्यों एनआरए को रू.1,517.57 करोड़ का फंड मुहैया कराने के बावजूद, 4 वर्षों में अब तक केवल रू.58 करोड़ खर्चा किया गया है? एनआरए सरकारी नौकरियों की भर्ती के लिए बनी संस्था थी। क्या जानबूझकर एनआरए को निष्क्रिय रखा गया, ताकि एससी, एसटी, ओबीसी व ईडब्ल्यूएस श्रेणी के युवाओं से उनके आरक्षण का हक छीना जा सके?''

खरगे ने आरोप लगाया कि एनटीए के जरिये ''धांधली, पेपर लीक व घोटाला कराया गया'' और एनआरए से परीक्षा ही नहीं करवाई गई। एनटीए नीट-यूजी जैसी राष्ट्रीय प्रतियोगी परीक्षाओं में अनियमितताओं के आरोपों को लेकर विवाद में है। खरगे ने आरोप लगाया कि शिक्षा प्रणाली को तहस-नहस करने का और युवाओं के भविष्य को तंग-तबाह करने का बीड़ा भाजपा-आरएसएस ने उठाया है। उन्होंने कहा, ''हमने एनआरए का मुद्दा पहले भी उठाया था, पर मोदी सरकार मौनव्रत धारण कर के बैठी हुई है।''

कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने 'एक्स' पर पोस्ट में एक मीडिया रिपोर्ट का हवाला दिया, जिसमें दावा किया गया था कि एनआरए पिछले चार वर्षों में 58 करोड़ रुपये खर्च करने के बावजूद एक भी परीक्षा आयोजित नहीं कर पाई है। रमेश ने कहा, ''केंद्र सरकार ने 2020 में युवाओं के लिए 'एक देश, एक परीक्षा' की घोषणा की और इसकी जिम्मेदारी बड़े जोर-शोर से एनआरए को सौंप दी।'' रमेश ने कहा, ''लेकिन, यह एजेंसी पिछले चार वर्षों में 58 करोड़ रुपये खर्च करने के बावजूद एक भी परीक्षा आयोजित नहीं कर पाई है।''

किसी भी नेता पर कटाक्ष न करें, राजनीति में हार-जीत लगी रहती है: अमेठी सांसद

अमेठी (एजेंसी)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी के बाद अब अमेठी के सांसद किशोरी लाल शर्मा ने भी सोशल मीडिया पर पूर्व केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी पर टिप्पणी करने वालों से कहा कि राजनीति में हार-जीत लगी रहती है। सांसद किशोरी लाल ने बातचीत के दौरान कहा कि राहुल गांधी हमेशा ही सार्वजनिक जीवन में मर्यादा का पालन करते हैं। अमेठी सांसद ने कहा कि हमें ऐसी भाषा से बचना चाहिए। राहुल गांधी ने सही बात की है और मैं भी अपने आपको उसी में शामिल करता हूं। कुछ लोग मेरे नाम से भी कर रहे थे, वो भी ठीक नहीं है। उन्होंने कहा कि राजनीति में कोई हारता है, तो कोई जीतता है, लेकिन हमारे ये संस्कार नहीं हैं कि किसी के प्रति इस तरह की भाषा का प्रयोग करें और करना भी नहीं चाहिए। किसी भी राजनेता को इस तरह की भाषा का प्रयोग नहीं करना चाहिए। कांग्रेस सांसद शर्मा ने इस बार लोकसभा चुनाव में पूर्व केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी को हराया था। इसके बाद से पूर्व केंद्रीय स्मृति ईरानी पर हमले बढ़ गए हैं। उन्हें खूब ट्रोल किया जा रहा है। हाल ही में उन्होंने दिल्ली स्थित अपने सरकारी आवास को खाली किया, जिसके बाद एक बार फिर सोशल मीडिया पर उन पर हमले शुरू हो गए। गौरतलब है कि राहुल गांधी ने सोशल मीडिया पर कहा कि स्मृति ईरानी और अन्य नेताओं के खिलाफ अभद्र टिप्पणियां न करें। जीवन में हार-जीत लगी रहती है। उन्होंने ये टिप्पणी ऐसे समय में की थी, जब अमेठी में हार के बाद स्मृति ईरानी अपना सरकारी बंगला खाली कर रही थीं। इस दौरान लोग सोशल मीडिया पर उन पर कटाक्ष कर रहे थे। स्मृति ईरानी अपने आक्रामक व्यवहार के लिए जानी जाती हैं। वह अपने भाषणों में कांग्रेस और गांधी परिवार को घेरती रही हैं।

यदि दुख बांटने के लिए पैरोल मिलती है, तो खुशी के मौके पर क्यों नहीं : बॉम्बे हाई कोर्ट

- दोषियों को थोड़े समय सशर्त रिहाई दी जाती है, ताकि वे पारिवारिक मामलों की व्यवस्था कर सकें

मुंबई (एजेंसी)। बंबई उच्च न्यायालय ने एक व्यक्ति को पढ़ाई के लिए ऑस्ट्रेलिया जा रहे उसके बेटे को विदा करने के लिए पैरोल प्रदान की और कहा कि यदि दुख बांटने के लिये पैरोल दी जा सकती है तो, खुशी के अवसर पर यह मिलनी चाहिए। अदालत ने कहा कि दोषियों को थोड़े समय के लिए सशर्त रिहाई दी जाती है, ताकि वे बाहरी दुनिया से संपर्क में रह सकें और अपने पारिवारिक मामलों की व्यवस्था कर सकें, क्योंकि जेल में रहते हुए भी अपराधी किसी का बेटा, पति, पिता या भाई होता है। न्यायमूर्ति भारती डांगरे और न्यायमूर्ति मंजूषा देशपांडे की खंडपीठ ने नौ जुलाई के अपने आदेश में कहा कि पैरोल और फरलो के प्रावधानों को समय समय पर दोषियों के प्रति मानवतावादी दृष्टिकोण के रूप में देखा गया है। अदालत विवेक श्रीवास्तव नामक व्यक्ति की याचिका पर सुनवाई कर रही थी, जिसमें उसने आस्ट्रेलिया के विश्वविद्यालय में अपने बेटे की शिक्षा के लिए ट्यूशन फीस और अन्य खर्चों का प्रबंध करने तथा उसे विदा करने के लिए पैरोल मांगी थी। अभियोजन पक्ष ने इस दलील का विरोध करते हुए दावा किया कि पैरोल आम तौर पर आपातकालीन स्थितियों में दी जाती है और शिक्षा के लिए पैसे का इंतजाम करना व बेटे को विदा करना ऐसे आधार नहीं हैं जिन पर पैरोल दी जानी चाहिए। उच्च न्यायालय ने कहा कि वह अभियोजन पक्ष के इस तर्क को समझने में विफल रहा। अदालत ने कहा, दुख एक भावना है, खुशी भी एक भावना है और अगर दुख साझा करने के लिए पैरोल दी जा सकती है, तो खुशी के मौके या पल को साझा करने के लिए क्यों नहीं। अदालत ने श्रीवास्तव को दस दिन की पैरोल मंजूर कर ली। श्रीवास्तव को 2012 के एक हत्या के मामले में दोषी ठहराया गया था और वह आजीवन कारावास की सजा काट रहा है। उसे 2018 में दोषी ठहराया गया था और 2019 में उसने अपनी सजा के खिलाफ उच्च न्यायालय में अपील दायर की थी।

शहादत दिवस पर कश्मीर के नेताओं को किया नजरबंद, घर में डाले ताले

-केंद्र सकरार हमारी यादों से उन्हें मिटाने की कोशिश कर रही है-महबूबा

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के नेता उमर अब्दुल्ला और महबूबा मुफ्ती ने दावा किया कि उन्हें कश्मीर शहादत दिवस पर मजार-ए-शुहादा पर जाने से रोकने के लिए घर में नजरबंद कर दिया गया है। पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी की अध्यक्ष महबूबा मुफ्ती ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर अपने घर के गेट पर लगे ताले की तस्वीर शेयर की।

उन्होंने कहा कि उन्हें मजार-ए-शुहादा जाने से रोकने के लिए मेरे घर के दरवाजे पर ताला लगा दिया गया है। महबूबा ने अपने ट्वीट में लिखा- आज इस दिन शहीद हुए प्रदर्शनकारियों की याद में इसे मनाना भी अपराध घोषित कर दिया गया है। हर साल 13 जुलाई को जम्मू-कश्मीर की मुख्यधारा की राजनीतिक पार्टियों के नेता उन प्रदर्शनकारियों को श्रद्धांजलि देने के लिए श्रीनगर में मजार-ए-शुहादा जाते हैं, जिन्हें 1931 में तत्कालीन राजा की सेना ने गोली मार दी थी। केंद्र पर निशाना साधते हुए पूर्व सीएम महबूबा ने कहा कि यह हमारी यादों से उन्हें मिटाने की कोशिश कर रहे हैं।

महबूबा ने कहा कि 5 अगस्त 2019 को जम्मू-कश्मीर को खंडित कर शक्तिहीन कर दिया गया और वह सब कुछ छीन लिया जो हमारे लिए पवित्र था। इस तरह के हमले केवल हमारे अधिकारों और सम्मान के लिए लड़ाई जारी रखने के हमारे दृढ़ संकल्प को मजबूत करेंगे।

नेशनल कॉन्फ्रेंस के उपाध्यक्ष उमर अब्दुल्ला ने भी अपने एक्स अकाउंट पर जम्मू-कश्मीर में न्यायसंगत, निष्पक्ष और लोकतांत्रिक शासन स्थापित करने के लिए अपने जीवन का बलिदान देने वालों को श्रद्धांजलि देने से रोकने के लिए पुलिस की कार्रवाई पर नाराजगी जताई है। उमर ने कहा कि एक और 13 जुलाई शहादत दिवस पर दरवाजे बंद करने का एक और दौर...देश में हर जगह इसे मनाया गया होगा, लेकिन जम्मू-कश्मीर में प्रशासन इन बलिदानों को नजरअंदाज करना चाहता है। यह आखिरी साल है जब वे ऐसा कर पाए हैं। उन्होंने कहा कि इंशा अल्लाह अगले साल हम 13 जुलाई को इसे गंभीरता और सम्मान के साथ मनाएंगे।

बता दें 13 जुलाई 1931 को श्रीनगर में सेंट्रल जेल के बाहर डोगरा सेना की ओर से की गई गोलीबारी में 22 प्रदर्शनकारी मारे गए थे। घाटी की मुख्यधारा की दोनों राजनीतिक पार्टियां और अलगाववादी समूह इस बात का दावा करते हैं कि डोगरा शासन से कश्मीर की आजादी की पहली लड़ाई इसी दिन शुरू हुई थी।

अब ऊंचे इलाकों में तैनात रहेगी भारतीय सेना, आतंकियों पर रखेगी पैनी नजर

गोरखपुर (एजेंसी)। जम्मू(ईएमएस)। कई बार देखने में आया है कि आतंकी किसी ऊंची पहाड़ी पर बैठ जाते हैं और वहीं से फायरिंग करते हैं। इससे भारतीय सेना को उन्हें ध्वस्त करने में काफी कठिनाई होती है। इससे निजात पाने के लिए अब सेना ऊंचे पहाड़ों पर तैनात रहेगी और वहीं से गतिविधियों पर पैनी नजर रखेगी। केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह ने कहा कि जम्मू-कश्मीर में आतंकवादी गतिविधियों में हालिया वृद्धि के लिए केवल पाकिस्तान को जिम्मेदार ठहराना पर्याप्त नहीं है। उन्होंने अवैध गतिविधियों को भी इसके लिए लिए जिम्मेदार ठहराया। जितेंद्र सिंह ने कहा कि सरकार एक नई रणनीति लागू कर रही है, जिसमें कठुआ में एक हफ्ते के भीतर शांति बहाल करने के लिए ऊंचे इलाकों में सेना की तैनाती शामिल है।

प्रधानमंत्री कार्यालय में राज्य मंत्री जितेंद्र सिंह ने कठुआ में पत्रकारों से कहा, पाकिस्तान से घुसपैठियों द्वारा हाल ही में (जम्मू क्षेत्र में) की गई आतंकवादी घटनाएं निंदनीय हैं। लेकिन बार-बार यह कहना कि पाकिस्तान ने ऐसा किया है, पर्याप्त नहीं है। हमें खुद से और अपनी अंतरात्मा से पूछना होगा कि हमने उन सामाजिक बुराइयों को खत्म करने के लिए क्या किया है, जिनसे आतंकवाद को फायदा हो रहा है। जितेंद्र सिंह ने कहा, जब कश्मीर में (आतंकवादियों पर) दबाव बढ़ा, तो उन्होंने अपना ध्यान जम्मू पर केंद्रित कर दिया। हमारा प्रयास सेना को लाने का था जबकि अर्धसैनिक बल पहले से ही वहां मौजूद हैं। सेना की तैनाती के बाद (आतंकवाद से लड़ने के लिए) एक नई रणनीति बनाई जा रही है। सेना ने पहाड़ियों पर मोर्चा संभाल लिया है ताकि आतंकवादी आगे हमले नहीं कर सकें।

जितेंद्र सिंह ने कहा, सरकार पहले से ही (आतंकवाद के खिलाफ) सख्त कार्रवाई कर रही है लेकिन समाज की भी अपनी जिम्मेदारी है। यह दोहराना कि वे पाकिस्तान से आए हैं, पर्याप्त नहीं है। पाकिस्तान 1947 से ही शरारतें करता आ रहा है और आगे भी करता रहेगा यह नहीं सुनेगा। लेकिन सवाल यह है कि हम क्या कर रहे हैं और हमें यह खुद से पूछना होगा?÷ जितेंद्र सिंह ने कहा कि मादक पदार्थों की तस्करी, अवैध खनन, गोवंश तस्करी के साथ-साथ सरकार और गरीबों की जमीन पर कब्जा करने का उभरता नया फैशन एक दुष्चक्र है जो कुछ हद तक आतंकवाद को बढ़ावा देता है और कठुआ को बदनाम करता है। मंत्री ने कहा कि वह गृह मंत्रालय के साथ लगातार संपर्क में हैं और हाल के हमलों के बाद जम्मू में मौजूदा सुरक्षा स्थिति पर चर्चा करने के लिए थल सेनाध्यक्ष जनरल उपेन्द्र द्विवेदी से भी मुलाकात की। बता दें कि आतंकवादियों ने 9 जून से 30 दिनों के अंदर शांतिपूर्ण जम्मू क्षेत्र के रियासी, डोडा और कठुआ जिलों में पांच हमले किए, जिसमें सात तीर्थयात्रियों और छह सुरक्षाकर्मियों सहित 15 लोगों की मौत हो गई और कई अन्य घायल हो गए। सुरक्षा बलों ने पांच आतंकियों को भी मार गिराया है।

स्वामी, मुद्रक व् प्रकाशक : सुरेश मौर्या द्वारा अष्ट विनायक ओफ़्सेट एफपी,149 प्लोट 26 खोडीयारनगर,सिद्धिविनायक मंदीर के पास , (भाटेना) हो.सो अंजना सुरत
गुजरात से मुद्रित एवं 191 महादेव नगर उधना सुरत गुजरात से प्रकाशित संपादक :सुरेश मौया (M) 9879141480 RNI No.:GUJHIN/2018/75100 (Subject to Surat jurisdiction)